Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाक्षिक

सारिका

मई : अंक-2

मंटो विशेषांक

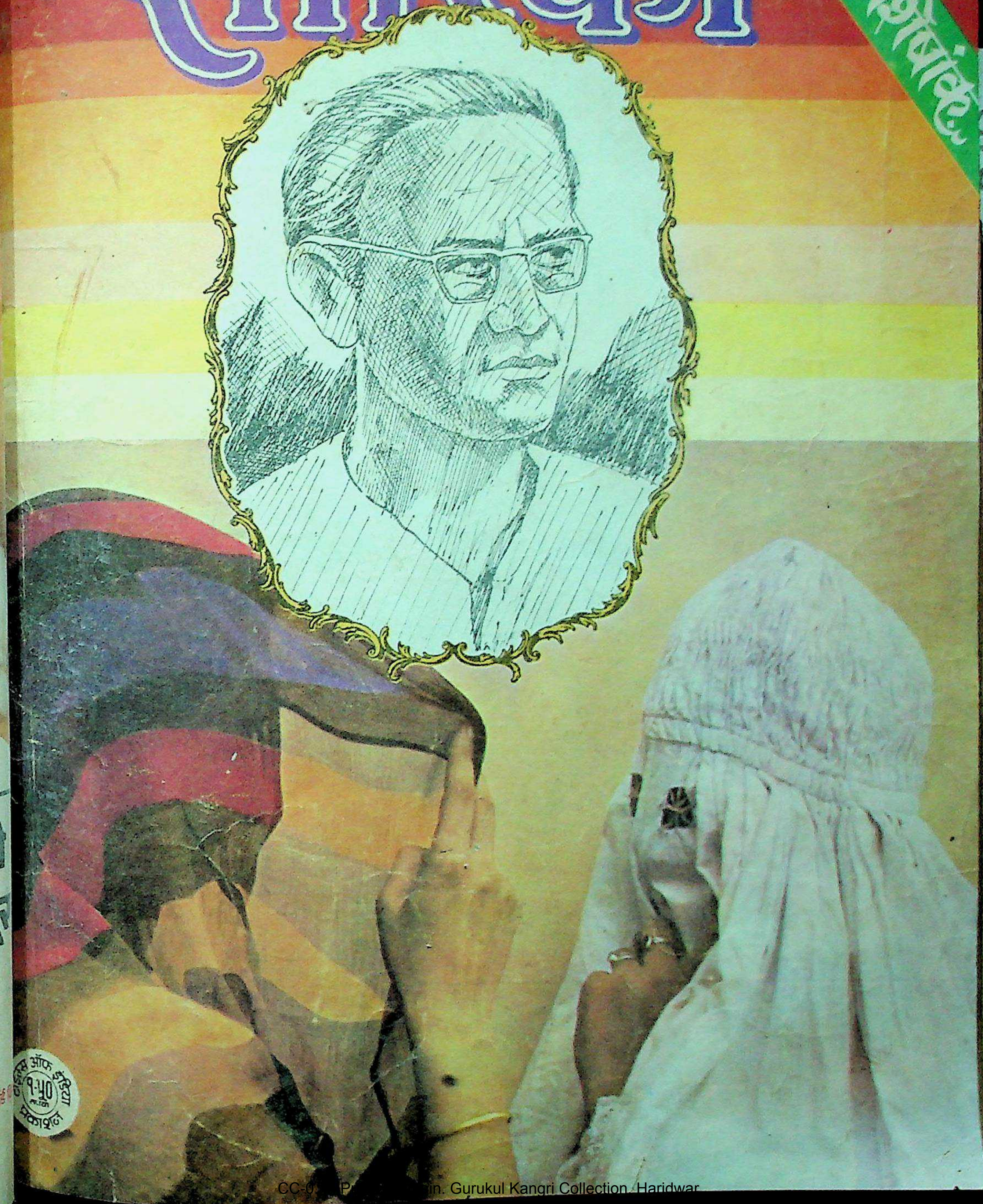

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन 1.50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

chic-modithread शिक-मोदीथ्रेड

एम्ब्रॉयडरी, झालर-काम, बुनाई, क्रोशिया या दस्तकारी जाननेवाला कोई भी विजयी हो सकता है!

"नीडलवर्क प्रतियोगिता"

१½ लाख रुपयों से भी अधिक कीमत के पुरस्कार जीतिए!

भाग लेना आसान! जीतना आसान!

TCI Siva Holiday की मज़ेदार सैर!

लाजवाब शानदार राष्ट्रीय पुरस्कार

सर्वश्रेष्ठ अखिल भारतीय प्रविष्टि को शिक-मोदीथ्रेड नीडलवर्क क्वीन ट्रॉफी दी जाएगी। इसके अलावा TCI Siva द्वारा आयोजित सभी खर्चों सहित पूरे अमेरिका की २१ दिवसीय सैर का मज़ा भी मुफ़्त में—जिसका खर्च १६,५०० रुपये है.

प्रवेश मुफ़्त! कैसे भाग लें:

आपको सिर्फ़ पक्के रंग के रंगीन मोदी धागों से एम्ब्रॉयडरी, बुनाई, क्रोशिया, झालर-काम या दस्तकारी करनी है. कम से कम २० से.मी. × २० से.मी. आकार का कोई भी आकर्षक नमूना तैयार कीजिए. आप चाहे जिस वर्ग का नमूना भेजें, हर प्रविष्टि को सफाई, रंगों के मेल और डिज़ाइन की सुन्दरता के आधार पर परखा जाएगा. पूर्ण विवरण, नियम और प्रतियोगिता के प्रवेश कूपन, समस्त मोदी धागों के विक्रेताओं, मोदी धागों की क्राफ्ट शॉप, मोदी धागों के डिपो और वितरकों के यहाँ तो मिलेंगे ही. साथ ही शिक पत्रिका के मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई और अगस्त १९७९ के अंकों में भी मिल जाएंगे. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ इस्तेमाल किए गये धागों का लेबल और छपा हुआ प्रतियोगिता प्रवेश कूपन होना आवश्यक है.

जीतने के कई अवसर!

आपको जीतने के अधिक अवसर देने के लिए इस प्रतियोगिता को देश के १० क्षेत्रों में बाँट दिया गया है. हर क्षेत्र के लिए ८० पुरस्कार हैं. यानी कुल मिलाकर ८०० पुरस्कार और एक शानदार राष्ट्रीय पुरस्कार. जिसका चुनाव १० क्षेत्रों की प्रथम पुरस्कार प्राप्त प्रविष्टियों में से किया जाएगा.

८०१ पुरस्कारों में से कोई भी जीतिए!
(आपके क्षेत्र में ८० पुरस्कार)

दस प्रथम पुरस्कार ZENITH 165 लीटर रेफ्रिजरेटर. हर एक की कीमत ४,२७५ रुपये.

दस द्वितीय पुरस्कार Oberoi Hotels की ओर से पति पत्नी के लिए दस ५ दिवसीय छुट्टियों का आयोजन— उनके काठमाडू, गोवा, कश्मीर, दार्जिलिंग, शिमला और गोपालपुर-आन सी स्थित आरामदायक होटलों में.

दस तृतीय पुरस्कार modifloor विश्व कोटि के मशीन से बने कालीन. हर एक की कीमत २,५०० रुपये.

दस चतुर्थ पुरस्कार MERRITT सिलाई की मशीन. हर एक की कीमत १,६६५ रुपये.

दस पाँचवे पुरस्कार Inpro किचन वेयर सेट. हर एक की कीमत १,००० रुपये.

साथ ही

modicotton के १५० सराहना पुरस्कार. सलवार-कमीज़ खुद ही बनाइये. हर एक की कीमत ६५ रुपये.

५०० प्रोत्साहन पुरस्कार– शिक पब्लिकेशन्स की ओर से प्रत्येक ४० रुपये कीमत के पुरस्कार.

१०० बोनस पुरस्कार– ब्राउन एण्ड पोलसन और के उत्पादक कॉर्न प्रॉडक्ट्स की ओर से प्रत्येक २५ रुपये कीमत के उपहार.

जल्दी कीजिए! प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त '७९.

शिक के ग्राहक बनें

वार्षिक चन्दे में २० रुपया बचाइये. न्यूज़स्टॉलों में १२ अंकों की कीमत— ६० रुपये, वार्षिक चन्दा– ४० रुपये. दो वर्ष के लिए— ७५ रुपये।

कृपया अपने पोस्टल ऑर्डर, ड्राफ्ट, मनी ऑर्डर शिक पब्लिकेशन के हित में बम्बई में देय होने के लिए बनायें।

To subscribe, mail this to
CHIC PUBLICATIONS,
89, Bhulabhai Desai Road, Bombay 400036
OR VIJAY STORES
231, Dr. D.N. Rd., Commissariat Bldg.,
Fort, Bombay 400001.

Name ______
Address: ______
Enclosed Postal Order for Rs. ______
for ______ years subscription from ______

chic- सृजनात्मक, मनोरंजक फैशन पत्रिका

अपनी प्रविष्टि अपने क्षेत्र के मोदीथ्रेड डिपो में भेजें. पते की जानकारी के लिए नियम व शर्तें पढ़ें.
प्रथम शिक-मोदीथ्रेड बच्चों की कसीदाकारी प्रतियोगिता के लिए बच्चों की पत्रिकाएँ देखें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब-आप अपने बिलों का भुगतान अपने "फिक्स्ड डिपॉज़िट" पर हर माह मिलने वाले ब्याज से कर सकते हैं.

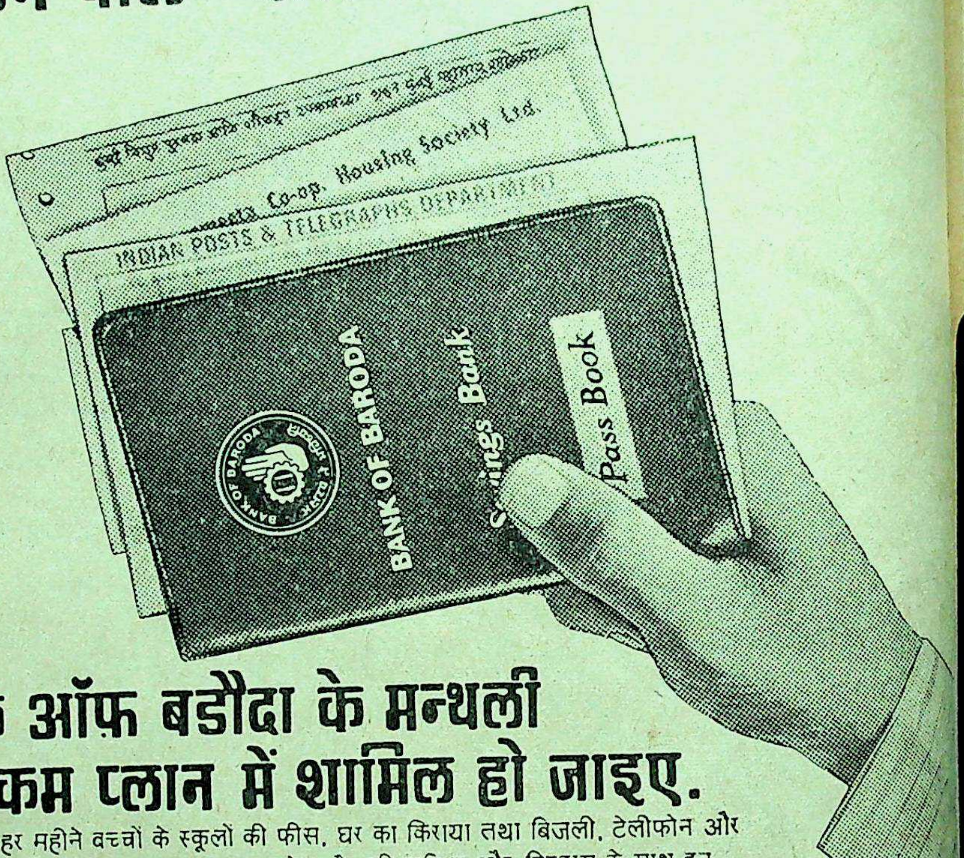

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के मन्थली इनकम प्लान में शामिल हो जाइए.

आपको हर महीने बच्चों के स्कूलों की फीस, घर का किराया तथा बिजली, टेलीफोन और अन्य मासिक बिलों का भुगतान करना होता है. पूरी सुविधा और विश्वास के साथ इन खर्चों को पूरा कर सकने में बैंक ऑफ़ बड़ौदा आपकी मदद करता है. हमारे " मन्थली इनकम प्लान " के अंतर्गत 500 रु. या उससे अधिक रकम 1 वर्ष से 10 वर्ष तक की अवधि के लिए जमा कीजिए. और उसपर प्राप्त ब्याज आपको हर महीने नियमित रुप से मिलता रहेगा जिससे आप अपने आवश्यक खर्चों को पूरा कर सकें.

या फिर आप हमारे " रेग्यूलर इनकम प्लान " मे सम्मिलित हो जाइये और हर तीन महीने बाद ब्याज पाइये.

अधिक जानकारी के लिए बैंक ऑफ़ बड़ौदा की नजदीकी शाखा में पधारिये.

बैंक ऑफ़ बड़ौदा

(भारत सरकार उपक्रम)

भारत और विदेशों— बहामा, बेल्जियम, फिजी द्वीप समूह, गयाना, केन्या, मारीशस, सीशल्स, ओमन सल्तनत, सयुंत्त अरब अमिरात, यू. के. और यू.एस.ए. में—1350 से भी अधिक शाखाओं का विस्तृत जाल.

Imageads-BOB-53

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

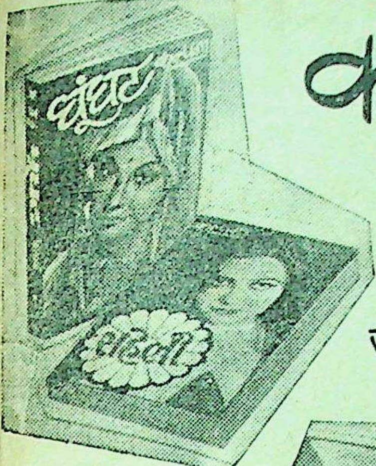

उभरती हुई उपन्यासकार

कल्पना

जिनके दो ही उपन्यासों —'सहेली' और 'घूंघट' ने उन्हें लोकप्रिय उपन्यासकारों की पंक्ति में खड़ा कर दिया है।

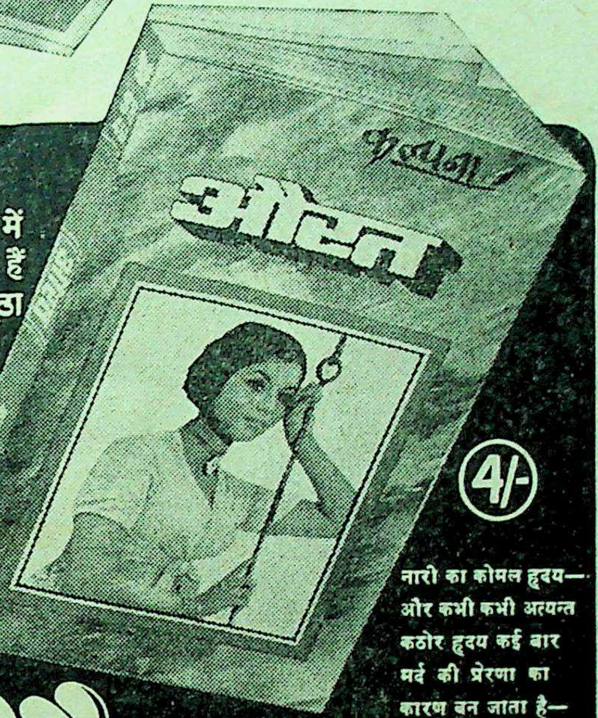

अब...
उसी परम्परा में प्रस्तुत करती हैं एक और अनूठा सामाजिक उपन्यास

4/-

नारी का कोमल हृदय—और कभी कभी अत्यन्त कठोर हृदय कई बार मर्द की प्रेरणा का कारण बन जाता है—और कभी कभी एक बड़ी मुसीबत का कारण भी!

औरत

स्टार पाकेट सीरीज में 'कल्पना' के नए नए उपन्यास आप के मनोरंजन के लिए।

और अगामी मास प्रस्तुत कर रहे हैं
सर्वाधिक लोकप्रिय
गुलशन नन्दा
का नया उपन्यास ???

पाठकों के लिए 'स्टार' की एक बिलकुल नई लाभप्रद योजना

स्टार बुक बैंक

जिसके अन्तर्गत ३० रुपये भेजकर ६ मास तक दो नये उपन्यास प्रतिमाह (डाक व्यय फ्री) घर बैठे प्राप्त करें।

इस योजना के अन्तर्गत केवल 30/- देकर प्रत्येक मास 8/- मूल्य के आपके प्रिय लेखकों के दो नये उपन्यास (डाक व्यय फ्री) छः मास तक घर बैठे प्राप्त करेंगे। इस प्रकार 30 रु० के बदले 48 रु० के उपन्यास एवं 12 रु० डाक व्यय अर्जित कर पायेंगे।

स्टार बुक बैंक की सदस्यता के लिए आज ही 30/- का मनीआर्डर भेजें या पहले मास के दो उपन्यास 30/- की वी पी पी से मंगाने के लिए लिखें। तदोपरान्त 6 मास तक दो नये उपन्यास हर महीने घर बैठे प्राप्त करें।

स्टार के
अप्रैल 79 के अन्य प्रकाशन

आज के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार 'राजवंश' का रोमांटिक उपन्यास **नीरजा** 4/-

'मुसाफ़िर' का नया और रोचक उपन्यास **यादों के फूल** 4/-

'गुरूदत्त' का नया उपन्यास **वसन्त राग** 4/-

'संगीता' का नया उपन्यास **बेवफ़ा** 4/-

'अमृता प्रीतम' का बहुचर्चित उपन्यास **जेब कतरे** 4/-

'गुप्तदूत' का नया जासूसी उपन्यास **मौत का बुलावा** 4/-

गत वर्ष की चुनी कहानियों का संकलन **1978 की श्रेष्ठ कहानियां** 4/- (महीप सिंह)

जैन धर्म पर एक रोचक संस्मरण **जय गोमटेश्वर** 3/- (अक्षय कुमार जैन)

राजश्री प्रोडक्शंज़ की नई फिल्म **नदिया** 3/- का सचित्र फिल्मी स्क्रीन प्ले

पूर्व प्रकाशित स्टार बुक्स की सूची निशुल्क मगावें

स्टार पब्लिकेशंज (प्रा०) लि०
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मौसम में अपनी
प्रेयसी का मन खुशी से
भर दीजिए..

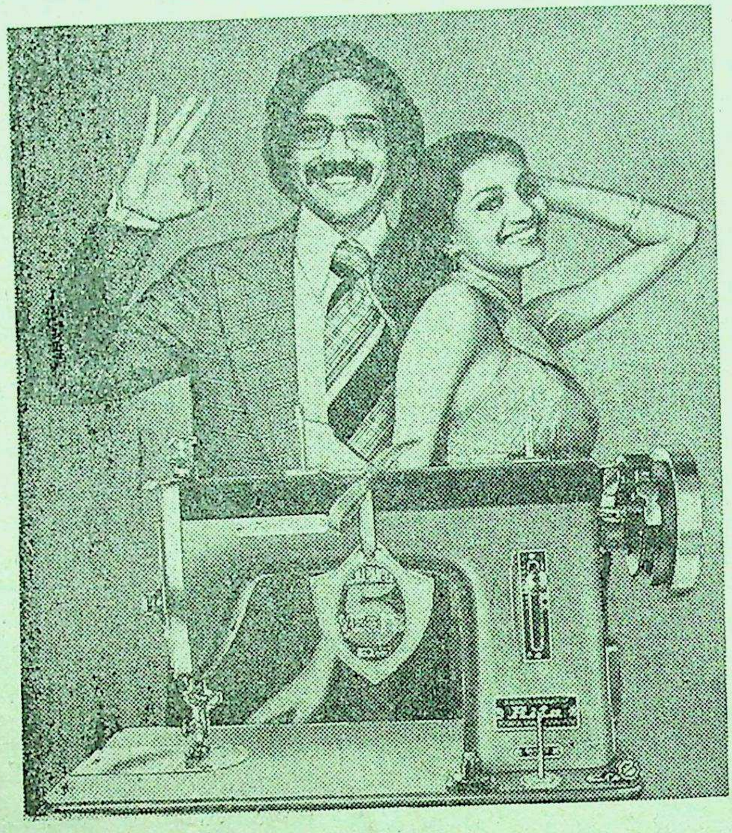

adEnvoys

उनके लिए एक रीटा सिलाई मशीन खरीदिए – क्योंकि इसे बड़ी लगन के साथ उन लोगों ने बनाया है जो सिलाई की तकनोक को जानते-समझते हैं और जिन्हें पता है कि महिलाओं की पसंद क्या है।
रीटा की लगातार सेवा और शानदार बनावट ने देश विदेश की महिलाओं का मन मोह लिया है।
चाहे आपकी पत्नी हो या पुत्री – या कोई भी जिसे आप दिल से चाहते हों – रीटा का उपहार सचमुच एक उपयुक्त उपहार साबित होगा।

रीटा

मैकेनिकल वर्क्स
लुधियाना

प्रेम की प्रतीक है –
रीटा सिलाई मशीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

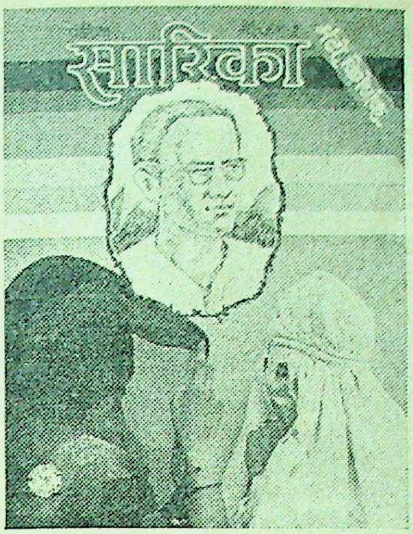

आवरण :
पारदर्शी : विमल सक्सेना, रेखाचित्र : पाली

मंटो विशेषांक

सारिका

कहानियों और कथा-जगत की जीवंत पाक्षिकी

वर्ष : १६; अंक २४३;
१६ से ३१ मई, १६७६

संपादक :
कन्हैयालाल नंदन
मुख्य उप-संपादक :
अवधनारायण मुद्गल
उप-संपादक :
रमेश बत्तरा, सुरेश उनियाल
आवरण सज्जा : रवि शर्मा

मंटो की कहानियां

22. खोल दो
24. शरीफन
30. नया कानून
36. खुशिया
43. दो कौमें
47. काली सलवार
61. फूलों की साजिश

मंटो का विचार-जगत

13. मैं कहानीकार नहीं, जेबकतरा हूं
20. न सोचने की एक दिलचस्प मिसाल
52. मंटो की बातें
58. अदब या तो अदब है या बहुत बड़ी बेअदबी
62. अफ़साना निगार और जिंसी मसाइल

मील का पत्थर

14. मंत्र : सीधी सरल और उत्कृष्ट कहानी : उपेंद्रनाथ अश्क
15. मंत्र (कहानी) : मंटो

हास्य एकांकी

64. खुदकुशी

विशेष

26. मंटो ने मुझसे मुखातिब होकर कहा : तुम साहित्य के विदेशमंत्री हो और हम गृहमंत्री हैं : अहमद नदीम कासमी
34. आपको मेरे खत से जले हुए गोश्त की बू आयेगी : पं. नेहरू के नाम पं. मंटो का खत
40. मंटो : उर्दू अदब का मसीहा या शैतान : कमलकिशोर गोयनका
54. मंटो : कहानी से कोर्ट तक : इब्राहीम अश्क
54. मंटो की फिल्म स्क्रिप्ट : शब्द कुमार
60. आपने क्या फैसला किया? : प्रस्तुति : हरीश नवल
68. एक गैरजिम्मेदाराना हरकत : हामिद जलाल

अन्य आकर्षण

8. पाठकों का पन्ना
10. जरिया-नजरिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों का पन्ना

लिजलिजेपन की परिधि से बाहर

अप्रैल अंक: एक देखा. रेणुजी की दुनिया का स्पष्ट चित्र सारिका के पृष्ठों पर उतारने की बधाई स्वीकारें. रेणुजी ने साहित्यिक लिजलिजेपन की परिधि से बाहर, साहित्य धर्म को जीते हुए समय सापेक्षता का परिचय दिया. ठूंठ हुए साहित्यिकों की बात मैं नहीं कह सकता, लेकिन युवा पीढ़ी रेणुजी के जीवन-मूल्यों को आत्मसात् करेगी, ऐसा विश्वास है.

▣ गणेश गंभीर, बस्ती (उ. प्र.)

कलम के सिपाही

आप स्वर्गीय लेखकों का जो स्मृति अंक प्रकाशित करते हैं वह सर्वदा संग्रहणीय ही होता है. अभी अप्रैल प्रथम का रेणु-स्मृति अंक भी उसी परंपरा का एक प्रयास है. लेखक की रचनाओं के सिवा पाठकों को लेखकों के व्यक्तिगत जीवन को भी जानने और समझने की अभिलाषा होती है. इसकी पूर्ति इसी तरह का स्मृति अंक करता है और उन दिवंगत साहित्यकारों के प्रति एक जो नैतिक कर्तव्य होता है, इसके माध्यम से वह भी पूरा हो जाता है. नहीं तो भला इस देश में किसे इतनी फुरसत है, जो इन कलम के सिपाहियों के प्रति दो क्षण भी जाया करे.

▣ राजदीप गुप्ता, बर्नपुर, बर्दमान, वेस्ट बंगाल.

साध अधूरी रह गयी

सारिका का रेणु स्मृति अंक खरीदा. आज भी मुझे उन दिनों की याद आती है जब रेणुजी पटना में कॉफी हाउस में बैठे रहते थे और मैं उन्हें तब तक देखता रहता था जब तक वह उठकर चले नहीं जाते थे. अनेक बार उनको वहां बैठे देखा लेकिन चाहकर भी कभी बात न कर सका. और उस समय मेरी साध अधूरी रह गयी जब पटना में उनका उपचार चल रहा था और एक दिन समाचार पत्र में यह प्रकाशित हुआ कि उनको रक्त की आवश्यकता है. समाचार पढ़ने के पश्चात निश्चय किया कि कल चलकर उनके डॉक्टर से मिलूंगा. शायद मेरा रक्त उनके काम आ जाये. लेकिन यह मेरा दुर्भाग्य ही था कि कल कभी नहीं आया. उसके पहले ही रेणुजी इस दु[illegible] छोड़ चुके थे. मैं उनकी कोई से[illegible] सका, इसका अफसोस आज तक [illegible]

▣ राजेंद्र "परदेशी", मोजपुर [illegible]

दाल भात में मूसलचंद

रेणु स्मृति अंक में सामग्री [illegible] मिली. रेणु का बहुत बड़ा [illegible] संसार है. लतिका रेणु की [illegible] नहीं है. इसके बाद इसी अंक [illegible] कुमार भ्रमर का ताकि [illegible]

लफड़ा-दर-लफड़ा

सारिका का रेणु स्मृति अंक देखा. उनकी कहानी लफड़ा और मरीना [illegible] हाउस में उनके प्रवास को लेकर जो लेख लिखा गया, वह बकवास [illegible] रेणु मरीना गेस्ट हाउस में कभी नहीं ठहरे.

रेणु की पहली बंबई यात्रा के दौरान ही मैं उनका परिचित बन [illegible] वे तब पार्वती सदन में ठहरे थे. दूसरी और तीसरी यात्रा के दौरान वे [illegible] ग्रीन गेस्ट हाउस में ठहराये गये. एवरग्रीन की जगह आज गुरू होटल [illegible]

मरीना गेस्ट हाउस में मैं करीब दस महीने के लिए टिका था. [illegible] लफड़े मैं उन्हें सुनाया करता था—मैं स्वयं भी लफड़बाज़ रहा हूं. लेकिन [illegible] कहानी में जो कुछ बयान किया गया वह सब कुछ सच नहीं है, ना ही [illegible] की आदतें वैसी हैं जैसा उन्हें पेश किया गया है.

स्मृति अंक में जयप्रकाश बाबू ने भी बहुत कुछ लिखा है. उन्हें इस [illegible] की जानकारी है कि **मैला आंचल** पर फिल्म बन रही है और उपन्यास [illegible] आत्मा के साथ न्याय नहीं किया जा रहा है. जयप्रकाश बाबू का यह [illegible] पहले माधुरी में भी छपवाया जा चुका है. मैं कहता हूं, ऐसा करके जयप्रकाश [illegible] ने फिल्म के निर्माता के साथ न्याय नहीं किया.

सच यह है कि आज के दिन जो निर्माता और खासकर वह निर्माता [illegible] फिल्म वित्त निगम से कुछ लेना-देना न हो, अगर किसी साहित्यिक कृति [illegible] फिल्म बना रहा हो, वह पूजनीय है. साहित्यिक कृतियों से लाभ की [illegible] सरकारी सहायता के बिना पूरी नहीं हो सकती.

मैला आंचल की आत्मा के साथ न्याय नहीं हो रहा, यह अभी [illegible] भी बाहरी आदमी नहीं बता सकता. फिल्म अभी गर्भावस्था में है और [illegible] सही रूप देने में निर्माता और निर्देशक ने कोई कसर नहीं उठा रखी है. [illegible] मैं इस फिल्म का निर्माता होता (मैंने एक अच्छी फिल्म बनायी है और [illegible] अच्छी फिल्म बना रहा हूं) तो सैकड़ों आदमियों का हुजूम लेकर दो-दो [illegible] फारबिसगंज, जिला पूर्णिया हर्गिज नहीं जाता. रेणुजी ने अपने जीवनकाल में [illegible] बार फिल्म की पटकथा सुनी थी. वे पटकथा से संतुष्ट थे. फिल्म के नि[illegible] मुंशी और निर्देशक कोई बड़ी हस्ती नहीं है. निर्देशन के क्षेत्र में नवें[illegible] का यह पहला प्रयास है. कोई अनुमान नहीं लगा सकता कि जयप्रकाश बा[illegible] बयान से ये दोनों किस तरह आहत हुए हैं!

▣ दीनानाथ शास्त्री, सांताक्रूज, बंबई.

(जब मैं मैडम से मरीना में मिलने गया था तब स्वयं मैडम ने तथा मरीना [illegible] ही अन्य सदस्यों ने रेणुजी के यहां ठहरने के बारे में बताया था. टैक्सी [illegible] घटना भी स्वयं मैडम ने ही बतायी थी और उसी घटना का जिक्र [illegible] कहानी में है.

अ. ना. मु[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाल-भात में मूसलचंद जैसा ही लगा.

ज़रिया-नज़रिया में आपने लिखा है कि साहित्यकार को समाज का, प्रशासन का असहयोग मिलता है. यह सही है—कोई अगर किसी से अपेक्षा रखता है तो उसे भी बदले में—लेकिन कालजयी साहित्यकार इस अपेक्षाओं के लिए तो जीता नहीं है—वह संघर्ष करता है अपने साहित्य के लिए—और यही साहित्य उसके पाठकों का होता है—उसके आस-पास के लोगों का होता है. साहित्य जो पाठकों के करीब होता है—उसे पढ़ने में पाठकों ने कभी असहयोग नहीं किया है और न करेगा. इस संदर्भ में लतिका रेणु का वक्तव्य—जो शीर्ष में प्रकाशित है—संगतियुक्त है.

फिर भी स्मृति अंक सराहनीय है.

■ प्रसून लतांत, जमशेदपुर (बिहार)

गायन-दोष

सारिका का अप्रैल अंक–1 देखा. श्री रामधारीसिंह दिवाकर लिखित "चल, उधर गाड़ी की तरफ. मुड़-मुड़कर क्या देखता है?" के अंतर्गत एक भारी गलती हो गयी है. मैं समझता हूं यह रेणुजी की गलती नहीं, लेखक (जिनकी स्मृति शायद धोखा दे गयी हो) की गलती है. रेणुजी के अनुसार रसूलनबाई के ठुमरी गायन में एक खास बात यह थी कि उनका स्वर एक खास आरोह पर पहुंचकर थोड़ा फट जाता था. स्वर की यह विकृति गायन-दोष माना जाता है, उनका आकर्षण था.

यह स्वर फटने की बात रसूलनबाई के गायन में नहीं होता था, बल्कि यह दोष और आकर्षण बेग़म अख़्तर के गायन में था. बेग़म अख़्तर की आवाज टीप पर जाकर क्रेक करती थी. पर यह विकृति बेग़म अख़्तर के गायन की मुख्य आकर्षण मानी जाती थी.

■ गजेंद्र नारायण सिंह, पटना

पात्रों के प्रति जुड़ाव

रेणु स्मृति अंक के कुछ अंश बहुत ही पसंद आये—मसलन **रेणु के पात्रों का यथार्थ** (अमरेंद्र मिश्र) के प्रस्तुतिकरण से जहां लेखक का अपने पात्रों के प्रति जुड़ाव परिलक्षित होता है वहीं पाठकों को प्रामाणिक सामग्री देने की आपकी उत्कट इच्छा भी.

■ नरेंद्र निर्मोही, चंडीगढ़

सिपाहियों की साजिश

रेणु सिर्फ आंचलिक साहित्य के मसीहा ही नहीं थे, बल्कि 'सिपाहियान व्यक्तित्व' के स्वामी भी थे.

एक सज्जन एक दिन बोले, "रेणु का मकान कुर्क तो होगा ही. कर्ज खाओगे, बिल नहीं चुकाओगे तो तुम्हें छोड़ क्यों दिया जायेगा! इसलिए कि तुम लेखक हो! तुम्हें कहा किसने था कि तुम लेखक बनो ?" उनकी इस अनर्गल दलील का चाहे कोई जवाब न हो, पर इससे जो मानसिकता प्रतिबिंबित होती है उससे सचमुच बौद्धिक नपुंसकता पर किसी शक की गुंजाइश नहीं रह जाती. काश! वो समझ पाते कि "रिश्ते सिर्फ खून के ही नहीं होते, विचार और संस्कृति के भी होते हैं. . . . ." **(ज़रिया-नज़रिया, फरवरी : 2)**

बहरहाल "संपूर्ण क्रांति" के आह्वान-कर्ता की मृत्यु समय की सबसे बड़ी क्रूरता थी, परंतु संपूर्ण क्रांति के सिपाहियों की साजिश कहीं ज्यादा तकलीफदेह है.

■ अवधेश, राजेंद्र, रुद्रपुर (नैनीताल)

चार की चाल

रेणु : कुछ अनजानी-अजनबी बातें—अच्छी छानबीन है. जन्म-4.3 1921–4 महत्वपूर्ण अंक है. सारिका का स्मृति अंक 1-4-1979—1+4+1+9+7+9=31=4. इसे भी जो दें. 4 के अंक में स्मृति अंक का प्रकाशन भी यही सिद्ध करता है.

■ गीता पुष्प शा, पटना

रेणु और नेपाली साहित्य

सारिका अप्रैल अंक:1 हाल में मिलते ही पढ़ने बैठ गया और एक ही बैठक में सारी रेणु साहित्यिक सामग्री चाट डाली. मगर फिर मुझे कुछ चैन नहीं लगा. जहां रेणु-प्रसंग आता है वहीं नेपाली जन-जीवन से भी उन्हें जोड़ना चाहिए था. चाहे राजनीति हो चाहे साहित्य, आखिर वह दोनों विषय में रेणु नेपाली जनता के आत्मीय अनुज थे.

रेणुजी का नेपाली साहित्य से अति निकट का संपर्क था. वह श्री वि. पि. की कथा हिंदी में प्रस्तुत करते थे. वि. पि. का बहुचर्चित उपन्यास **नरेंद्रदाई** का भी अनुवाद किया था. वह प्रसिद्ध उपन्यासकार तारणी बाबू के तो लंगोटिया यार थे जो अक्सर फुर्सत के समय में मिलते रहते थे. इन दोनों के बीच नेपाली और हिंदी साहित्य के बारे में चर्चा-परिचर्चा होती रहती थी. सारिका की रेणु स्मृति बटोरने के लिए नेपाल की संपूर्ण संघर्षशील लेखकों की ओर से अपने मन-मंदिर के लेखक रेणु को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पण करता हूं.

■ गिरिराज आचार्य, धरान (नेपाल)

हम मृत्यु हो जाने पर ही क्यों चौंकते हैं?

रेणु स्मृति अंक निकालकर सारिका ने एक साहित्यकार के लिये 'बहुत कुछ' कर दिखाया है. रेणु, उजाले का रथ उस समय थामकर आये थे, जब लोगों पर 'उजाले' का नाम लेने की पाबंदी थी और अंधेरे कोनों में दुबके अंधेरे से घबराये लोग किसी 'रेणु' की प्रतीक्षा कर रहे थे.

उजाला फैल गया, पर वह रथ हांकने वाला आज नहीं है. उसने रथ पर सवारी तबकी थी जबकि रथ आग के गोले-सा तप रहा था और तलवे जल रहे थे. शायद रेणु को उसी रथ ने झुलसा दिया था और आज यदि हम उन्हें भूलने की तनिक भी भूल करते हैं तो यह हमारा दोगलापन है. निसंदेह सारिका का यह अंक उनकी स्मृति अक्षुण बनाये रखने में भरपूर सहायता करेगा.

पर कभी-कभी यह विडंबना कचोटती है कि हमें, चाहे मुंशी प्रेमचंद हों या निराला, मुक्तिबोध हों या राधाकृष्ण, रेणु हों या दुष्यंत, सभी की स्मृति मरणोपरांत ही सताती है. जब तक वे होते हैं—अभाव, पीड़ा, उपेक्षा की धरती पर ही अपनी सांसों की फसल उगाते रहते हैं और हम उनके कार्यकलापों को दूर खड़े हो किसी अजूबे की तरह तकते रहते हैं और मृत्यु होने पर हम ऐसे चौंकते हैं मानो कोई स्वप्न भंग हुआ हो.

■ अर्जुन पंजाबी, मनासा, मंदसौर, (म.प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो और नये नैतिक मूल्यों की पक्षधरता

"नैतिकता मुझे मदद नहीं करती. मैं पैदाइशी अधिकार-विरोधी हूं. मैं उनमें हूं जो कानून के लिए नहीं पैदा होते, बल्कि अपवाद होते हैं. मेरे ख़्याल में किसी का किया कोई काम गलत नहीं होता, बल्कि गलत यह होता है कि कोई क्या बनता है?

यह ठीक है कि व्यक्ति को कई बार बुरे काम के साथ-साथ अच्छे काम के लिए भी दंडित किया जाता है, पर ऐसा होना भी चाहिए, क्योंकि यह बुरे और अच्छे दोनों का बोध कराता है और किसी एक के प्रति पूर्वाग्रह को खत्म करता है. और तब अगर मैं अपने कैदी रह चुकने के लिए शर्मिंदा महसूस नहीं करता तो मुझे सोचने, घूमने और जीने के लिये मुक्त होना चाहिए. . ." (आस्कर वाइल्ड के 'आउट ऑफ द डेप्थ्स' से)

▣

आस्कर वाइल्ड का यह कथन, "मुझे सोचने, घूमने और जीने के लिए मुक्त होना चाहिए. . ." व्यक्तिगत रूप में सही हो सकता है, लेकिन जब तक यह सामाजिक संदर्भों में सही नहीं होता तब तक विशेष महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता. यही स्थिति —"नैतिकता मुझे मदद नहीं करती" की भी है. नैतिकता किसी की मदद नहीं कर सकती और सबकी मदद कर सकती है—यह मदद करना या न करना इस बात पर निर्भर करता है कि इंसानियत के हित में और समाज के हित में उस नैतिकता की भूमिका और मूल्य क्या हैं?

साहित्य में नैतिकता-अनैतिकता और श्लील-अश्लील के सवाल अक्सर उठते रहे हैं, लेकिन इनके संबंध में एक मत होकर कुछ भी नहीं कहा जा सका और न कहा जा सकता है.

मई के पहले अंक में मैंने

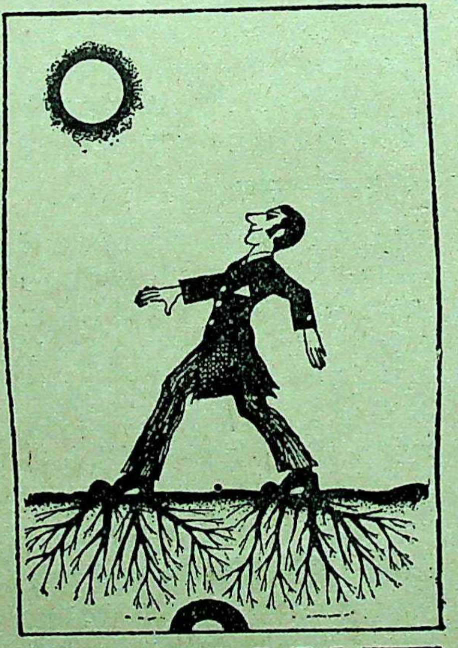

ज़रिया-नज़रिया

'ये खूनी रात के मंजर' ... सत्ता, कानून और सभ्... नैतिकता का सवाल उठा... सारिका का यह अंक ए... शख़्सियत से संबंध रखता है... लेखन पर अक्सर अनैतिक... अश्लीलता के आरोप ल... हैं. जब-जब आदमी के ... औरत की संवेदनाओं को ... मानवीय संवेदनाओं से अल... कर देखा है, उसे अश्... वर्जित करार दे दिया ... सही है कि वर्जनाएं हमेशा ... आयी हैं और आज भी हैं ... आज आदमी की सोच ... खुली हुई, व्यापक और ... कामी है. आज समाज में ... को वह दर्जा हासिल हो ... जो मंटो के ज़माने में न... उस वक्त औरत की प... मंटो के लिए भारी जोखि... साहस का काम था. वह ... मंटों ने पुरुष समाज के ... विद्रोह की आवाज़ बुलंद ... उस समय तरक्कीपसंद ... ने भी मंटो की भर्त्सना की ... वह भर्त्सना भले ही प्र... से रही हो, भले ही घुमा-फि... या गोलमोल ढंग से की ...

▣

विभाजन के समय ... यिकता और कौमी सोच ... आदमी ने आदमी की ह... इंसानियत को इंसानी ... नहलाया और इंसानी ... ठुकराकर अपने ही ... हमजोलियों और दोस्... लाशों के ढेर पर बैठकर ... सेकीं—क्या वह सब ... और अश्लील नहीं था ... ने इस घिनौने और ... घटनाचक्र को सही और ... संवेदनाएं दी थीं. मानव... और संवेदनाओं को ... उन्हें अर्थवाही शब्द दे... भी दृष्टि से अनैतिक और ... नहीं हो सकता. आज ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन ये घटनाचक्र दोहराये जाते हैं और इनमें सबसे ज़्यादा जलालत भोगनी पड़ती है औरत को. वह औरत चाहे किसी भी धर्म या संप्रदाय की क्यों न हो, शारीरिक और मानसिक संरचना के हिसाब से सबसे पहले औरत ही होती है. कानूनी तौर पर भीड़ को और समूचे जन समुदाय को सज़ा नहीं दी जा सकती, लेकिन उस कुकृत्य पर पर्दा डालकर नये कुकृत्यों को पैदा होने का मौका भी नहीं दिया जाना चाहिए. और ऐसे मौके को रोकने की कोशिश करना हर विचारशील और रचनाधर्मी का कर्तव्य हो जाता है. इस दृष्टि से भी मंटो की रचनाओं पर अनैतिकता का आरोप लगाना बेमानी हो जाता है. हमें आज भी मंटो की रचनाएं उतनी ही सशक्त, ताज़ा और सार्थक लगती हैं जितनी वे उस समय थीं. कालजयी रचनाओं का महत्व सार्वभौम और सार्वकालिक होता है.

▣

'अनैतिक' और 'अश्लील' शब्द हमारे बौद्धिक संकुचन और सांस्कृतिक वर्जनाओं के कारण अधिक मुखर हो उठते हैं. इनका सही आकलन इनके इस्तेमाल के प्रभाव को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए. सामाजिक हित-अहित, न्याय-अन्याय को ही इसकी कसौटी बनाया जाना चाहिए. कोई रचना जब सीधे सामाजिक स्थितियों से सही सामाजिक न्याय की आकांक्षा के साथ जुड़ती है तो वह बावजूद सामाजिक विकृतियों के उद्घाटन के महत्वपूर्ण हो उठती है. दरअसल उसके महत्व को समझा और स्वीकारा जाना चाहिए. यदि हम अपने आप में यह समझ और स्वीकार का साहस पैदा कर लें तो उस समय सापेक्ष नैतिकता-अनैतिकता का सही स्वरूप और अर्थ अपने आप उजागर हो जायेगा.

यह ज़रूरी नहीं, किसी एक व्यक्ति की नैतिकता पूरे समाज की नैतिकता हो या किसी खास वर्ग और समाज की नैतिकता पूरे देश की नैतिकता बन जाये. लेकिन यह ज़रूरी है कि किसी एक व्यक्ति की अनैतिकता को पूरे समाज और देश की अनैतिकता नहीं बनने दिया जाना चाहिए. यदि ज़हर का इंजेक्शन किसी की ज़िंदगी छीनने के लिए दिया जाता है तो वह बुरा है, अनैतिक है और यदि उससे किसी दूसरे ज़हर की शक्ति नष्ट करके किसी ज़िंदगी को बचाया जा सकता है तो वह निश्चय ही अच्छा और नैतिक है. वहां ज़हर अमृत का काम करता है. लक्ष्य की प्रामाणिकता ही नैतिकता और अनैतिकता की प्रामाणिकता है.

परंपराएं टूटती हैं, रूढ़ियां टूटती हैं, बंधे-बंधाये जीवन-मूल्य टूटते हैं और उन्हीं के साथ जन्म लेती हैं नयी मान्यताएं, नये जीवन-मूल्य और नये सोच की अवधारणाएं. ये सारी चीज़ें मिलकर नयी नैतिकता को जन्म देती हैं. मतलब यह है कि वक्त के साथ नैतिकता-अनैतिकता के अर्थ, परिदृश्य और परिकल्पनाएं बदल जाती हैं और इस गैप को भरती है नयी परंपरा और नयी रूढ़ि बनने की प्रक्रिया.

▣

नैतिकता-अनैतिकता के साथ ही जुड़ा हुआ सवाल है—श्लील-अश्लील का. इस सवाल की ऐतिहासिकता, पारिभाषिकता तथा अन्य पहलुओं पर अगले अंक में विचार किया जायेगा, यहां मैं सिर्फ मंटो विशेषांक को ही ध्यान में रखकर कुछ बातें कहना चाहता हूं, क्योंकि मंटो ने इन शब्दों की मार को बहुत झेला है. मंटो ने आदमी की नियति को समझा है और उसमें साझेदारी की है. नियति की साझेदारी सीधे अपने वक्त के आदमी के साथ जुड़ती है और आदमी के साथ जुड़ना ही सही रचनाधर्मिता की पहली और महत्वपूर्ण शर्त है. मंटो ने इस शर्त को बख़ूबी निबाहा है और इस निर्वाह के लिए खासा खामियाजा भी भुगता है. अश्लीलता के नाम पर मंटो की 'काली सलवार', 'बू' 'नंगी आवाज़ें', 'ठंडा गोश्त', 'खुशिया' आदि कहानियों को जमकर दुत्कारा गया, इन्हें लेकर मुकदमे चले. मंटो ने किसी भी नज़रिये से इन्हें अश्लील स्वीकार नहीं किया. 'काली सलवार' और 'खुशिया' हमने इस अंक में शरीक की है. हम अन्य कहानियां भी शरीक करना चाहते थे, ताकि हमारे सुधी पाठक स्वयं ही श्लील-अश्लील का निर्णय कर सकें, लेकिन स्थानाभाव तथा रचनात्मकता-वैचारिकता के प्रतिनिधित्व का संतुलन बनाये रखने के कारण उन्हें शरीक नहीं कर सके. सही बात तो यह है कि मन और सोच की स्थितियां ही सही-गलत स्थितियों को जन्म देती हैं. दर्शक, श्रोता और पाठक अपनी संवेदनाओं की तीव्रता के अनुसार दृश्य, श्रव्य और पठ्य से जुड़ते हैं और उनसे तदनुरूप अर्थ ग्रहण करते हैं. जिस तरह अपने मन की करुणा का प्रतिफल न हम बाहर महसूसते हैं उसी तरह अपनी आंतरिक अश्लीलता का प्रतिफल न भी हम बाहर ढूंढ़ते, देखते और महसूसते हैं. मंटो या कोई भी रचनाधर्मी इसी प्रतिफलन की प्रक्रिया का शिकार होता है.

बहरहाल, हम यह अंक मंटो की जीवंतता, उसकी यादों और उसकी संघर्ष-क्षमता को समर्पित कर रहे हैं. इन महत्वपूर्ण सवालों पर अगले अंकों में भी विस्तार से विचार करेंगे. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

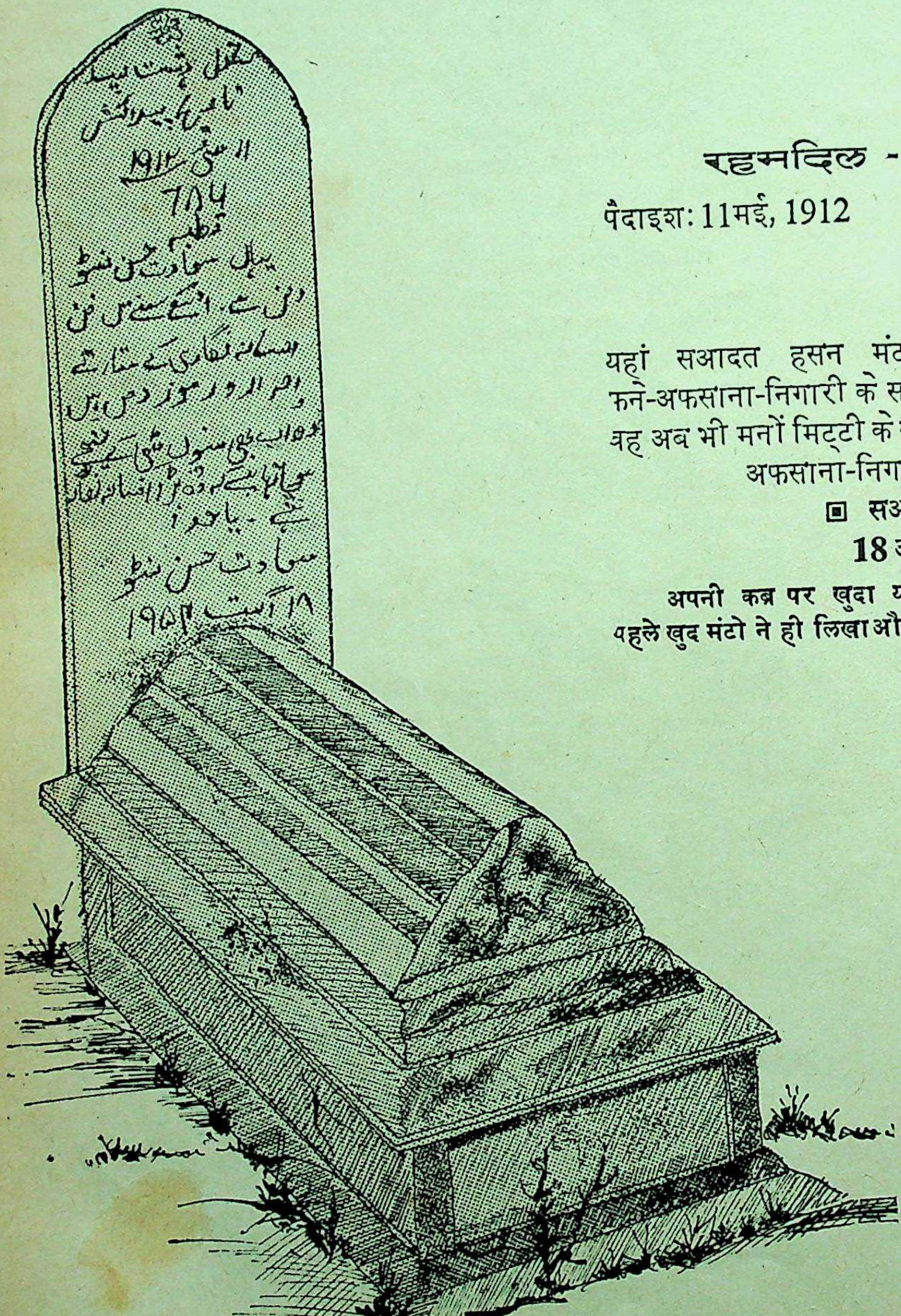

रहमदिल - दहशतपसंद

पैदाइश: 11 मई, 1912 इंतकाल: 18 जनवरी, 1

७८६

कत्बा

यहां सआदत हसन मंटो दफ़न है. उसके सी
फ़ने-अफसाना-निगारी के सारे असरार व रमोज़ द
वह अब भी मनों मिट्टी के नीचे सोच रहा है कि वह
अफसाना-निगार है या ख़ुदा!

▣ सआदत हसन मंटो
18 अगस्त, 1954

अपनी कब्र पर ख़ुदा यह कत्बा मौत से कुछ माह पहले ख़ुद मंटो ने ही लिखा और उसके बाद ज़्यादा दिन नहीं

मंटो विशे

▣ सआदत हसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी ज़िंदगी में तीन बड़ी घटनाएं घटी हैं. पहली मेरे जन्म की. दूसरी मेरी शादी की और तीसरी मेरे कहानीकार बन जाने की.

लेखक के तौर पर राजनीति में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है. लीडरों और दवाफरोशों को मैं एक ही नज़र से देखता हूं. लीडरी और दवाफरोशी दोनों पेशे हैं. राजनीति से मुझे उतनी ही दिलचस्पी है, जितनी गांधीजी को सिनेमा से थी. गांधीजी सिनेमा नहीं देखते थे, और मैं अखबार नहीं पढ़ता. दरअसल हम दोनों गलती करते हैं. गांधीजी को फिल्में ज़रूर देखनी चाहिए थीं, और मुझे अखबार ज़रूर पढ़ने चाहिए.

मुझसे पूछा जाता है कि मैं कहानी कैसे लिखता हूं. इसके जवाब में मैं कहूंगा कि अपने कमरे में सोफे पर बैठ जाता हूं, कागज़-कलम लेता हूं और 'बिस्मिल्ला' कहकर कहानी शुरू कर देता हूं. मेरी तीनों बेटियां शोर मचा रही होती हैं. मैं उन से बातें भी करता हूं. उनके लड़ाई-झगड़े का फैसला भी करता हूं. कोई मिलने वाला आ जाये, तो उसकी खातिरदारी भी करता हूं, पर कहानी भी लिखता रहता हूं. सच पूछिए तो मैं वैसे ही कहानी लिखता हूं, जैसे खाना खाता हूं, नहाता हूं, सिगरेट पीता हूं और झक मारता हूं.

अगर पूछा जाये कि मैं कहानी क्यों लिखता हूं, तो कहूंगा कि मुझे शराब की तरह कहानी लिखने की भी लत पड़ गयी है.

बड़ा आदमी गुसलखाने में सोचता है. मुझे अपने तजुर्बे से पता लगा है कि मैं बड़ा आदमी नहीं हूं, क्योंकि गुसलखाने में जाकर सोच नहीं सकता हूं, पर हैरानी है कि फिर भी मैं हिंदुस्तान और पाकिस्तान का बहुत बडा कहानीकार हूं. इस बारे में मैं यही कह सकता हूं कि या तो मेरे आलोचकों को खुशफहमी है या फिर मैं उनकी आंखों में धूल झोंक रहा हूं.

ऐसे मौकों पर, जब कहानी नहीं ही लिखी जाती, तो कभी यह होता है कि मेरी बीवी मुझसे कहती है, "आप सोचिए नहीं, कलम उठाइये और लिखना शुरू कर दीजिए!" मैं उसके कहने पर कलम उठा कर लिखना शुरू कर देता हूं. उस समय दिमाग बिल्कुल खाली होता है, पर जेब भरी हुई होती है. तब अपने आप ही कोई कहानी उछलकर बाहर आ जाती है. इस नुक्ते से मैं खुद को कहानीकार नहीं, बल्कि जेबकतरा समझता हूं, जो अपनी जेब खुद काटता है और लोगों के हवाले कर देता है.

मैंने रेडियो के लिए जो नाटक लिखे, वे रोटी के उस मसले की पैदावार हैं, जो हर लेखक के सामने उस समय तक रहता है, जब तक वह पूरी तरह मानसिक तौर पर अपाहिज न हो जाये. मैं भूखा था, इसलिए मैंने यह नाटक लिखे. दाद इस बात की चाहता हूं कि मेरे दिमाग ने मेरे पेट में घुसकर ऐसे हास्य-नाटक लिखे हैं, जो दूसरों को हंसाते हैं, पर मेरे होंठों पर हलकी-सी मुस्कराहट भी पैदा नहीं कर सके.

मंटो : कहानी कहने की अदा—मैं कहानीकार नहीं, जेबकतरा हूं

मैं कहानी न लिखूं, तो मुझे ऐसा लगता है कि मैंने कपड़े नहीं पहने हैं या गुसल नहीं किया है या शराब नहीं पी है. दरअसल मैं कहानी नहीं लिखता हूं, बल्कि कहानी मुझे लिखती है. मैं बहुत कम पढ़ा-लिखा आदमी हूं. वैसे तो मैंने दो दर्जन किताबें लिखी हैं, पर कई बार मुझे हैरानी होती कि यह कौन है, जिसने इतनी अच्छी कहानियां लिखी हैं और जिस पर आये दिन मुकदमे चलते रहते हैं. जब कलम मेरे हाथ में न हो, तो मैं सिर्फ सआदत हसन होता हूं!

कहानी मेरे दिमाग में नहीं, मेरी जेब में होती है, जिसकी मुझे कोई खबर नहीं होती. मैं अपने दिमाग पर ज़ोर देता हूं कि कोई कहानी निकल आये. कहानी लिखने की बहुत कोशिश करता हूं. सिगरेट पर सिगरेट फूंकता हूं, पर कहानी दिमाग से बाहर नहीं निकलती. आखिर थक-हारकर बांझ औरत की तरह लेट जाता हूं. अनलिखी कहानी की कीमत पेशगी वसूल कर चुका हूं, इसलिए बड़ी झुंझलाहट होती है. करवट बदलता हूं. उठकर अपनी चिड़ियों को दाने डालता हूं. बच्चियों को झूला झुलाता हूं. घर का कूड़ा-करकट साफ़ करता हूं, घर में इधर-उधर बिखरे नन्हें-मुन्ने जूते उठाकर एक जगह रखता हूं, पर कमबख्त कहानी जो मेरी जेब में पड़ी होती है, मेरे दिमाग में नहीं आती और मैं तिलमिलाता रहता हूं.

जब बहुत ही ज्यादा कोफ़्त होती है, तो गुसलखाने में चला जाता हूं, पर वहां से भी कुछ मिलता नहीं. सुना है कि हर

रोटी और कला का रिश्ता कुछ अजीब-सा लगता है, पर क्या किया जाये! खुदावंदताला को यही मंज़ूर है. यह गलत है कि खुदा हर चीज़ से खुद को निलिप्त रखता है और उसको किसी चीज़ की भूख नहीं है. दरअसल उसे भक्ति चाहिए और भक्ति बड़ी नर्म और नाज़ुक रोटी है, बल्कि चुपड़ी हुई रोटी है, जिस से ईश्वर अपना पेट भरता है. सआदत हसन मंटो लिखता है, क्योंकि वह ईश्वर जितना कहानीकार और कवि नहीं है. उसे रोटी की खातिर लिखना पड़ता है.

मैं जानता हूं कि मेरी शख़्सियत बहुत बड़ी है और उर्दू साहित्य में मेरा बहुत बड़ा नाम है. अगर यह खुशफहमी न हो तो ज़िंदगी और भी मुश्किल बन जाये. पर मेरे लिए यह एक तल्ख हकीकत है कि अपने मुल्क में, जिसे पाकिस्तान कहते हैं, मैं अपना सही स्थान ढूंढ नहीं पाया हूं. यही वजह है कि मेरी रूह बेचैन रहती है. मैं कभी पागलखाने में और कभी अस्पताल में होता हूं.

मुझसे पूछा जाता है कि मैं शराब से अपना पीछा क्यों नहीं छुड़ा लेता? मैं अपनी ज़िंदगी का तीन-चौथाई हिस्सा बदपरहेज़ियों की भेंट चढ़ा चुका हूं. अब तो यह हालत है कि परहेज़ शब्द ही मेरे लिए डिक्शनरी से गायब हो गया है.

मैं समझता हूं कि ज़िंदगी अगर परहेज़ से गुज़ारी जाये, तो एक कैद है. अगर वह बदपरहेज़ियों में गुज़ारी जाये, तो भी एक कैद है. किसी न किसी तरह हमें इस जुर्राब के धागे का एक सिरा पकड़कर उसे उधेड़ते जाना है और बस! □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

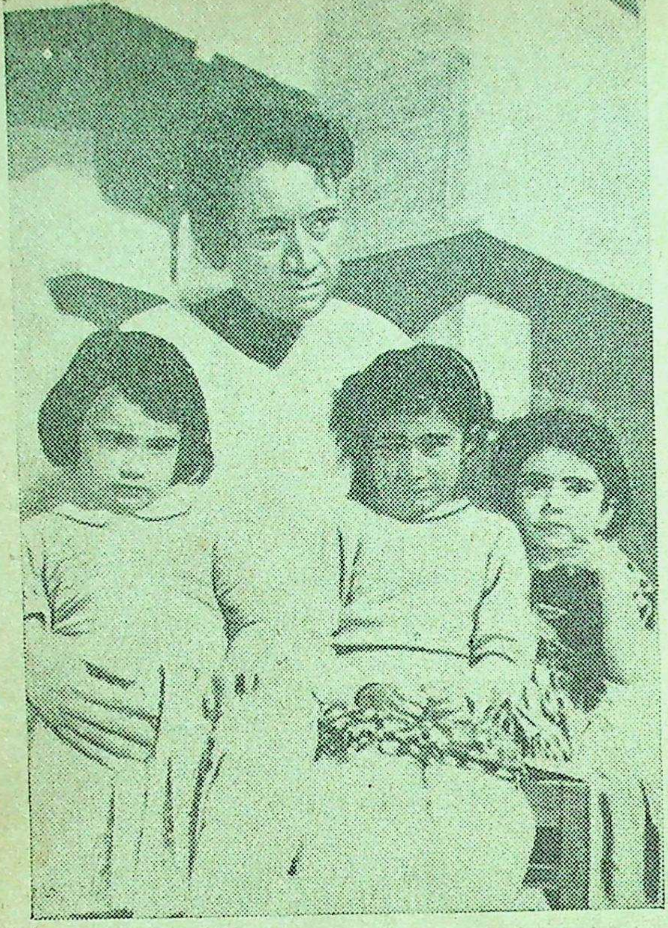

मंटो और उनकी तीन बेटियां--निगहत, नज़हत और नुसरत

मील का पत्थर

'मंत्र'

सीधी-सरल और उत्कृष्ट कहानी

प्रस्तुति : उपेंद्रनाथ अश्क

मेरी यह पुरानी आदत है कि अपना लिखते-लिखते मैं दूसरों की रचनाएं पढ़ता रहता हूं. किसी नये लेखक की अथवा किसी पुराने की लेखक की नयी पुस्तक मेज पर होती है तो उसे पढ़ता हूं, वरना रैक से कोई पुरानी पसंदीदा पुस्तक उठा लाता हूं और पहले से पढ़ी हुई रचनाओं को फिर पढ़ने लगता हूं. मैंने यह हमेशा देखा है कि पुरानी उत्कृष्ट रचनाओं को दोबारा-सहबारा पढ़ने में उतना ही और कई बार उससे ज़्यादा रस मिलता है, जो पहली बार पढ़ने पर मिला होता है, क्योंकि तब रचना का कोई ऐसा नुक्ता, कोण अथवा आयाम सामने आ जाता है, जिस पर पहली बार नज़र नहीं गयी होती.

जहां तक उर्दू कथाकारों का संबंध

मंटो की कहानियां :

है—बेदी, बलवंत सिंह और चुगताई के साथ मंटो मेरे कथाकार हैं. न जाने उनकी रचनाएं मैंने कितनी बार पढ़ी यह मानने में ज़रा भी संकोच मैंने हमेशा उनमें नया रस मंटो आमतौर पर दो कहानियों के लिए प्रसिद्ध हैं: (1) कहानियां, जिनमें सेक्स के किसी सूक्ष्म पहलू का उद्घाटन है, वाद-विवाद का कारण बनीं, कहलायीं और जिनके खिलाफ चले (2) ऐसी कहानियां, समाज अथवा व्यवस्था के भयंकर क्रोध और विक्षोभ है.

पहली तरह की कहानियों में 'धुआं', 'ब्लाउज़', 'काली 'बू', 'नंगी आवाज़ें', और 'ठं के नाम लिये जा सकते हैं. और तरह की कहानियों में 'टोबा 'टिथवाल का कुत्ता,' 'नया 'शहीद साज़', 'हतक', 'स्वराज्य 'ममी', 'खोल दो', 'नारा' आदि

लेकिन मंटो ने और भी तरह की कहानियां लिखी हैं-

तीसरी तरह की कहानियां जिनमें न तो कथाकथित है, न समाज तथा व्यवस्था किसी तरह का ग़मो-ग़ुस्सा! चरित्र के विभिन्न पक्षों का करने वाली बहुत ही कला लेकिन उत्कृष्ट रचनाएं हैं. नाथ,' 'मंत्र', 'मैडम डिकास्टा, शील', 'डरपोक' और 'खुदकु ही कहानियां हैं.

मंटो ने चौथी तरह की कहानियां लिखी हैं, इनसे के स्वभाव की कमज़ोरियों, उनके ग़मो-ग़ुस्से, उनके द्वंद्व और उनके दृष्टिकोण उनके शब्दों में, पता मिलता खत' और 'दो गड्ढे' इस उल्लेखनीय हैं.

पांचवीं तरह की कहानियां यहां ऐसी मिलती हैं, जिन्हें 'अफ़सांचे' और हिंदी में 'लघु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा जायेगा. ये कहानियां रूसी कथाकार सलोगव की शैली में लिखी गयी हैं और उसी की कहानियों की तरह यदि गंभीरता का पहलू न लिए हुए हों तो चुटकुले कहला सकती हैं. मंटो के कुछ विरोधी आलोचकों ने यह नाम देते हुए उनका मज़ाक भी उड़ाया है. ये कहानियां मंटो ने अधिकांशतः देश के विभाजन से प्रभावित होकर लिखी थीं. और ये सब उनकी पुस्तक 'स्याह हाशिए' में संकलित हुईं. इनमें 'जूता', 'हैवान', 'सहयोग', 'बंटवारा', 'सौरी', 'किस्मत' बहुत अच्छी उतरी हैं. उनमें मंटो की कला के तमाम गुण और उनके अंतर की तमाम यंत्रणा मौजूद है.

मंटो ने छठी तरह की सिर्फ एक कहानी लिखी है—फुंदने! यह ऐसी कहानी है, जैसी कि उर्दू के जदीदिए याने अपने आपको अत्याधुनिक कथाकार कहलाने वाले (बलराज मैनरा और उनके साथी) लिखते हैं. इसी लिए इस कहानी को उन्होंने परचम के तौर पर अपनी शोभायात्रा में (जो एक बृहद संकलन के रूप में निकली है) इस्तेमाल कर लिया है. वे लोग मानो कहना चाहते हैं कि मंटो की अन्य कहानियां महत्वपूर्ण नहीं, सिर्फ यही कहानी महत्वपूर्ण है. यह और बात है कि यह कहानी केवल जदीदियों के झंडे के ही काम आयेगी.

▣

अपनी जिंदगी के अंतिम दिनों में लगातार तीन हफ्तों तक, मंटो ने लाहौर के एक प्रकाशक के लिए एक बोतल शराब की कीमत पर रोज एक कहानी भी लिखी. ऐसी कहानियों की संख्या बीस है, जो 11 मई 1954 से लेकर 2 जून 1954 तक लिखी गयीं.

मैं अपने अनुभव से जानता हूं कि मंटो अपनी कहानियों पर बहुत मेहनत करते थे. उनकी कहानी 'स्वराज्य के लिए' जो उन्होंने बंबई में फिलिमस्तान की नौकरी के जमाने में लिखी और वक्त-वक्त पर मुझे सुनायी, कई महीनों में खत्म हुई थी. ज़ाहिर है, एक सिटिंग में लिखी गयी कहानियां सब की सब उच्चकोटि की नहीं हैं, लेकिन इनमें भी 'खुदकुशी' जो 25 मई 1954 को लिखी गयी और 'कमीशन' (जो कहानी नहीं नाटक है और उस सिलसिले की अंतिम रचना है), उच्चकोटि की कृतियां हैं. मंटो ने अपना साहित्यिक जीवन एक अनुवादक के रूप में शुरू किया. उन्होंने पहले कुछ रूसी कहानियों का अनुवाद किया, फिर विक्टर ह्यू गो के एक उपन्यास खंड का, जो 'सरगुज़श्त-ए-असीर' के नाम से 'उर्दू बुक स्टाल' लाहौर से छपा था. लेकिन जल्दी ही वे मौलिक कहानियां लिखने लगे. मैं नहीं जानता उन्होंने किन रूसी कथाकारों की कहानियों के अनुवाद किये, क्योंकि वे कहीं छप नहीं पायीं. लेकिन जब उन्होंने मौलिक कहानियां लिखनी शुरू कीं तो उन पर मा'म (समरसेट मा'म) का असर था और अपने तमाम दोस्तों को वे मा'म के अफसाने पढ़ने की सलाह देते थे. मैं यह समझता हूं कि मंटो ने चाहे कहानी लिखना तो मा'म के प्रभाव में शुरू किया, (ऊपर मैंने जिन तीसरी तरह की कहानियों का उल्लेख किया है, उन पर मा'म का प्रभाव साफ जाहिर है) लेकिन जल्दी ही उस प्रभाव से वह निकल गये. प्रगतिशील आंदोलन का जमाना था और तत्कालीन सभी कथाकारों की तरह मंटो पर भी उस आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा. मंटो की कहानियों में ये दोनों प्रभाव उनकी अंतिम कहानियों तक देखे जा सकते हैं. एक तरफ ऐसी कहानियां हैं, जिनमें कोई समाजिक उद्देश्य नहीं, वे अत्यंत कलाकारिता से मानव मन के किसी अछूते पहलू का उद्घाटन करती हैं, दूसरी ओर ऐसी कहानियां हैं, जिनमें समाज या व्यवस्था के खिलाफ़ भयंकर विक्षोभ है और इनकी सोद्देश्यता असंदिग्ध है.

मुझे मंटो हमेशा मा'म से कहीं बेहतर और ऊंचे कथाकार लगे हैं, क्योंकि जहां तक मैंने मा'म को पढ़ा है, वह मानव की नियति के प्रति निरपेक्ष है—सिनिसिज्म की हद तक. वह मानव-नियति का महज़ दर्शक या चितेरा है, जबकि अपनी उत्कृष्ट कहानियों में मंटो मानव-नियति के प्रति निरपेक्ष नहीं है. वे उसमें भागीदार हैं, इन्वाल्वड हैं, उसका अंग हैं, अपनी हर ऐसी कहानी में मंटो स्वयं मौजूद हैं—'खुशिया' में खुशिया है तो 'ब्लाउज' में मोमिन, 'हतक' में सुगंधी है तो 'नंगी आवाज़ें' में भोल, 'स्वराज्यके लिए' में गुलाम अली हैं तो 'प्रगतिशील' में जुगिंदर, 'नया कानून' में मंगू कोचवान है तो 'टोबा टेक सिंह' में पागल सिक्ख, 'बाबू गोपीनाथ' में वे बाबा गोपीनाथ हैं तो 'मंत्र' में नन्हा राम. मंटो की कहानियों में जो भी व्यक्ति सहता है—वह समाज अथवा व्यवस्था का जुल्म हो अथवा अपनी भावुकता-जनित मूर्खता का परिणाम या फिर अपनी विकृतियों (परवर्शन्ज) की मार—वह मंटो स्वयं है. वे महज़ दर्शक नहीं भोक्ता हैं. इसीलिए मा'म से प्रभावित होकर भी वे मा'म की अपेक्षा बेहतर कथाकार हैं.

▣

मैंने पहले भी किसी स्थल पर लिखा है—मंटो उतने बद नहीं थे, जितने बदनाम थे. वे बेहद भाव प्रवण लेखक थे. जब उनकी अपेक्षाकृत निरीह कहानी 'खुशिया' के खिलाफ़ किसी मजहबी पर्चे में सख्त नोट लिखा गया और उस पर अश्लीलता का इल्जाम लगाया तो उन लोगों को चिढ़ाने के लिए वे लगातार अश्लील कहानियां लिखते चले गये. जब व्यवस्था ने उनके खिलाफ़ मुकदमें चलाये तो मंटो ने उसी कलाकारिता और कटु यथार्थता से व्यवस्था के झूठ और जुल्म का पर्दाफाश किया.

मैंने मंटो की वे तथाकथित अश्लील कहानियां न सिर्फ कई बार स्वयं पढ़ी हैं, वरन् स्वयं यशपाल को भी सुनायी हैं. वे मुझसे सहमत थे कि वे भी ऐसी मानवीय संवेदना से भरी हैं, जो मन को कचोट जाती हैं. संवेदनशील पाठक को उनकी कचोट झकझोर जाती है और अश्लीलता कहीं भी नहीं छूती. 'मंत्र' मंटो की शुरु की कहानी है. बेदी की 'भोला' की तरह मैं इसे सीधी-सरल, लेकिन उच्चकोटि की कहानी मानता हूं. इसमें न किसी तरह की अश्लीलता है, न समाज अथवा व्यवस्था के खिलाफ़ क्रोध अथवा विक्षोभ. इस पर भी महज़ एक बार पढ़कर इसे भुलाना संभव नहीं.

कहानी : अगले पृष्ठ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र

नन्हा राम, नन्हा तो था, शरारतों के लिहाज़ से बहुत था. चेहरे से बेहद भोला-भाला लगता कोई नक्श या रेखा ऐसी नहीं थी शोखी का पता दे. उसके शरीर का अंग भद्देपन की हद तक मोटा था. तो लगता जैसे कि फुटबाल लुढ़क रहा उम्र मुश्किल से आठ बरस की पर बला का ज़हीन और चालाक लेकिन उसकी समझ और चालाकी पता उसके सरापे से लगाना बहुत मु था. राम के पिता, श्री शंकराचार्य ए., एल.-एल. बी., कहा करते थे कि में राम-राम और बगल में छुरी मिसाल इसी राम के लिए बनायी है.

राम के मुंह से 'राम-राम' तो ने सुना नहीं था, पर उसकी बग़ल में की जगह एक छोटी-सी छड़ी ज़रूर करती थी, जिससे वह कभी-कभी फ़ेयर बैंक यानी 'बगदादी चोर' की वारबाज़ी की नकल किया करता

जब राम की मां, यानी श्रीमती चार्य, उसको कान से पकड़कर उस के सामने लायीं तो वह बिल्कुल आंखें खुश्क थीं. उसका एक कान उसकी मां के हाथ में था, दूसरे बड़ा मालूम हो रहा था. वह रहा था, पर उस मुस्कराहट में भोलापन था. उसकी मां का चेहरा में तमतमाया हुआ था, पर राम के से पता चलता था कि वह अपने से खेल रहा है और अपने कान के हाथ में देकर एक खास कि आनंद ले रहा है, जिसको वह दूस ज़ाहिर करना नहीं चाहता.

जब राम, श्री शंकराचार्य के लाया गया तो वे आराम-कुर्सी पर बैठ गये कि उस नालायक के कान हालांकि वे उसके कान खींच-खीं काफ़ी से ज़्यादा लंबे कर चुके थे उसकी शरारतों में कोई फ़र्क न पाया था. वे अदालत में कानून के बहुत कुछ कर लेते थे, पर यहां छोटे-से लौंडे के सामने उनकी न चलती थी.

एक बार श्री शंकराचार्य ने शरारत पर उसको परमेश्वर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राने की कोशिश की थी. उन्होंने कहा था, "देख राम, तू अच्छा लड़का बन जा, नहीं तो मुझे डर है, परमेश्वर तुझसे नाराज़ हो जायेंगे."

राम ने जवाब दिया था, "आप भी तो नाराज़ हो जाया करते हैं और मैं आपको मना लिया करता हूं." और फिर थोड़ी देर सोचने के बाद उसने यह पूछा था, "बाबूजी, ये परमेश्वर कौन हैं ?"

श्री शंकराचार्य ने उसे समझाने के लिए जवाब दिया था, "भगवान, और कौन ?. . . .हम सबसे बड़े ?"

"इस मकान जितने ?"

"इससे भी बड़े. . . . देख, अब तू कोई शरारत न कीजियो, वरना वो तुझे मार डालेंगे." श्री शंकराचार्य ने अपने बेटे को डराने के लिए परमेश्वर को उससे ज़्यादा डरावनी शक्ल में पेश करने के बाद सोच लिया था कि अब राम सुधर जायेगा और कोई शरारत न करेगा. पर राम ने, जो उस वक्त चुप बैठा, अपने दिमाग़ के तराज़ू में परमेश्वर को तौल रहा था, कुछ देर गौर करने के बाद जब बड़े भोलेपन से कहा, "बाबूजी, आप मुझे परमेश्वर दिखा दीजिए," तो शंकराचार्य महोदय की सारी कानूनदानी और वकालत धरी की धरी रह गयी थी. अगर किसी मुकदमे का हवाला देना होता तो वे उसको फ़ाइल निकालकर दिखा देते या अगर कोई भारतीय दंड विधान की किसी धारा के बारे में सवाल करता तो वे अपनी मेज पर से वह मोटी किताब उठाकर खोलना शुरू कर देते, जिसकी जिल्द पर उनके उस बेटे ने चाकू से बेल-बूटे बना रखे थे, पर वे परमेश्वर को कहां से पकड़ लाते, जिसके बारे में उन्हें खुद भी अच्छी तरह मालूम नहीं था कि वह क्या है, कहां रहता है और क्या करता है !

जिस तरह उनको यह मालूम था कि धारा 379 चोरी के अपराध पर लागू होती है, उसी तरह उनको यह भी मालूम था कि मारने और पैदा करने वाले को परमेश्वर कहते हैं. और जिस तरह उनको यह मालूम नहीं था कि वह, जिसके कानून बने हुए हैं, उनकी असलियत क्या है, ठीक उसी तरह उनको ईश्वर की असलियत भी मालूम नहीं थी. वे एम. ए., एल.एल. बी. थे, पर यह डिग्री उन्होंने ऐसी उलझनों में फंसने के लिए नहीं, बल्कि पैसा कमाने के लिए हासिल की थी.

वे राम को परमेश्वर न दिखा सके और न उसको कोई माकूल जवाब ही दे सके, इसलिए कि यह सवाल ही कुछ इस तरह अचानक तौर पर किया गया था कि उनका दिमाग़ बिल्कुल खाली हो गया था. वे बस इतना कह सके थे, "जा राम, जा, मेरा दिमाग़ न चाट, मुझे बहुत काम करना है."

▣

इस वक्त भी उन्हें काम सचमुच बहुत करना था, पर वे पुरानी हारों को भूलकर फ़ौरन ही इस नये मुकदमे का फ़ैसला कर देना चाहते थे.

उन्होंने राम की तरफ़ गुस्से से भरी निगाहों से देखकर अपनी धर्मपत्नी से कहा, "आज इसने कौन-सी नयी शरारत की है?... मुझे जल्दी बताओ, मैं आज इसे डबल सज़ा दूंगा."

श्रीमती शंकराचार्य ने राम का कान छोड़ दिया और कहा, "इस मुए ने तो जीना दूभर कर रखा है. जब देखो, नाचना, थिरकना ,कूदना. . . . न आये की शर्म, न गये का लिहाज़ . . . . सुबह से मुझे सता रहा है. कई बार पीट चुकी हूं, पर यह अपनी शरारतों से बाज़ ही नहीं आता. रसोई घर में से दो कच्चे टमाटर निकालकर खा गया है. अब मैं सलाद में इसका सिर डालूं?"

यह सुनकर शंकराचार्य महोदय को एक धक्का-सा लगा. वे सोच रहे थे कि राम के खिलाफ़ कोई संगीन इल्ज़ाम होगा, पर यह सुनकर कि उसने रसोईघर से सिर्फ़ दो कच्चे टमाटर निकालकर खाये हैं, उन्हें घोर निराशा हुई. राम को झिड़कने और कोसने के लिए उनकी सब तैयारी सहसा ठंडी पड़ गयी. उन्हें लगा कि उनका सीना एकदम खाली हो गया है, जैसे एक बार उनके मोटर के पहिये की सारी हवा निकल गयी थी.

टमाटर खाना कोई अपराध नहीं. इसके अलावा अभी कल ही श्री शंकराचार्य के एक दोस्त थे, जो जर्मनी से डॉक्टरी की ऊंची सनद लेकर आये थे, उनसे कहा था कि अपने बच्चों को खाने के साथ कच्चे टमाटर जरूर दिया कीजिए, क्योंकि उनमें खूब विटामिन होते हैं. पर अब चूंकि वे राम को डांटने-डपटने के लिए तैयार हो गये थे और उनकी पत्नी की भी यही इच्छा थी, इसलिए उन्होंने थोड़ी देर गौर करने के बाद एक कानूनी नुक्ता निकाला और इस खोज पर मन ही मन खुश होकर अपने बेटे से कहा, "मेरे पास आ और जो कुछ मैं तुझसे पूछूं, सच-सच बता."

उनकी श्रीमती चली गयीं और राम खामोशी से अपने पिता के पास खड़ा हो गया.

शंकराचार्य जी ने पूछा, "तूने रसोई घर से दो कच्चे टमाटर निकालकर क्यों खाये ?"

राम ने जवाब दिया, "दो कहां थे ? माताजी झूठ बोलती हैं."

"तू ही बता कितने थे ?"

"डेढ़—एक और आधा." राम ने ये शब्द उंगलियों से आधे का निशान बनाकर कहे, "दूसरे आधे से माताजी ने दोपहर को चटनी बनायी थी."

"चलो डेढ़ ही सही. पर तूने ये वहां से उठाये क्यों ?"

राम ने जवाब दिया, "खाने के लिए."

"ठीक है, पर तूने चोरी की." श्री शंकराचार्य ने कानूनी नुक्ते को पेश किया.

"चोरी ! बाबूजी, मैंने चोरी नहीं की. टमाटर खाये हैं, पर यह चोरी कैसे हुई !" यह कहता हुआ वह फ़र्श पर बैठ गया और ग़ौर से अपने बाप की तरफ़ देखने लगा.

"यह चोरी थी ! दूसरे की चीज़ को उसकी इजाज़त के बिना उठा लेना, चोरी होती है." शंकराचार्य जी ने यों अपने बच्चे को समझाया और सोचा कि वह उनका मतलब अच्छी तरह समझ गया है.

राम ने झट कहा, "पर टमाटर तो हमारे अपने थे, मेरी माताजी के."

शंकराचार्य सिटपिटा गये, पर फौरन ही उन्होंने अपना मतलब स्पष्ट करने की कोशिश की, "तेरी माताजी के थे, ठीक है, पर वे तेरे तो नहीं हुए ? जो चीज़ उनकी है, वह तेरी कैसे हो सकती है? देख, मेज पर जो तेरा खिलौना पड़ा है, उठा ला. मैं तुझे अच्छी तरह समझाता हूं."

राम उठा और दौड़कर लकड़ी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़ा उठा लाया और उसे उसने अपने पिता के हाथ में दे दिया, "यह लीजिए."

शंकराचार्य बोले "हां, तो देख, यह घोड़ा तेरा है न ?"

"जी हां."

"अब अगर मैं इसे तेरी इजाज़त के बिना उठाकर अपने पास रख लूं तो यह चोरी होगी," फिर उन्होंने बात और भी स्पष्ट करने के लिए कहा, "और मैं चोर."

"नहीं बाबूजी, आप इसे अपने पास रख सकते हैं. मैं आपको चोर नहीं कहूंगा. मेरे पास खेलने के लिए हाथी जो है. क्या आपने अभी तक देखा नहीं ? कल ही मुंशी दादा ने लाकर दिया है. ठहरिए, मैं अभी आपको दिखाता हूं." यह कहकर वह तालियां बजाता हुआ दूसरे कमरे में चला गया और मिस्टर शंकराचार्य आंखें झपकते रह गये.

▣

दूसरे दिन श्री शंकराचार्य को एक खास काम से पूना जाना पड़ा. उनकी बड़ी बहन वहीं रहती थी. एक अर्से से वह छोटे राम को देखने के लिए बेचैन थी, इसलिए एक पंथ दो काज के अनुसार शंकराचार्य जी अपने बेटे को भी साथ ले गये, पर इस शर्त पर कि वह रास्ते में कोई शरारत न करेगा. नन्हा राम इस शर्त को बोरीबंदर स्टेशन तक तो निभा पाया, लेकिन उधर 'दक्खिन क्वीन' चली और इधर राम के नन्हें-से सीने में शरारतें मचलना शुरू हो गयीं.

शंकराचार्य सेकेंड क्लास कंपार्टमेंट की चौड़ी सीट पर बैठे, अपने साथ वाले मुसाफ़िर का अख़बार देख रहे थे और सीट के आख़िरी हिस्से पर राम खिड़की में से बाहर झांक रहा था और हवा का दबाव देखकर, यह सोच रहा था कि अगर हवा उसे ले उड़े तो कितना मज़ा आये.

मिस्टर शंकराचार्य ने अपनी ऐनक के कोनों से राम की तरफ देखा और उसका हाथ पकड़कर नीचे बैठा दिया, "तू चैन भी लेने देगा या नहीं ! आराम से बैठ जा." यह कहते हुए उनकी नज़र राम की नयी टोपी पर पड़ी, जो उसके सिर पर चमक रही थी, "इसे उतारकर रख ले नालायक, हवा इसे उड़ा ले जायेगी."

उन्होंने राम के सिर पर से टोपी उतार कर उसकी गोद में रख दी.

पर थोड़ी देर के बाद टोपी फिर राम के सिर पर थी और वह खिड़की के बाहर सिर निकाले, दौड़ते हुए पेड़ों को ग़ौर से देख रहा था. दरख़्तों की भाग-दौड़ राम के दिमाग़ में आंख-मिचौली के दिलचस्प खेल का नक्शा खींच रही थी.

हवा के झोंके से अख़बार दोहरा हो गया और श्री शंकराचार्य ने अपने बेटे के सिर को फिर खिड़की से बाहर पाया. गुस्से में उन्होंने उसका हाथ खींचकर अपने पास बैठा लिया और कहा, "अगर तू यहां से एक इंच भी हिला तो तेरी ख़ैर नहीं." यह कहकर उन्होंने टोपी उतारकर उसकी टांगों पर रख दी.

इस काम से निपटकर, उन्होंने अख़बार उठाया और वे अभी उसमें वह पंक्ति ढूंढ़ ही रहे थे, जहां से उन्होंने पढ़ना छोड़ा था कि राम ने खिड़की के पास सरककर बाहर झांकना शुरू कर दिया. टोपी उसके सिर पर थी. यह देखकर श्री शंकराचार्य को सख़्त गुस्सा आया. उनका हाथ भूखी चील की तरह टोपी की तरफ बढ़ा और पलक-झपकते में वह उनकी सीट के नीचे थी. यह सब कुछ इतनी तेज़ी से हुआ कि राम को समझने का मौक़ा ही न मिला. मुड़कर उसने अपने पिता की ओर देखा, पर उनके हाथ उसे खाली नज़र आये. इसी परेशानी में उसने खिड़की से बाहर झांककर देखा तो उसे रेल की पटरी पर बहुत पीछे, खाकी कागज़ का एक टुकड़ा उड़ता नज़र आया. . . . उसने सोचा कि यह मेरी टोपी है.

इस ख़्याल के आते ही उसके दिल को एक धक्का-सा लगा. पिता की ओर खेद-भरी दृष्टि से देखते हुए उसने कहा, "बाबूजी, मेरी टोपी !"

शंकराचार्य चुप रहे.

"हाय मेरी टोपी." राम की आवाज़ बुलंद हुई.

शंकराचार्य कुछ न बोले.

राम ने रोने स्वर में कहा, "मेरी टोपी!" और अपने पिता का हाथ पकड़ लिया.

श्री शंकराचार्य ने उसका हाथ झटक-कर कहा, "गिरा दी होगी तूने. अब रोता क्यों है !"

इस पर राम की आंखों मे[ं] मोटे आंसू तैरने लगे.

"पर धक्का तो आप ही ने [...] उसने इतना कहा और रोने [...]

शंकराचार्य जी ने ज़रा [...] तो राम ने और ज़्यादा रोना [...] दिया. उन्होंने उसे चुप कराने [...] कोशिश की, पर सफल न हु[ए] [...] रोना सिर्फ टोपी ही बंद करा [...] चुनांचे मिस्टर शंकराचार्य ने [...] उससे कहा, "टोपी वापस आ[...] पर शर्त यह है कि तू उसे पहने [...]

हठात राम की आंखों मे[ं] [...] गये, जैसे तपी हुई रेत में बारि[श] [...] जज़्ब हो जायें. वह सरककर [...] आया, "उसे वापस लाइए."

शंकराचार्य जी ने कहा, [...] ही वापस आयेगी. मंत्र पढ़ना [...]

कंपार्टमेंट में सब मुसाफ़िर [...] की बातें सुन रहे थे.

"मंत्र !" यह कहते हुए [...] एकदम वह किस्सा याद आ ग[या] [...] एक लड़के ने मंत्र के द्वारा [...] चीज़ें गायब करनी शुरू कर [...] "पढ़िए बाबूजी."

यह कहकर वह खूब गौर [...] पिता की ओर देखने लगा, जैसे [...] समय श्री शंकराचार्य के गंजे [...] सींग उग आयेंगे.

शंकराचार्य ने उस मंत्र के [...] करते हुए, जो उन्होंने बचपन [...] इंद्रजाल' से पढ़कर कंठस्थ [...] कहा, "तू फिर तो शरारत नहीं [...]

"नहीं बाबूजी." राम ने [...] की गहराइयों में डूब रहा था. [...] को शरारत न करने का वचन [...]

शंकराचार्य महोदय को मं[त्र] [...] याद आ गये और उन्होंने म[न] [...] अपनी स्मरण-शक्ति की प्रशंसा [...] अपने लड़के से कहा, "ले, अब [...] कर ले."

राम ने आंखें बंद कर लीं [...] चार्य जी ने मंत्र पढ़ना शु[रू] [...]

'ओम् नमः कामेश्वरी, [...] उत्तमा दे भृंग प्रा स्वाहा.'

उनका एक हाथ सीट के [...] और 'स्वाहा' के साथ ही [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी गुदगुदी रानों पर आ गिरी.

राम ने आंखें खोल दीं. टोपी उसकी चपटी नाक के नीचे पड़ी थी और श्री शंकराचार्य की नुकीली नाक का बांसा, ऐनक की सुनहरी पकड़ के नीचे थरथरा रहा था. अदालत में मुकदमा जीतने के बाद उनका कुछ ऐसा ही हाल हुआ करता था.

"टोपी आ गयी." राम ने सिर्फ इतना कहा और चुप हो रहा और शंकराचार्य, राम को चुप बैठने का हुक्म देकर अखबार पढ़ने में तल्लीन हो गए. एक खबर काफी दिलचस्प और अखबारी ज़बान में बेहद 'सनसनीखेज' थी, चुनांचे मंत्र वगैरा सब कुछ भूलकर उसमें खो गये.

'दक्खिन क्वीन' बिजली के पैरों पर तेज़ी से उड़ रही थी. उसके पहियों की कर्कश गड़गड़ाहट, सनसनी पैदा करने वाली खबर की हर पंक्ति को शाब्दिक सहायता दे रही थी. शंकराचार्य यह पंक्ति पढ़ रहे थे :

अदालत में सन्नाटा छाया हुआ था. सिर्फ टाइपराइटर की टिक-टिक सुनाई दे रही थी. अभियुक्त सहसा चिल्लाया. . . "बाबूजी !". . . .

ठीक उस समय राम ने अपने पिता को ज़ोर से आवाज़ दी, "बाबूज़ी !" और शंकराचार्य जी को ऐसा लगा कि उस पंक्ति के अंतिम शब्द कागज़ पर उछल पड़े हैं.

राम के थरथराते हुए होंठ बता रहे थे कि वह कुछ कहना चाहता है.

शंकराचार्य ने ज़रा तेजी से कहा, "क्या है ?" और ऐनक के एक कोने से टोपी को सीट पर पड़ा देखकर, अपना इतमीनान कर लिया.

राम आगे सरक आया और कहने लगा, "बाबूजी, वही मंत्र पढ़िए."

"क्यों ?" यह कहते हुए शंकराचार्य ने राम की टोपी की तरफ़ गौर से देखा, जो सीट के कोने में पड़ी थी.

"आपके कागज़, जो यहां पड़े थे, मैंने बाहर फेंक दिये हैं."

राम ने उससे आगे कुछ और भी कहा, पर शंकराचार्य महोदय की आंखों के सामने अंधेरा-सा छा गया. बिजली की-सी गति के साथ उठकर उन्होंने खिड़की में से बाहर झांककर देखा, परे रेल की पटरी के साथ, तितलियों की तरह फड़फड़ाते हुए कागज़ के पुर्ज़ों के सिवा उन्हें और कुछ दिखायी न दिया.

"तूने वे कागज़ फेंक दिये, जो यहां पड़े थे ?" उन्होंने अपने दाहिने हाथ से सीट की तरफ़ इशारा करते हुए कहा.

राम ने स्वीकार में सिर हिला दिया, "आप वही मंत्र पढ़िए न."

शंकराचार्य महोदय को ऐसा कोई मंत्र याद न था, जो सचमुच की खोयी हुई चीज़ों को वापस ला सके. वे सख्त परेशान थे. वे कागजात, जो उनके बेटे ने फेंक दिये थे, एक नये मुकदमे की मिसिल थी जिसमें चालीस हज़ार की मालियत के कानूनी कागज़ात पड़े थे. श्री शंकराचार्य एम. ए., एल-एल. बी. की बाज़ी उनकी अपनी ही चाल से मात हो गयी थी. पल भर में उनके कानूनी दिमाग में कागजात के बारे में सैकड़ों विचार आये. ज़ाहिर है कि मिस्टर शंकराचार्य के मुवक्किल का नुकसान, उनका अपना नुकसान था. पर अब वे क्या कर सकते थे!

सिर्फ यह कि अगले स्टेशन पर उतरकर, रेल की पटरी के साथ-साथ चलना शुरू कर दें और दस-पंद्रह मील तक उन कागज़ों की तलाश में मारे-मारे फिरते रहें. मिलें न मिलें उनकी किस्मत !

क्षण भर में सैकड़ों बातें सोचने के बाद, अंत में उन्होंने अपने मन में यह फैसला कर लिया कि अगर तलाश करने पर भी कागज़ात न मिले तो वे मुवक्किल के सामने सिरे से ही इनकार कर देंगे कि उसने उनको कभी कागज़ात दिये थे. नैतिक और कानूनी तौर पर यह नितांत अनुचित था. लेकिन इसके अलावा और हो भी क्या सकता था!

इस संतोषप्रद विचार के बावजूद शंकराचार्य महोदय के मुंह में कड़वाहट-सी पैदा हो रही थी. सहसा उनके मन में आया कि कागज़ों की तरह, वे राम को भी उठाकर गाड़ी से बाहर फेंक दें, पर इस इच्छा को सीने में ही दबाकर उन्होंने उसकी ओर देखा.

राम के होंठों पर एक अजीबो-गरीब मुस्कराहट फैल रही थी. उसने हौले से कहा, "बाबूजी, मंत्र पढ़िए."

स्याह हाशिए
निगरानी में

● मंटो

'क' अपने दोस्त 'ख' को अपना हम-मज़हब ज़ाहिर करके उसे मुकाम पर पहुंचाने के लिए मिलिटरी के एक दस्ते के साथ रवाना हुआ. रास्ते में 'ख' ने जिसका मज़हब जान-बूझ कर बदल दिया गया था, मिलिटरी वालों से पूछा, "क्यों जनाब! आस-पास कोई वारदात तो नहीं हुई?"

जवाब मिला, "कोई खास नहीं. . . फलां महल्ले में अलबत्ता एक कुत्ता मारा गया."

सहम कर 'ख' ने पूछा, "कोई और खबर?"

जवाब मिला, "खास नहीं. . नहर में तीन कुत्तियों की लाशें मिलीं . . ."

'क' ने 'ख' की खातिर मिलिटरी वालों से कहा, "मिलिटरी कुछ इंतज़ाम नहीं करती!"

जवाब मिला, "क्यों नहीं . . . सब काम उसी की निगरानी में होता है." ☐

"आराम से बैठा रह, वरना याद रख, गला घोंट दूंगा." शंकराचार्य चिल्लाये.

उस मुसाफिर के होंठों पर, जो गौर से बाप-बेटे की बातें सुन रहा था, एक अर्थपूर्ण मुस्कराहट नाच रही थी.

राम आगे सरक आया, आप आंखें बंद कर लीजिए. मैं मंत्र पढ़ता हूं."

शंकराचार्य ने आंखें बंद न कीं, लेकिन राम ने मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया : 'ओम् म्यांग श्यांग. . . लद...मदागा. . . प्रदोमा. . . स्वाहा !' और 'स्वाहा' के साथ ही मिस्टर शंकराचार्य की मांसल रानों पर कागज़ों का पुलिंदा आ गिरा.

उनकी नाक का बांसा ऐनक की सुनहरी पकड़ के नीचे ज़ोर से कांपा.

राम की चपटी नाक के गोल और लाल-लाल नथुने भी कांप रहे थे. ☐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो के कहानी संग्रह- चुगद- की भूमिका

न सोचने की एक दिलचस्प मिसाल!

इस किताब का पहला एडीशन बंबई में छपा था. बंटवारे के बाद इसका पूरा मसौदा 'कुतुब पब्लिशर्स लिमिटेड' के हवाले करके मैं पाकिस्तान चला आया था. यहां से मैंने अली सरदार जाफरी को, जो उन दिनों 'कुतुब' वालों के यहां मुलाजिम थे, लिखा कि किताब जल्दी छपने की सिर्फ एक ही सूरत है कि इसका दीवाचा आप खुद ही लिख लें. आप जो कुछ लिखेंगे, मुझे मंजूर होगा.

आपने जवाब में लिखा, "मैं बड़ी खुशी से तुम्हारी किताब पर दीबाचा लिखूंगा, हालांकि तुम्हारी किताब के लिए दीबाचे की और खसूसियत से मेरे दीबाचे की ज़रुरत नहीं हैं. तुम जानते हो कि मेरे और तुम्हारे अदबी नज़रिये में बहुत मतभेद हैं, लेकिन इसके बावजूद में तुम्हारी कद्र करता हूं और तुमसे बहुत सी आशाएं वाबस्ता किये हुए हूं."

▣

मैंने यह खत मिलने पर जाफरी साहब से कहा, "तो ठीक है, किताब बगैर, दीबाचे के ही चलने दीजिए." लेकिन इस दौरान में मुझे उनका दूसरा ख़त मिला जिस से मालूम हुआ कि उन्होंने एक मुख्तसर दीबाचा लिखकर किताब में शामिल भी कर लिया है. यह दीबाचा जैसा भी है, 'चुगद' के पहले एडीशन में मौजूद है. इस एडिशन में उसको मैंने हटा दिया है. इसलिए नहीं कि खुदानख्वास्ता (खुदा न करे) मुझे जाफरी साहब से कोई ज़ाती दुश्मनी पैदा हो गयी है या मैं उनसे नफरत करने लगा हूं. दरअसल पिछले दिनों बंबई के नाम-नहाद तरक्कीपसंदों ने मेरी तहरीरों (रचनाओं) के बारे में जो बेमानी शोर बरपा किया और मुझे एकदम 'अदब-बाहर' किया, उसके पेशे-नज़र मैं मुनासिब नहीं समझता कि इस हलके का एक बहुत ही सरगर्म कारकुन मेरी रजअतपसंदी (प्रतिक्रिया-वादिता) का दुमल्ला बना रहे.

इस किताब का एक अफसाना 'बाबू गोपीनाथ' जब 'अदबे-लतीफ' में छपा तो मैं बंबई में ही रह रहा था. तमाम तरक्कीपसंद लेखकों ने उसकी बहुत तारीफ की. उसको उस साल का शाहकार अफसाना करार दिया. सरदार जाफरी, इस्मत चुगताई, कृश्नचंदर ने खसूसन ... बहुत सराहा. 'हल के साये' में ... चंदर ने उसको खास जगह दी. ... यकायक खुदा जाने कैसा दौरा प... सब तरक्कीपसंद उस अफसाने की ... से मुनकर हो गये. शुरू-शुरू में दबी ... में उस पर तनकीद शुरू हुई. सर... में उसको बुरा-भला कहा गया, ... अब भारत और पाकिस्तान के ... तरक्कीपसंद ममटियों पर चढ़क... अफसाने को रजअतपसंद, अश्... गिरा हुआ, घिनौना और ग... करार दे रहे हैं.

यही सुलूक मेरे अफसाने 'मेरा ... राधा है' के साथ किया गया, हा... जब वह छपा था, तो तमाम त... पसंदों ने उछल-उछलकर उसकी ... की थी. अली सरदार ने 'चुगद' प... दीबाचा 'सुपुर्दे-तरक्कीपसंद' कि... मुझे ख़त लिखा, **"दीबाचे के ... में तुम्हारी राय मालूम करना ... हूं. मैंने बहुत खलूस और मुहब्... लिखा है. मैं तुम्हारी अफसाना-नि... पर एक तवील (लंबा) मज़मून ... का इरादा कर रहा हूं. तुम्हें अ... दकियानूसी किस्म के लोगों ने ... गालियां ही दी हैं. उनसे और ... चीज़ की आशा करना भी बेकार ...**

▣

यह सतरें पढ़कर क्या जी नहीं ... कि उनके सब शब्द—तरक्की... के मुंह पर दे मारे जायें और 'त... पसंदों' को ज़रे-लब मुसकराने का ... दिया जाये. इसी ख़त में अली ... जाफरी लिखते हैं,

"तुम्हारी कहानी 'खोल दो' ... इस दौर का शाहकार समझता हूं."

तरक्कीपसंदों के साथ या इस ... के साथ यह ट्रेजडी हुई कि यह मा... 'नकूश' लाहौर में छपी, जो पाकि... तरक्कीपसंदों के गुरू जनाब ... नदीम कासमी के संपादन में छप... वरना यह भी 'अदब-बाहर' कर दी ... और मैं तरक्कीपसंदों का मुं... देखता रह जाता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याह हाशिए

पेशबंदी

▣ मंटो

पहली वारदात नाके के होटल के पास हुई. फौरन ही वहां एक सिपाही का पहरा लगा दिया गया.

दूसरी वारदात दूसरे ही रोज शाम को स्टोर के सामने हुई. सिपाही को पहली जगह से हटाकर दूसरी वारदात के मुकाम पर नियुक्त कर दिया गया.

तीसरा केस रात के बारह बजे लांडरी के पास हुआ.

जब इंस्पेक्टर ने सिपाही को उस नयी जगह पहरा देने का हुक्म दिया, तो उस ने कुछ देर गौर करने के बाद कहा, "मुझे वहां खड़ा कीजिये जहां नयी वारदात होने वाली है!"

मेरी किताब 'स्याह हाशिए' तरक्कीपसंदों ने सिर्फ इसलिए नापसंद की कि उस पर दीवाचा 'हसन असकरी' का था, जिसका नाम वे 'स्याह फहरिस्तों' में दर्ज कर चुके थे. चुनांचे अली सरदार ने हस्बे मामूल बड़े खलूस और मुहब्बत के साथ मुझे लिखा, **"यहां लाहौर से मेरे पास एक खबर आयी है कि तुम्हारी नयी किताब पर हसन असकरी मुकदमा लिख रहे हैं. समझ में नहीं आ सका कि तुम्हारा और हसन असकरी का क्या साथ है. मैं हसन असकरी को बिल्कुल मखलस (सहृदय) नहीं समझता."**

तरक्कीपसंदों की 'खबर रसानी' का सिलसिला और इंतजाम काबिले-दाद है. यहां की खबरें 'खेलवाड़ी' के 'क्रेमलिन' में बड़ी सेहत से यों चुटकियों में पहुंच जाती हैं. अली सरदार को यहां से जो खबर मिली, बड़ी विश्वस्त और प्रमाणिक थी. चुनांचे नतीजा यह हुआ कि 'स्याह हाशिए' प्रेस की स्याही लगने से पहले ही 'रुसियाह' (कलंकित) करके रजअतपसंदी की टोकरी में फेंक दी गयी. हैरत है, जिस वक्त अली सरदार ने 'चुगद' पर दीवाचा लिखने के लिए कलम उठायी तो उन्होंने यह नहीं सोचा कि मंटो और मेरा क्या जोड़ है, जबकि उनके कहने के मुताबिक हमारे अदबी नज़रिये में बहुत मतभेद है, मगर मेरे तरक्कीपसंद दोस्त सोचा नहीं करते, यह उनके लिए शायद एक 'नकारात्मक क्रिया' है.

▣

न सोचने की एक दिलचस्प मिसाल पेश करता हूं. 'नया अदारा' का 'सवेरा,' जिस के मालिक नज़ीर चौधरी हैं, अदब की तरक्कीपसंदी तहरीक का तर्जुमा है. उसमें एक तरफ मेरा नाम 'स्याह फहरिस्तों' में शामिल कर के मुझे रजअतपसंद, मफादपरस्त, व्यक्तिवादी, लज्जतपसंद और फरारी करार दिया जाता है और दूसरी तरफ 'नया अदारा' मेरी एक किताब का इश्तहार इन शब्दों में देता है, **"सआदत हसन मंटो, सदाकत का आलंबरदार हैं. उसके हाथ में सच्चाई की दो-धारी तलवार है, जिसे वह हुकूमत और समाज के घने जंगल में इंतहाई बेरहमी से घुमाता है और बनावट और धोखे के परदों को चाक करता चला जाता है. उसे गालियां मिलती हैं और वह मुसकरा देता है. वह दुआओं और सज़ाओं की परवाह किये बगैर एक ऐसी राह पर गामज़न (चल रहा है) है, जिस पर सिर्फ वही चल सकता है."**

मैंने जब यह इश्तहार 'सवेरा' में पढ़ा था तो मैं मुस्कराने के बजाय खूब हंसा था. इश्तहार की 'इससे पढ़ने से बहुतों का भला होगा' वाली जुबान को छोड़िए और सोचिए कि यह तरक्कीपसंद और उनके तरक्कीपसंद प्रकाशक जमीर की परवाह किये बगैर क्या एक ऐसी राह पर नहीं चल रहे हैं, जिस पर सिर्फ वही चल सकते हैं. पिछले दिनों भोपाल कांफ्रेंस में इस्मत शाहिद लतीफ ने भरे मजमे में मर्दानावार अपने उन तमाम अफसानों पर लानत भेजकर उन से 'कलम-खलासी' करवा ली थी, जो तरक्कीपसंदों के धर्मकांटे पर पूरे नहीं उतरते थे.

यह तरक्कीपसंद प्रकाशक क्यों इस्मत की-सी दयानतदारी से काम नहीं लेते! उन्हें चाहिए कि स्याह फहरिस्तों रजअतपसंदों की तमाम किताबें नज़रे-आतिश (आग की भेंट) कर दें. अगर वे ऐसा करें तो मैं उन के हाथ चूम लूं.

▣

आखिर में मुझे यह कहना है कि—तरक्कीपसंदी से मुझे कोई कुद नहीं, लेकिन नामनहाद तरक्कीपसंदों की उलटी-सीधी छलांगें, खलती हैं. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोल दो

अमृतसर से एक खास गाड़ी दोपहर दो बजे रवाना होकर आठ घंटों तक मारकाट, चीखों और कराहटों के दौर से गुजरती रफ्ता-रफ्ता मुगलपुरा स्टेशन पर जा लगी. रास्ते में सैकड़ों आदमी मारे गये, हजारों जख्मी हुए और कई जान बचाने की कोशिश में इधर-उधर भटक गये. फिर भी जो बच गये थे, खुदा का शुकर मनाते हुए रात को जहां जगह मिली टिक गये.

सुबह दस बजे, कैंप की ठंडी ज़मीन पर सिराजुद्दीन ने जब आंखें खोलीं और अपने चारों तरफ मर्दों, औरतों और बच्चों का घुमड़ता समंदर देखा, तो उसकी सोचने-समझने की पहले से ही काफी कमज़ोर पड़ चुकी ताकतें और भी कुंद हो गयीं. वह देर तक गंदलाये आसमान को टकटकी बांधे देखता रहा. कैंप में हर तरफ शोर मचा हुआ था, मगर बूढ़ा सिराजुद्दीन मानो बहरा हो चुका था. उसे कुछ सुनायी नहीं दे रहा था. कोई उसे देखता तो यही अंदाज करता कि वह किसी गहरी चिंता में डूबा है . . . मगर ऐसा नहीं था. उसके तो होशो-हवास ही गुम थे. उसका सारा वजूद मानो अधर में लटका हुआ था. बिना किसी इरादे के गंदलाये आसमान की तरफ देखते-देखते सिराजुद्दीन की निगाहें सूरज से जा टकरायीं. चमकीली धूप का लिश्कारा उसके रेशे-रेशे में उतर गया और वह जाग उठा. उसके ज़ेहन में ऊपर-तले परस्पर गडमगड होती कई खौफनाक तस्वीरें खलबली मचा गयीं—लूट, आग, भागमभाग, स्टेशन, गोलियां, रात और . . सकीना!

सिराजुद्दीन सहसा उठ खड़ा हुआ और बावलों की तरह चारों तरफ बेतरतीब अथाह भीड़ को खंगालने लगा. तीन घंटे तक वह . . . 'सकीना-सकीना' पुकारता कैंप की खाक छानता रहा मगर उसे अपनी जवान इकलौती बेटी का कहीं कोई निशान तक नहीं मिला. चारों तरफ अफरा-तफरी मची हुई थी. कोई अपना बच्चा ढूंढ रहा था, कोई मां, कोई बीवी और कोई बाप. सिराजुद्दीन थक-हारकर एक किनारे बैठ गया और दिमाग पर ज़ोर देकर सोचने लगा कि सकीना उससे कब और कहां बिछुड़ गयी थी . . . . लेकिन सोचते-सोचते उसका दिमाग सकीना की मां की लाश पर अटक गया, जिसकी सारी अंतड़ियां चमड़ी खोलकर बाहर निकल आयी थीं. वह मर चुकी थी. उसने सिराजुद्दीन की आंखों के सामने दम तोड़ा था. पर सकीना कहां थी, जिसके बारे में उसकी मां ने मरते हुए कहा था, "मेरी फिक्र छोड़ो और सकीना को लेकर जल्दी यहां से भाग जाओ!"

सकीना उसके साथ ही थी. दोनों मुंह उठाये नंगे पांव भागने लगे थे. भगदड़ में सकीना का दुपट्टा गिर पड़ा था. उसे उठाने के लिए वह ठिठका था तो सकीना ने चिल्लाकर कहा "अब्बाजी छोड़िये!" फिर भी ... दुपट्टा उठा ही लिया था. यह ... सोचते उसने अपने कोट की तनिक ... हुई जेब की तरफ देखा. फिर ... हाथ डालकर एक कपड़ा नि... यह सकीना का वही दुपट्टा था... सकीना कहां रह गयी थी?

सिराजुद्दीन ने अपने थके हुए ... दिमाग पर बहुत ज़ोर डाला मगर ... तय नहीं कर पाया. वह फिर ... लगा. . .क्या वह सकीना को अपने ... स्टेशन तक ले आया था?. . .क्या ... उसके साथ ही गाड़ी में सवार थी?... रास्ते में जब गाड़ी रोक ली गयी थी ... दंगई अंदर घुस आये थे. . . क्या ... बेहोश हो गया था और तब वे सकीना ... उठा ले गये. . . ? सिराजुद्दीन के दि... में सिर्फ सवाल ही सवाल कुलबुला... थे. . .जवाब कोई नहीं था.

▣

बेशक उसको हमदर्दी की जरूरत ... मगर चारों तरफ जितने भी लोग ... हुए थे उन सबको भी हमदर्दी की ज़... थी. सिराजुद्दीन ने रोना चाहा ... आंखों ने इंकार कर दिया. उसके आं... जाने कहां, कौन सोख ले गया ...

छः दिन बाद उसके होशो-ह... कमोबेश दुरुस्त हुए तो वह उन लो... मिला, जो उसकी मदद कर सक...

आठ नौजवान थे. उनके पास ... भी थी, और बंदूकें भी. सिराजुद्दी... उनको लाख-लाख दुआएं दी और ... का हुलिया बताते हुए कहा, "गोरा रं... बहुत ही खूबसूरत. . .मुझ पर ... अपनी मां पर थी. उम्र सत्रह बरस ... बड़ी-बड़ी आंखें, काले बाल, ... गाल पर मोटा-सा तिल. . . ! ... इकलौती लड़की है. ढूंढ लाओ. . . तुम्हें नेकी बख्शेगा!"

उन नेक नौजवानों ने सिरा... को यकीन दिलाया कि अगर उसकी ... जिंदा हुई तो कुछ ही दिनों में वह ... पास होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

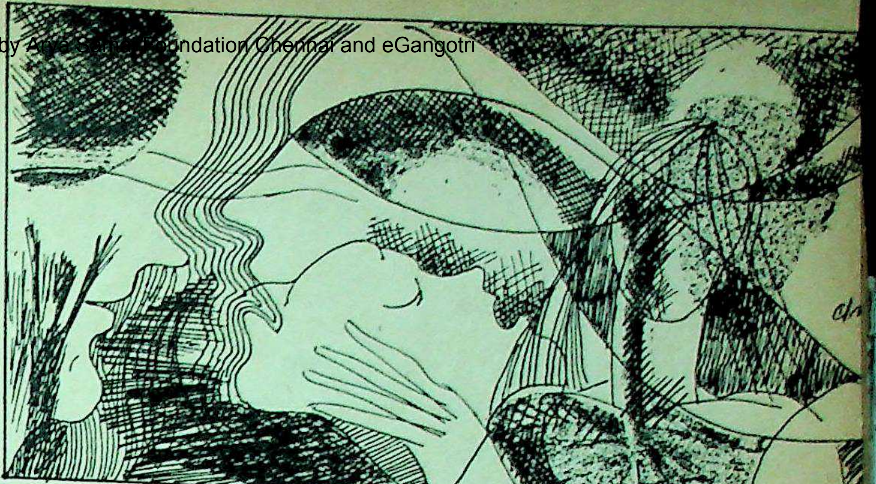
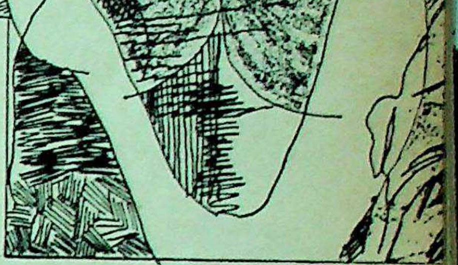

सभी नौजवानों ने जी तोड़ कोशिश की. वे जान हथेली पर रखकर अमृतसर भी गये. कई औरतों, मर्दों और बच्चों को मौत के मुंह से निकाल-निकालकर महफूज ठिकानों पर पहुंचाया. दस दिन बीत गये मगर वे नाकाम रहे. सकीना उन्हें कहीं न मिली!

▣

एक दिन वे सकीना की तलाश में फिर से अपनी लारी पर अमृतसर जा रहे थे कि छहरटा के पास सड़क पर उन्हें एक लड़की दिखाई दी. लारी की आवाज़ सुनकर वह बदहवास-सी हुई बेतहाशा भागने लगी.

क्या माजरा है! सोचते हुए नौजवान भी लारी रोककर उसके पीछे भागने लगे. अब लड़की आगे-आगे थी और नौजवान पीछे-पीछे. लड़की भयभीत हिरनी की तरह भाग रही थी. मगर नौजवानों के हौसले बुलंद थे. उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और आखिर एक खेत में लड़की को पकड़ लिया. देखा तो बहुत खूबसूरत थी. दाहिने गाल पर मोटा-सा तिल था.

एक नौजवान ने उससे कहा, "घबराओ नहीं, क्या तुम्हारा नाम सकीना है?" लड़की का रंग और भी पीला पड़ गया. उसने कोई जवाब नहीं दिया. लेकिन जब सारे लड़कों ने उसे दम-दिलासा दिया तो उसकी बदहवासी दूर हो गयी. उसने गर्दन झुकाकर मान लिया कि उसका नाम सकीना है और वह सिराजुद्दीन की इकलौती बेटी है.

नौजवानों ने उसे दिलासा दिया. हर तरह से उसका मन बहलाया. उसे खाना खिलाया, दूध पिलाया और लारी में बिठा लिया. एक नौजवान ने अपना कोट उतारकर उसे दे दिया क्योंकि उसने दुपट्टा भी नहीं ओढ़ा हुआ था और खुली छाती लिये रहने-चलने की आदत न होने के कारण मारे संकोच के बेहद उलझन महसूस कर रही थी और बार-बार बाहों से अपने सीने को ढांपने की नाकामयाब कोशिश कर रही थी.

दिन गुजर गये. सिराजुद्दीन को सकीना की कोई खोज-खबर नहीं मिली वह दिन भर कई कैंपों और दफ्तरों के चक्कर काटता रहा मगर कहीं से भी सकीना का कोई ठौर नहीं पा सका. रात को भी वह बहुत देर तक उन जांबाज नौजवानों की कामयाबी के लिए दुआएं मांगता रहता जिन्होंने उसे भरोसा दिलाया था कि अगर सकीना जिंदा हुई तो कुछ दिनों में वह उसके पास होगी.

एक दिन सिराजुद्दीन ने कैंप में उन नौजवान कार्यकर्ताओं को देखा. वे अपनी लारी में बैठे थे. सिराजुद्दीन में जाने इतना दम कहां से आ गया कि वह भागा-भागा उनके पास जा पहुंचा. उनकी लारी चलने ही वाली थी कि उसने पूछा, "बेटा, मेरी सकीना का कुछ पता चला?"

सबने एक जबान होकर कहा, "चल जायेगा. . .जल्दी चल जायेगा!" और लारी आगे बढ़ा दी. सिराजुद्दीन ने एक बार फिर उनकी कामयाबी की दुआ मांगी और उसके मन को कुछ तसल्ली भी मिली.

▣

कुछ दिन बाद कैंप में डूबते सूरज को ताकता सिराजुद्दीन जहां बैठा था, उसके नजदीक कुछ शोर-शराबा सा हुआ. उसने देखा चार आदमी किसी को उठा कर ला रहे थे. पूछताछ करने पर मालूम पड़ा कि एक लड़की रेल-पटरी के पास बेहोश पड़ी थी. लोग उसे उठाकर लाये हैं. सिराजुद्दीन को सकीना याद आ गयी. वह यंत्र-चालित-सा उनके पीछे हो लिया.

लोग उस लड़की को अस्पताल वालों के सुपुर्द करके चले गये तो भी वह कुछ देर अपने साथ हुए भयावह हादसों में बिखरता-टूटता अस्पताल के बाहर गड़े हुए लकड़ी के खंबे से सटकर खड़ा रहा और अनजानी-सी कशिश से हौले-हौले अंदर दाखिल हो गया.

वहां कमरे में कोई भी नहीं था. एक स्ट्रेचर था, जिस पर एक लाश-सी पड़ी थी. सिराजुद्दीन छोटे-छोटे कदम उठाता हुआ उसकी तरफ बढ़ा तो यकबयक कमरे में रोशनी हो गयी. सिराजुद्दीन ने लाश के पीले जर्द चेहरे पर चमकता हुआ तिल देखा और चिल्लाया, "सकीना ऽ ऽ!"

डाक्टर ने, जिसने कमरे में रोशनी की थी, सिराजुद्दीन से पूछा, "क्या है?"

सिराजुद्दीन के हलक से सिर्फ इतना निकल सका, "जी-जी. .मैं इसका. . बाप हूं. .बाप!"

डाक्टर ने स्ट्रेचर पर पड़ी हुई लाश की तरफ देखा. उसकी नब्ज टटोली और सिराजुद्दीन से कहा, "ज़रा खिड़की खोल दो. . .!"

सकीना के मुर्दा जिस्म में हरकत हुई. . .उसने बेजान हाथों से इज़ारबंद खोला और सलवार नीचे सरका दी!

बूढ़ा सिराजुद्दीन खुशी से चिल्लाया, "जिंदा है. . .मेरी बेटी जिंदा है!"

डाक्टर की कंपकंपी छूट गयी. वह सिर से पैर तक पसीने से तर-बतर हो गया. □

● रूपांतर : रमेश बतरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मंटो की कहानियां : तीन

शरीफन

जब कासिम ने अपने घर का दरवाज़ा खोला, तो उसे महसूस हो रही थी सिर्फ एक गोली की जलन, जो उसकी दाहिनी पिंडली में गड़ गयी थी, लेकिन अंदर दाखिल होकर जब उसने अपनी बीवी की लाश देखी तो उसकी आंखों में खून उतर आया. वह चाहता था कि लकड़ियां फाड़ने वाले गंडासे को उठाकर दीवानावार निकल जाये और कत्लो-गारतगरी का बाज़ार गर्म कर दे कि अचानक उसे अपनी लड़की शरीफन का ख्याल आया.

"शरीफन! शरीफन!!" उसने बुलंद आवाज़ में पुकारना शुरू किया.

सामने दालान के दोनों दरवाज़े बंद थे. कासिम ने सोचा, शायद डर के मारे वह अंदर छुप गयी होगी, चुनांचे वह उस तरफ बढ़ा और दरवाजे के साथ मुंह लगाकर कहा, "शरीफन! शरीफन!.... मैं हूं तुम्हारा बाप!" मगर अंदर से कोई जवाब न आया. कासिम ने दोनों हाथों से किवाड़ को धक्का दिया. पट खुले और वह औंधे मुंह दालान में गिर पड़ा. संभलकर जब उसने उठना चाहा, तो उसे महसूस हुआ कि वह किसी...! कासिम चीख कर उठ बैठा.

एक गज़ के फासले पर एक जवान लड़की की लाश पड़ी थी...नंगी.... बिल्कुल नंगी. एकदम कासिम का सारा वजूद हिल गया. उसकी गहराइयों से एक गगनभेदी चीख उठी, लेकिन उसके होंठ इस कदर ज़ोर से भिंचे हुए थे कि बाहर न निकल सकी. उसकी आंखें अपने आप बंद हो गयी थीं. फिर भी ... दोनों हाथों से अपना चेहरा ढांप लिया. मुरदा-सी आवाज़ ... मुंह से निकली, "शरीफन!" और उसने आंखें बंद किये ... में इधर-उधर हाथ मारकर कुछ कपड़े उठाये और उन्हें ... की लाश पर गिराकर, यह देखे बगैर ही बाहर निक... कि वह उससे कुछ दूर गिरे थे.

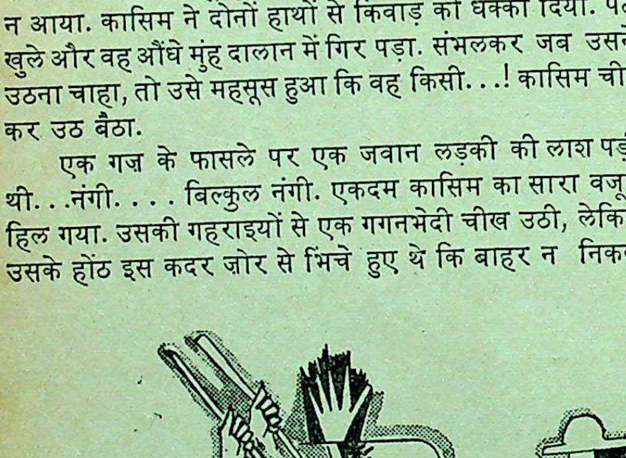

■

बाहर निकलकर उसने अपनी बीवी की लाश न ... बहुत मुमकिन है, उसे नज़र ही न आयी हो. इसलिए कि ... आंखें शरीफन की नंगी लाश से भरी हुई थीं. उसने कोने ... हुआ लकड़ियां फाड़ने वाला गंडासा उठाया और ... बाहर निकल गया.

कासिम की दाहिनी पिंडली में गोली गड़ी हुई थी ... अहसास घर के अंदर दाखिल होते ही उसके दिलो-दि... लोप हो गया था. उसकी वफादार प्यारी बीवी हलाक हो ... थी. इसका सदमा भी उसके ज़ेहन के किसी कोने में मौ... था. बार-बार उसकी आंखों के सामने एक ही तस्वीर आ... शरीफन की... नंगी शरीफन की... और वह नेज़े की ... बनकर उसकी आंखों को छेदती हुई उसकी रूह में भी ... डाल देती.

गंडासा लिये कासिम सुनसान बाज़ारों में उबल... लावे की तरह बहता चला जा रहा था. चौक के पास ... मुठभेड़ एक सिख से हुई. बड़ा कड़ियल जवान था, लेकिन ... ने कुछ ऐसे बेतुकेपन से हमला किया और ऐसा भरपूर हाथ ... कि वह तेज़ तूफान में उखड़े हुए दरख्त की तरह ज़मीन ... रहा.

कासिम की रगों में बहता खून और ज़्यादा गर्म हो ... और बजने लगा तड़.... तड़.... तड़....जैसे जो... हुए तेल पर पानी का हल्का-सा छींटा पड़ जाये.

दूर सड़क के उस पार उसे चंद आदमी नज़र आये. ... तरह वह उनकी तरफ बढ़ा. उसे देखकर उन लोगों ने ... महादेव' के नारे लगाये. कासिम ने जवाब में अपना नारा ... के बजाय उन्हें मां-बहन की मोटी-मोटी गालियां दीं और ... ताने उनमें घुस गया.

चंद मिनटों के अंदर ही तीन लाशें सड़क पर तड़प ... दूसरे भाग गये, लेकिन कासिम का गंडासा देर तक ... चलता रहा. असल में उसकी आंखें बंद थीं. गंडासा घुमाते ... वह एक लाश के साथ टकराया और गिर पड़ा. उसने ... कि शायद उसे गिरा लिया गया है, चुनांचे वह गालि... चिल्लाने लगा, "मार डालो मुझे! मार डालो...!

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

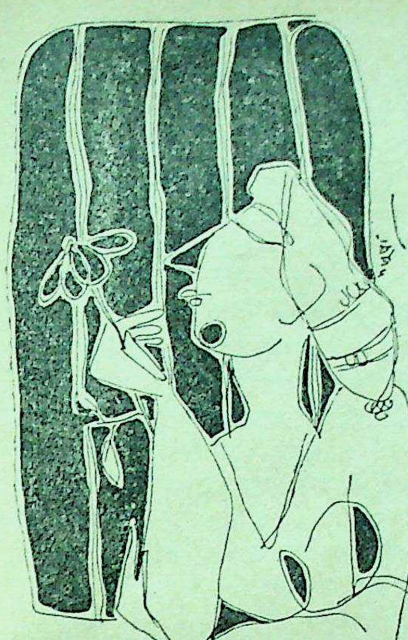

लेकिन जब कोई हाथ उसे गरदन पर महसूस न हुआ और कोई चोट उसके बदन पर न पड़ी तो उसने अपनी आंखें खोलीं और देखा कि सड़क पर तीन लाशों और उसके सिवा कोई भी नहीं था.

एक लम्हे के लिए कासिम को मायूसी हुई, क्योंकि शायद वह मर जाना चाहता था, लेकिन एकदम शरीफन. . . नंगी शरीफन की तस्वीर उसकी आंखों में पिघले हुए सीसे की तरह उतर गयी और उसके सारे वजूद को बारूद का जलता हुआ पलीता बना गयी. वह फौरन उठा. हाथ में गंडासा लिया और फिर खौलते हुए लावे की तरह सड़क पर बहने लगा.

जितने बाजार कासिम ने तय किये, सब खाली थे. एक गली में वह दाखिल हुआ, लेकिन उसमें सब मुसलमान थे. उसको बहुत कोफ्त हुई. चुनांचे उसने अपने लावे का रुख दूसरी तरफ कर दिया. एक बाज़ार में पहुंचकर उसने अपना गंडासा ऊंचा हवा में लहराया और मां-बहन की गालियां उगलनी शुरू कीं.

लेकिन एकदम उसे बहुत ही तकलीफदेह अहसास हुआ कि अब तक वह सिर्फ मां-बहन की गालियां ही देता रहा था, चुनांचे उसने फौरन बेटी की गालियां देनी शुरू की और ऐसी जितनी गालियां उसे याद थीं, सब की सब एक ही सांस में बाहर उलट दीं. फिर भी उसकी तसल्ली न हुई. झुंझलाकर वह एक मकान की तरफ बढ़ा, जिसके दरवाजे के ऊपर हिंदी में कुछ लिखा था.

दरवाज़ा अंदर से बंद था. कासिम ने दीवानावार गंडासा चलाना शुरू किया. थोड़ी ही देर में दोनों किवाड़ रेज़ा-रेज़ा हो गये. कासिम अंदर दाखिल हुआ.

छोटा-सा घर था. कासिम ने अपने सूखे हुए हलक पर ज़ोर देकर फिर गालियां देना शुरू की, "बाहर निकलो . . . . बाहर !"

सामने दालान के दरवाजे पर चरचराहट पैदा हुई. कासिम अपने सूखे हुए हलक पर ज़ोर देकर गालियां देता रहा. दरवाज़ा खुला. एक लड़की नमूदार हुई.

कासिम के होंठ भिंच गये. उसने पूछा, "कौन हो तुम?"

लड़की ने खुश्क होंठों पर ज़बान फेरी और जवाब दिया, "हिंदू!"

कासिम तनकर खड़ा हो गया. शोलाबार (अग्नेय) आंखों से उसने लड़की की तरफ देखा, जिसकी उम्र चौदह या पंद्रह बरस की थी और हाथ से गंडासा गिरा दिया. फिर वह उकाब की तरह झपटा और उस लड़की को ढकेलकर अंदर दालान में ले गया. दोनों हाथों से उसने दीवानावार कपड़े नोंचने शुरू किये. धज्जियां और चंदियां यों उड़ने लगीं जैसे कोई रुई धुनक रहा हो.

लगभग आधा घंटा कासिम अपना इंतकाम लेने में मसरूफ रहा. लड़की ने कोई विरोध न किया. इसलिए कि वह फ़र्श पर गिरते ही बेहोश हो गयी थी.

▣

जब कासिम ने आंखें खोलीं तो उसके दोनों हाथ लड़की की गरदन में धंसे हुए थे. एक झटके के साथ उन्हें अलग करके वह उठा. पसीने में गर्क उसने एक नज़र उस लड़की की तरफ देखा, ताकि उसकी तसल्ली हो सके.

एक गज़ के फासले पर उस जवान लड़की की लाश पड़ी थी. नंगी. . . . बिलकुल नंगी. . . कासिम की आंखें एकदम बंद हो गयीं. दोनों हाथों से उसने अपना चेहरा ढांप लिया. बदन पर गर्म-गर्म पसीना बर्फ हो गया और उसकी रगों में खौलता हुआ लावा पत्थर की तरह मुंजमिद हो गया.

थोड़ी देर के लिए एक आदमी तलवार से मसल्लह (युक्त) मकान के अंदर दाखिल हुआ. उसने देखा कि दालान में कोई शख़्स बंद किये लरज़ते हाथों से फर्श पर पड़ी हुई चीज़ पर कंबल डाल रहा है. उसने गरजकर उससे पूछा, "कौन हो तुम?"

कासिम चौंका. . . . उसकी आंखें खुल गयीं, मगर उसे कुछ नज़र न आया. सशस्त्र आदमी चिल्लाया, "कासिम!"

कासिम एक बार फिर चौंका. उसने अपने से कुछ दूर खड़े आदमी को पहचानने की कोशिश की, मगर उसकी आंखों ने उसकी मदद न की.

सशस्त्र आदमी ने घबराये हुए लहजे में पूछा, "क्या कर रहे हो तुम यहां?"

कासिम ने लरज़ते हुए हाथ से फर्श पर पड़े हुए कंबल की तरफ इशारा किया और खोखली आवाज़ में सिर्फ इतना कहा, "शरीफन. . . . . !"

जल्दी से आगे बढ़कर सशस्त्र आदमी ने कंबल हटाया. नंगी लाश देखकर पहले वह कांपा, फिर एकदम उसने अपनी आंखें बंद कर लीं. तलवार उसके हाथ से गिर पड़ी. आंखों पर हाथ रखकर वह 'बिमला-बिमला' कहता लड़खड़ाते हुए कदमों से बाहर निकल गया. □

● **अनुवाद : सुरजीत**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो ने मुझसे मुखातिब होकर कहा—

तुम साहित्य के विदेश मंत्री और हम गृह मंत्री हैं!

▣ अहमद नदीम कासमी

मेरे और मंटो मरहूम के संबंधों की कहानी अठारह बरस पर फैली हुई है और इस दौरान में मंटो ने अगर मुझे एक सतर का भी खत लिखा, तो मैंने उसे सुरक्षित कर लिया है. इसकी वजह ज़ाहिर है, मंटो की शख़्सियत से भी प्यार था और उसके फन से भी श्रद्धा थी और एक अदीब के खतूत में उसकी शख़्सियत और उसके फन की झलकियां कुछ इस तरह एकाकार होकर रह जाती हैं कि एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता.

1937 में अख्तर शीरानी मरहूम के माध्यम से हमारा परिचय हुआ और चार बरस के पत्र-व्यवहार ने हमारे दरम्यान सहृदयता का एक ऐसा रिश्ता कायम कर दिया, जिसके बारे में मंटो को 1940 तक यह डर लगा रहा कि अगर कहीं हम दोनों की मुलाकात हो गयी तो यह रिश्ता टूट जायेगा. मेरी समझ में यह बात नहीं आती थी कि मंटो इस अंदाज में क्यों सोचता है! शायद मेरे खतूत से उसने ज़िंदगी और अख्लाक के बारे में मेरे दृष्टिकोण का अंदाज़ा लगा लिया हो और उसे महसूस हुआ हो कि हम एक ही राह पर तो क्या, समानांतर राहों पर भी नहीं चल सकेंगे. यही वजह है कि जब 1940 में मंटो बंबई से दिल्ली आया और मुझे मुलतान से दिल्ली बुला भेजा तो मुझे उसके वह सभी खतूत याद आ गये, जिसमें उसने हमारी मुलाकात की खतरनाकी की आशंका ज़ाहिर की थी. मैं दिल्ली के रेलवे-स्टेशन से उतरा और तांगेवाले को अपनी 'मंज़िल' का पता बताया तो वह मुस्कराने लगा. मैं समझा, यह शख़्स मेरी बड़ी-सी घेरदार शलवार और मेरे उस कोट के नज़ारे से आनंदित हो रहा है, जिसे यद्यपि पतलून पर पहनने के लिए तैयार किया गया है, लेकिन जिसे मैंने शलवार पर लटका रखा है. उन दिनों मेरी सेहत पहलवानों जैसी थी और कोचवान 'मखनचू' किस्म का आदमी था. इसलिए मैंने सोचा, संभव है, इस जिस्मानी हुलिये ने उसके फेफड़ों में हड़कंप पैदा किया हो, मगर कोचवान की मुस्कराहट का राज उस वक्त खुला, जब हम अपनी 'मंज़िल' के करीब पहुंचे.

मैं दिल्ली में पहली बार आया था. इसलिए कोचवान की दया पर था. पहले तो मुझे कुछ ऐसा महसूस हुआ जैसे यह कोचवान कोई गुंडा है और मेरे अजनबी तेवरों की शह पाकर इस बाज़ार में आ निकला है, जहां हर तरफ हारमोनियम बज रहे हैं. बिखरे बालों और लिपस्टिक से थुपे हुए होंठों ... छा रही है. औरतें खिड़कियों और दरीचों में यों बैठी ... नंबरदार अपनी चौपाल पर और कबड्डी के खिलाड़ी ... दोस्तों के कंधों पर बैठे हैं. यहां से वहां तक खुले जबड़ों ... मांदे कहकहे और पान की पीकें और मुरझाये हुए फूल ... रहे हैं और कोचवान कह रहा है—'क्यों मियां! ... दिल्ली में पहली बार आये हैं? यह चावड़ी है. आपने ... बाज़ार जाने को कहा था न! कहां उतरियेगा?'

मंटो ने मुझे चावड़ी बाजार ही का पता लिखा था ... हैरान था कि क्या पंडित कृपाराम को रिसाला 'मो... दफ्तर के लिए सारी दिल्ली में चावड़ी से बेहतर कोई ... मिल सकी? लेकिन अब लोगों से उस दफ्तर का पता ... झिझक महसूस हो रही थी. मैं सोचता था कि अगर किसी ने ... कह दिया कि मियां, यहां रिसालों के दफ्तर कहां. यहां ... दफ्तर खुले हैं, तो मैं सिवाय झेंप जाने के और क्या कर ... मैंने सोचा, खारी बावली में रिसाला 'साकी' का दफ्तर ... चलते हैं. मगर अचानक 'मोवीज़' का बोर्ड नज़र आ ... मैं तांगे से उतरकर अंदर चला गया.

मंटो से मेरी पहली मुलाकात

मैंने मंटो को पहचान लिया. वह रेलवे टाइम-टेबल ... उस गाड़ी का वक्त देख रहा था, जिससे उतरकर मैं ... में पहुंच चुका था. मंटो से यह मेरी पहली मुलाकात ... जिस्मानी सेहत यूंही-सी थी, मगर आंखों में चमक और ... सुनहरापन था. शाम को हम नयी दिल्ली के एक अ... सिनेमा-हाल की चौथी मंजिल पर लिफ्ट से पहुंच ... मैंने एक मरहटा अदीब खांडेकर की फिल्मी कहानी ... के संवाद और गीत लिखना शुरू किया और मंटो ने ... और गीतों को टाइप करने का काम संभाल लिया. दिन ... यह सृजनात्मक और तकनीकी काम करते और शाम ... बाज़ार में चले जाते. मंटो शराब पीता और मैं पो... खाता. दो-तीन दिन के बाद उसने कहा, "माफ करना ... नदीम कासमी! तुम मेरी शराब के मुकाबले में ... ये कतरनें खाते हुए भले नहीं लग रहे." और दूसरे ... 'तनहाई' को खत्म करने के लिए शाहिद लतीफ को, जो ... अलीगढ़ यूनीवर्सिटी में एम. ए. के छात्र थे, दिल्ली ... और हम सिनेमा-हाल की चौथी मंजिल पर दस ... तक ठहरे.

मैं इस दौरान सोचता रहा कि आखिर मंटो मेरे ... इतनी मेहनत क्यों कर रहा है? कहानी खांडेकर की है ... और गीतों का मुआवज़ा मुझे मिलेगा, मगर मंटो क्यों ... बैठा दर्जनों सफे टाइप कर डालता है, बल्कि अक्सर ... तकनीक के सिलसिले में मेरी रहनुमाई करता है और ... लंबे सीन तो उसने खुद ही लिखकर टाइप कर डाले ... ठीक है कि वह मेरी मदद करना चाहता है, क्योंकि ... है कि मुझे सब-इंस्पेक्टर आबकारी की हैसियत में ... बहत्तर रुपये माहवार मिलते हैं, मगर मैं भी तो ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है कि मंटो बंबई के साप्ताहिक 'मसव्वर' के संपादन का पारिश्रमिक सिर्फ पचास रुपए माहवार की सूरत में हासिल करता है. फिर वह कौन-सी भावना है, जिसने मंटो को बंबई से दिल्ली लाकर उसे मेरी खातिर अंधाधुंध मुशक्कत पर मजबूर कर दिया है. जाहिर है कि यह भावना उस निस्वार्थ सहृदयता की थी जो मंटो और मेरे स्वभाव में एक-सी थी. एक दूसरे से प्यार और एक दूसरे का आदर करने के सहारे हम अपनी-अपनी जिंदगी की अधिकांश सरगर्मियों में एक दूसरे का साथ न दे सके. स्वभावों की इस स्पष्ट भिन्नता के बावजूद हमारे दोस्ताना संबंध हमेशा कायम रहे. हमें एक दूसरे से शिकायत जरूर थीं और इन शिकायतों को यथासंभव प्रकट भी करते रहे, मगर हम जब भी एक दूसरे से मिले, मैल धुल गया और हम आज से सत्रह-अठारह बरस पहले के मंटो और नदीम बन गये.

कोट के कॉलर में खुदा का फूल!

मंटो से मेरी दूसरी मुलाकात उससे अगले साल हुई. वह बंबई को छोड़कर स्थायी रूप में दिल्ली आ गया था. यहां वह आल-इंडिया रेडियो में मुलाजिम था और निक्सन रोड पर किसी बिल्डिंग के एक फ्लैट में रहता था. उन दिनों दिल्ली रेडियो स्टेशन में उर्दू के बहुत-से अदीब और शायर जमा थे. मौलाना चिराग हसन हसरत शायद न्यूज सेक्शन में थे. उनके अलावा कृश्नचंदर, मीराजी, उपेंद्रनाथ अश्क और न. म. राशद भी मौजूद थे. उर्दू शायरी के नयी प्रवृत्तियों के नुमाइंदा शायरों को रेडियो वालों ने आमंत्रित किया था. तासीर मरहूम इस महफिल के सदर थे. इस महफिल में शामिल होने वाले फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, हफ़ीज़ जालंधरी, राशद, मीराजी, मजाज़, तसदीक हुसैन, खालिद, सीमाब मरहूम, रविश सद्दीकी और सागर निज़ामी के नामों के अलावा अपना नाम याद रह गया है. मंटो का फन उन दिनों बेहद उत्कर्ष पर था. सेहत भी बुरी नहीं थी. तबीयत की शोखी और बेबाकी तो हमेशा से थी, लेकिन उन दिनों उस शख्सियत के यह पहलू भी अपनी चरम सीमा पर थे. एक दिन अचानक बोला, "आओ यार ! ज़रा हफ़ीज़ साहब को छेड़ें." और वह भरी महफिल में हफ़ीज़ साहब के पास गया और बहुत अदब से बोला, "शाहाना-ए-इस्लाम के एक शेर के सिलसिले में आपसे पूछना है. बहुत गहरा शेर है. आपने फलसफे का कोई नुक्ता नज़्म फरमाया है. मैंने हज़ार सिर मारा. पढ़े-लिखे दोस्तों से भी मशवरा लिया, मगर वे मुझे आश्वस्त नहीं कर सके. आपका वह शेर यह है—

यह लड़का जो कि बैठा है, वह लड़की जो कि बैठी है,
यह पैगंबर का बेटा है, वह पैगंबर की बेटी है.

सारी महफिल कहकहों से गूंज उठी और हफ़ीज़ साहब भी मुस्कराकर टाल गये.

फिर एक दिन मंटो ने मौलाना चिराग हसन हसरत को छेड़ने का प्रोग्राम बनाया. मौलाना शायद मीराजी के कमरे में थे. कृश्न, अश्क और मैं मंटो के साथ उनके पास पहुंचे और मंटो ने बैठते ही अल्लामा (महाकवि) इकबाल पर बरसना शुरू कर दिया, "बांग-दरा के पहले हिस्से से आगे के इकबाल को मैं शायर के बजाय मौलाना समझता हूं. आखिर यह भी कोई शायरी है कि फलसफे के नजरियात को बगैर किसी मकसद के नज्म करते जाओ और हर नजरिये के कोट के कॉलर में खुदा का फूल सजाते फिरो." पहले तो मौलाना हसरत साहब ने इकबाल की हिमायत में चंद-बहुत ठोस बातें कीं, मगर उन्हें मंटो के तेवरों से उसकी नीयत का जल्दी ही पता चल गया और उन्होंने ऐसी-ऐसी चुटकियां लेनी शुरू कीं कि मंटो की तजवीज के मुताबिक हम वहां से सचमुच भाग आये.

मंटो भी डरता था!

मैं चंद रोज मंटो ही के यहां रुका. मंटो के घर में मुझे सलीका, सफाई और सादगी का वह मियार नजर आया, जो बड़े-बड़े घरों में भी महज़ कोमल रुचि के कमी के कारण गायब होता है. मंटो के लिखने वाले कमरे में सफेद चांदनी का फर्श बिछा रहता. फुट-डेढ़ फुट ऊंचे डेस्क में मंटो के मसौदे बंद होते. उतनी ही ऊंची तिपाई पर मंटो का टाइप राइटर रखा रहता. किताबें बहुत सलीके से एक लंबे सैल्फ में सजी रहतीं और गोरा-चिट्टा मंटो सफेद लिबास पहने वहां बैठा लिखता और टाइप करता नज़र आता. वह अपनी शराब की बोतल को भी उसी डेस्क के नीचे 'छुपाता' था. इसलिए कि उन दिनों मंटो की बड़ी बहन उसके यहां ठहरी हुई थीं और मंटो कहता था, "मैं अपनी बहन से डरता हूं और फिर आजकल के बच्चे इतने तेज़ हैं कि उन्हें हजार बार समझाया जाये कि इस बोतल में तेल भरा है,

---

ज़िंदगी के मानी : एक लंबी मौत !

परेशान हालत में अहमद नदीम कासमी को मई, 1938 को बंबई से लिखे गये मंटो के एक खत की प्रतिलिपि

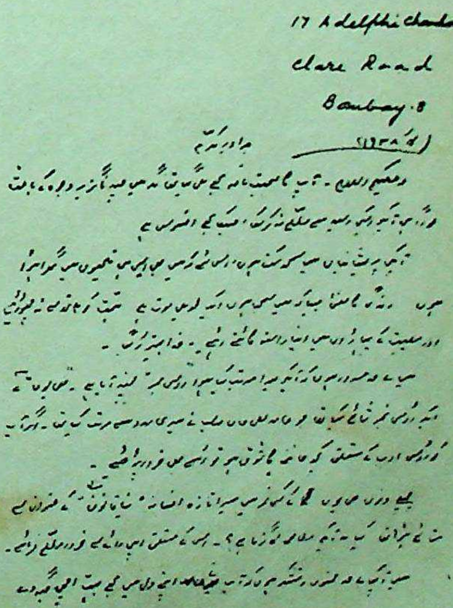
17 Adelphi Chambers
Clare Road
Bombay 8

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह फटी-फटी आंखों से उसे घूरे ही जायेंगे. सो, उनसे भी छुपाना पड़ता है. रही सफिया, तो जब उसने देखा है कि मैं उसे छोड़ नहीं सकता तो उसने एक पैमाना मुकर्रर कर दिया है और उस पैमाने से मेरा जी नहीं भरता. लिहाजा, यह फ्राड करना पड़ता है."

मंटो के मकान की इस निहायत खूबसूरत सादगी से मुझे 1948 की एक और घटना याद आ गयी है. मंटो मेरे पास आया. हम ड्राइंग रूम में बैठे चंद मिनट तक बातें करते रहे कि अचानक उसने चौंककर कहा, "मालूम होता है, इस कमरे में ताज़ा-ताज़ा सफेदी हुई है." मैंने बताया कि सफेदी को बस एक हफ्ता ही गुज़रा होगा. वह बोला, "तुम शायर होकर ऐसी भोंडी सफेदी को बर्दाश्त किये बैठे हो." मैंने उसे सूचना दी कि सफेदी खुद मैंने की है. इसलिए न बर्दाश्त करने का सवाल ही नहीं पैदा होता. वह कुछ देर खामोश रहा. फिर मुझे अपने घर ले गया और अपने ड्राइंग रूम में दाखिल होकर बोला, "सफेदी इसे कहते हैं!"

हमारी आपसी लड़ाई की शुरुआत!

तीसरी बार खुद मंटो ने मुझे दिल्ली बुला भेजा. मंटो और कृश्नचंदर ने 'बंजारा' के नाम से एक फिल्मी कहानी लिखी थी और मुझे इसके गीत लिखने थे. मुझे कोई एक महीना मंटो के यहां रहने का मौका मिला. इस दौरान में मंटो ने मुझसे रेडियो के लिए एक लंबा 'आपेरा' और कुछ काव्य-नाटक भी लिखवाये. परिश्रमिक के मामले में रेडियो के अधिकारियों से खूब-खूब लड़ाइयां कीं. फिर जब मुझे खासी माकूल रकम दिलवा चुका तो मुझे चांदनी चौक में ले गया. वहां उसने एक अमृतसरी दूकानदार से मेरे लिए पतलूनों और कोटों के कपड़े खरीदे. दो-तीन दिनों में मेरा यह लिबास तैयार हो गया और मैंने यों ज़िंदगी में पहली बार पतलून पहनी और टाई लगायी.

चौथी मुलाकात 'बू' पर मुकदमें के सिलसिले में हुई. जब मंटो बंबई में था और मैं अदबे-लतीफ लाहौर का संपादक था. पांचवीं मुलाकात अनारकली बाज़ार में महज़ इत्तफाक से हुई. जब मैं 'सवेरा' के खिलाफ एक मुकदमे के सिलसिले में लाहौर आया हुआ था और मंटो स्थायी रूप से लाहौर आ गया था. चंद रोज के बाद वह पेशावर में मेरे पास पहुंचा और वहां पंद्रह-बीस रोज ठहरा. हमारे दृष्टिकोणों के मतभेद का आरंभ वहीं से हुआ.

राजहंसों के हुजूम में कौआ!

हम दिन भर रेडियो स्टेशन पर गुजारते. शाम को मंटो किसी न किसी शख्स को अपने साथ ले आता और फिर शराब के दौर चलते. अदब में हकीकत और जिंस पर बहस होती. मंटो को उन तमाम मुकदमों का ज्ञान था, जो दुनिया के बड़े-बड़े मुल्कों में विभिन्न लेखकों पर अश्लीलता के इल्ज़ाम में चलाये गये. वह इन लेखकों और उनकी रचनाओं के उदाहरण देता और उस वक्त उसकी जबान इतनी तेज़ हो जाती कि उस पर तेज़-तर्रार वक्ता का धोखा होता. एक रोज मैंने कहा, "टालस्टाय ने मोपांसा की किसी कहानी के बारे में लिखा है कि अगर मोपासां को अपनी नंगी हीरोइन को नहाते हुए दिखान[illegible] क्या इतना कह देना काफी नहीं था कि वह नहा रही [illegible] चलिये, यह भी कह दीजिये कि वह नहा चुकी तो उसके [illegible] पर पानी के बेशुमार कतरे थमे रह गये. लेकिन [illegible] को यह कहने की ज़रूरत क्यों महसूस हुई कि पानी के [illegible] का रंग हीरोइन की जिस्म की रंगत की तरह हल्का [illegible] या हल्का गुलाबी था. यही वह मुकाम है, जहां से अश्ली[illegible]तियत का आरंभ हुआ है."

मंटो भड़क उठा. बोला, "तुम क्या जानो, औरत के [illegible] के राज. तुमने अभी तक शादी नहीं की. शराब तक नहीं [illegible] तुम उस रोज चावड़ी में क्यों नज़र आ रहे थे जैसे राजहंसों के [illegible] हुजूम में कौआ घुस आये. तुम क्या जानो, मोपासां ने [illegible] रंग को प्रकट करना क्यों ज़रूरी समझा! अगर वह रंगत [illegible] न करता, तो यह औरत कैसी चिपटी-चिपटी और [illegible] लगती. इन गुलाबी कतरों ही ने तो उसे ज़िंदगी की [illegible] दी है. तुम किसानों की कहानियां लिख सकते हो तो [illegible] नहीं कि तुम किसान औरतों के मनोविज्ञान को भी समझ[illegible] औरत पर लिखते वक्त औरत बन जाना पड़ता है और [illegible] सृजन के क्षणों में औरत बने हो? तुम्हें कभी किसी ने [illegible] कभी किसी अजनबी ने तुम्हारे जिस्म पर हाथ रखा है [illegible] झुरझुरी महसूस की है? तुम्हारे अंग भी उस अजनबी [illegible] मिज़राब की तरह झुनझुनाये हैं? सो, मेरी जान, [illegible] कभी-कभी उसी तरह गांधीपने पर उतर आता था, मगर [illegible] ख्याल में उसने अपनी **अन्ना कैरिनीना** के नंगे पांव [illegible] हुए वह कैफियत महसूस नहीं की होगी, जो मोपासां ने [illegible] हीरोइन के जिस्म पर पानी के गुलाबी कतरे देखने में महसू[illegible] सो, अहमद नदीम कासमी, बात यह है कि तुम साहित्य के [illegible] मंत्री और हम साहित्य के गृहमंत्री हैं. हमारी अपनी-अपनी [illegible] और अपनी मंजिलें हैं. न नदीम मंटो बन सकता है...न मंटो [illegible] तालस्तोय तालस्तोय है और मोपासां मोपासां है और मैं [illegible] में मैंने एक पैग ज़्यादा चढ़ा लिया है. चलो, अब सो [illegible]

जमीर की मस्जिद का इमाम!

उन दिनों मैंने निश्चय कर लिया कि मंटो से उसकी [illegible] कहानियों के अश्लील टुकड़ों की अश्लीलता की हकीकत [illegible] करा लूं. मैं पंजे झाड़कर उसके पीछे पड़ गया और आखिर [illegible] दिन मंटो ऐसी तल्ख-कलामी पर उतर आया, जिसकी मैं [illegible] भी नहीं कर सकता था. फिर एक रोज मैंने उसे वहीं [illegible] बहुत ज़्यादा शराब पीने से रोका तो वह तंग आकर [illegible] "यह मेरा प्राइवेट मामला है और तुम मेरे दोस्त [illegible] मगर मैंने तुम्हें अपने ज़मीर की मस्जिद का इमाम [illegible] नही किया."

दूसरे ही दिन उसे अपने उस खूबसूरत फिकरे की [illegible] अहसास हो गया, क्योंकि उसकी बातों और तेवरों [illegible] होता था कि वह मुझे मना रहा है. फिर यहां लाहौर में, [illegible] दरम्यान महीनों तक कोई मुलाकात नहीं हुई थी, वह [illegible] मेरे यहां आया. मुझे अपने घर ले गया और अंबा[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1937 से 1954 तक की तमाम बातों को इतने विस्तार से दुहराता रहा कि मैं उसकी बेपनाह याददाश्त पर हैरान रह गया. फिर वह बोला, "यह बातें नोट कर लो मेरी जान. शायद चंद दिनों बाद तुम्हें यह मरहूम मंटो की याद में लिखना पड़े."

मैं खिलाफे मामूल आपे से बाहर हो गया और यह सोचे बग़ैर कि मंटो नशे में है, कहना शुरू किया, "अगर आपको मेरी दोस्ती इतनी प्यारी है तो फिर आपको शराब छोड़नी पड़ेगी. आप तो पागलों की तरह पीते हैं. क्या आपको यह अहसास नहीं होता कि जिस घर में आप पी रहे हैं, उसमें निकहत बेटी भी रहती है. यह वही बच्ची है, जिसकी एक निहायत प्यारी तस्वीर आपने बंबई से मुझे भेजी थी और जो मेरे पास अब तक सुरक्षित है. आप तो साहित्य के गृह-मंत्री हैं, लेकिन क्या आप निकहत की इस आंतरिक प्रतिक्रिया को अभी से महसूस नहीं कर सकते, जो चंद बरस के बाद आपको इस कैफियत में देखकर उसके दिमाग पर उभरेगी? और अगर आपको इस बात का अहसास नहीं तो आप अपने आप को साहित्य का बेकलमदान मंत्री कहा कीजिये, क्योंकि वह लेखक केवल अपने अंदर बंद रहता है."

वे नशे की नहीं, होश की बातें थीं!

मंटो बोला, "इस फ्राड की कोई खास जरूरत तो नहीं." और इसके बारे में उसने मुझे साफ-साफ कह दिया कि उसकी जात के मामलों में दखल देने का मुझे कोई दूर-दराज का भी हक हासिल नहीं—मैं खफा हुए बगैर चला आया, क्योंकि मुझे यकीन था कि कल होश में आकर वह इन बातों पर पछतायेगा. मगर वह नहीं पछताया, बल्कि चंद रोज बाद रास्ते में मुलाकात हुई और मैंने शिकायत की तो मालूम हुआ कि उस रोज जो कुछ उसने कहा था, वह आखिरी शब्द थे, और वे नशे की नहीं, होश की बातें थीं.

तब मैंने हथियार डाल दिये. इस दौरान में कभी-कभार मुलाकात होती रही, मगर यह हकीकत अपनी जगह कायम रही कि मंटो को अपनी इंतहा-पसंदियों में न मेरी संगति गवारा है और न मुझमें इतना हौसला है कि उसे आहिस्ता-आहिस्ता खत्म होते देखूं और कुछ न बोलूं. मैंने बोलकर देख लिया था.

मुझे आपकी हमेशा जरूरत रहेगी!

मगर अब मुझे कुछ ऐसा महसूस होता है कि मैंने बुजदिली दिखाई थी. मैं उस का पहरेदार बनकर क्यों न बठ गया! मैं उसकी झिड़कियां और गालियां तक सहता, मगर उसे जिंदा रखने की कोशिश करता. उसी मुहिम में उसके घराने के लोग और उसके चंद नेक दोस्त मेरा साथ देते. और हम सब मिलकर कौम की इस पूंजी को इतनी जल्दी तबाह होने से बचा लेते. और मंटो ने एक बार मुझे यह भी तो लिखा था—"मुझे आपकी हमेशा जरूरत रहेगी." सो, अब दो मातम मेरे सुपुर्द हुए हैं. एक मंटो का और दूसरा अपने स्वाभिमान की रक्षा के ढोंग का. □

मंटो और तिकड़ी

"सआदत हसन के नाम में तीन नुक्ते हैं और पूरा नाम तीन शब्दों पर आधारित है—यानी सआदत हसन मंटो. मैट्रिक के इम्तहान में तीन बार फेल हुआ, और जब पास हुआ, तो तीसरे दर्जे में. अपनी बीमारी के दौरान बटोत में तीन महीने रहा. जिगर की बीमारी की वजह से तीन महीने अस्पताल में रहा. उसके तीन अफसाने 'बू', काली शलवार, और ठंडा गोश्त, कानून की जद में आये. जिन पर उसे सजा हुई. उसके तीन सौतेले भाई थे और उसकी तीन बेटियां थीं. उसके दोस्त भी सिर्फ तीन थे:—अबू सईद कुरैशी, हसन अब्बास और बारी अलीग."

——हसन अब्बास

"मेरी जिंदगी में तीन बड़े हादसे हैं. पहला मेरी पैदाइश का, जिसका ब्यौरा मुझे मालूम नहीं. दूसरा मेरी शादी का...और तीसरा मेरे अफसाना-निगार बन जाने का. . . .मैं जिंदगी में सिर्फ तीन बार बेहोश हुआ. सबसे पहले अपने निकाह की तकरीब (समारोह) में सैयद फजल शाह मरहूम को दावते-शिरकत देने पर, दूसरी बार अपनी वालिदा की अचानक मौत पर और तीसरी बार अपने लड़के की वफात मौत पर."

——सआदत हसन मंटो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

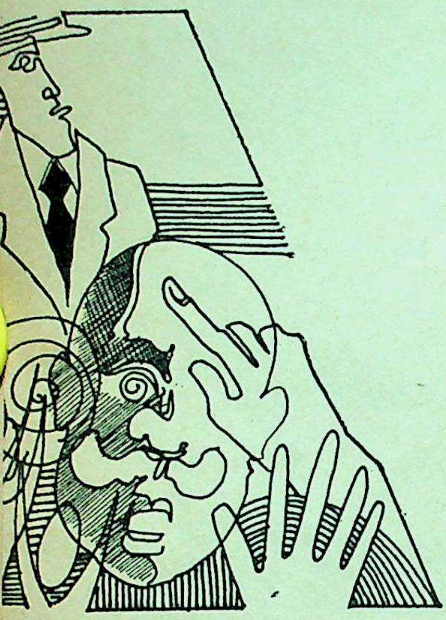

मंटो की कहानियां: चार

नया कानून

मंगू कोचवान स्टेशन के तांगा अड्डे में बहुत अक्लमंद आदमी समझा जाता था. हालांकि उसकी पढ़ाई-लिखाई न के बराबर थी. उसने कभी तख्ती लिखने की ज़हमत नहीं उठायी थी. इसके बावजूद, उसे दुनिया भर की बातों का पता था. अड्डे के सारे कोचवान, जिनको यह जानने की इच्छा होती थी कि दुनिया के अंदर क्या हो रहा है, उस्ताद मंगू की जानकारियों से फायदा उठाने के लिए उसके पास उठते-बैठते थे.

पिछले दिनों, जब उस्ताद मंगू ने अपनी एक सवारी से स्पेन में जंग छिड़ जाने की अफवाह सुनी थी तो उसने गामा चौधरी के चौड़े कंधे पर धौल जमाकर बुझक्कड़ अंदाज़ में भविष्यवाणी की थी, "देख लेना चौधरी, थोड़े ही दिनों में स्पेन के अंदर जंग छिड़ जायेगी."

हैरान-से गामा चौधरी ने उससे पूछा, "यह स्पेन कहां पर है?" तो उस्ताद मंगू ने बड़ी गंभीरता से जवाब दिया, "विलायत में है. . .और कहां?"

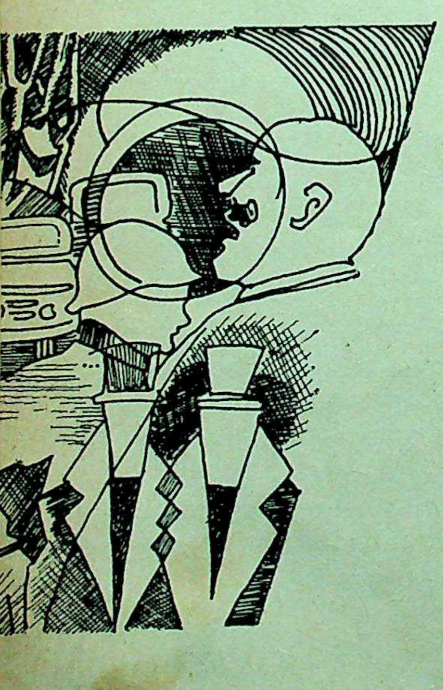

स्पेन में जंग छिड़ी और जब हर आदमी को इसका पता चल गया तो अड्डे में जितने कोचवान घेरा बनाये हुक्का पी रहे थे, मन ही मन में उस्ताद मंगू की 'महानता' स्वीकार कर रहे थे और उस्ताद मंगू उस समय माल रोड की चमकीली सड़क पर तांगा चलाते हुए अपनी सवारी से ताज़ा हिंदू-मुस्लिम फसाद पर सलाह-मश्विरा कर रहा था.

उस दिन, शाम के करीब, जब वह अड्डे में आया तो उसका चेहरा गैर-मामूली तौर पर तमतमाया हुआ था. हुक्के का दौर चलते-चलते जब हिंदू-मुस्लिम दंगे की बात छिड़ी तो मंगू ने सिर पर से खाकी पगड़ी उतारी और उसे बगल में दाबकर संतों के-से अंदाज़ में बोला, "यह किसी पीर की बद-दुआ का नतीजा है कि आये दिन हिंदुओं और मुसलमानों में चाकू-छुरियां चलते रहते हैं. मैंने बुज़ुर्गों से सुना है कि ... ने किसी दरवेश का दिल दुखाया ... और उस दरवेश ने आग-बबूला ... बद-दुआ दी थी . . जा, तेरे ... में हमेशा फसाद होते रहेंगे! ... देख लो, जब से अकबर बादशाह ... खत्म हुआ है, हिंदुस्तान में ... फसाद होते रहते हैं." कहकर मंगू ... सांस भरी और फिर हुक्के का ... कर अपनी बात कहनी शुरू ... कांग्रेसी हिंदुस्तान को आज़ाद ... चाहते हैं. मैं कहता हूं, ये लोग ... साल भी सिर पटकते रहें तो कुछ ... हद से हद यह होगा कि अंग्रे... जायेगा और कोई इटली वाला ... जायेगा . . . या वो रूस वाला जिस... में सुना है कि बहुत शातिर आ... लेकिन हिंदुस्तान सदा गुलाम ... हां, मुझे यह बताना याद नहीं रहा. ... ने यह बद-दुआ भी दी थी कि हिं... पर हमेशा बाहर के लोग ही राज ...

उस्ताद मंगू को अंग्रेज़ों से बड़ी ... थी. इस नफरत का कारण ... बतलाया करता था कि वे उसके हिं... पर अपना सिक्का चलाते हैं और ... तरह के जुल्म ढाते हैं. मगर ... नफरत की सबसे बड़ी वजह यह ... छावनी के गोरे उसे बहुत सताते ... थे. वे उसके साथ ऐसा बर्ताव ... जैसे वह एक जनावर हो.

जब किसी शराबी गोरे से ... झगड़ा हो जाता तो सारा दिन ... तबीयत नाखुश रहती और वह ... अड्डे में जाकर, लैंप मार्का सि... फिर हुक्के के कश लगाते हुए, ... को जी भरकर कोसा करता.

मोटी-सी गाली देने के ... ढीली पगड़ी-समेत, अपने सिर को ... देकर कहा करता था, "आग लेने ... घर के मालिक ही बन बैठे हैं ... में दम कर रखा है. ऐसे रोब ... जैसे हम उनके बाबा के नौकर ... और नाक को खाकी कमीज की ... से साफ करने के बाद फिर ... लग जाता.

"कसम है भगवान की, इन ला... के नाज़-नखरे उठाते तंग आ ... जब कभी उनका मनहूस चेहरा ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रगों में खून खौलने लगता है. कोई ऐसा कानून-वानून बने तो इन लोगों से छुटकारा मिले. तेरी कसम, जान में जान आ जाये!"

और जब एक दिन मंगू ने कचहरी से अपने तांगे पर दो सवारियां लादी और उनकी बातों से उसे पता चला कि हिंदुस्तान में नया कानून लागू होने वाला है तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा.

दो मारवाड़ी, जो कचहरी में अपने ...बानी के मुकदमें के सिलसिले में आये थे, वापस घर जाते हुए, नये कानून यानी 'इंडियन ऐक्ट' के बारे में बातें कर रहे थे.

"सुना है कि पहली अप्रैल से हिंदुस्तान में नया कानून चलेगा? ...क्या हर चीज़ बदल जायेगी?"

"हर चीज़ तो नहीं बदलेगी, मगर कहते हैं कि बहुत कुछ बदल जायेगा और हिंदुस्तानियों को आज़ादी मिल जायेगी".

"क्या ब्याज के बारे में भी कोई नया कानून पास होगा?"

"यह पूछने की बात है. कल किसी वकील से पूछेंगे".

उन मारवाड़ियों की बातचीत उस्ताद मंगू के दिल में नाकाबिले-बयान खुशी पैदा कर रही थी. वह अपने घोड़े को हमेशा गालियां देता था और चाबुक से बुरी तरह पीटा करता था, पर उस दिन वह बार-बार पीछे मुड़कर मारवाड़ियों की तरफ देखता रहा और अपनी बढ़ी हुए मूंछों के बाल, एक उंगली से बड़ी सफाई के साथ ऊंचे करके, घोड़े की पीठ पर लगाम ढीली करते हुए बड़े प्यार से बोला, "चल बेटा, चल बेटा... ज़रा हवा से बातें करके दिखा दे!"

मारवाड़ियों को उनके ठिकाने पहुंचाकर, उसने अनारकली में दीनू हलवाई की दुकान पर आध सेर दही की लस्सी पी और एक बड़ी डकार लेते हुए मूंछों को मुंह में दबाकर उनको चूसते हुए यों ही ऊंची आवाज़ में बड़क उठा, "हत तेरी ऐसी की तैसी!"

शाम को, जब वह अड्डे पर गया तो वहां उसे अपना कोई दोस्त तांगे वाला बैठा नहीं मिला. उसके सीने में एक अजीबो-गरीब-सा तूफान बरपा हो गया. आज वह एक बड़ी खबर अपने दोस्तों को सुनाने वाला था... बहुत बड़ी खबर और उस खबर को अपने अंदर से बाहर निकालने के लिए वह बहुत बेचैन हो रहा था. किंतु वहां कोई नहीं था.

आध घंटे तक वह चाबुक को बगल में दबाये, स्टेशन के अड्डे की लोहे वाली छत के नीचे, बेचैन-सा टहलता रहा. उसके दिमाग में बड़े उम्दा-उम्दा ख्याल आ रहे थे. नये कानून के लागू होने की खबर ने उसको एक नयी दुनिया में लाकर खड़ा कर दिया था. वह उस नये कानून के बारे में, जो पहली अप्रैल को हिंदुस्तान में लागू होने वाला था, अपने दिमाग की तमाम बत्तियां रौशन करके जोड़-तोड़ कर रहा था. उसके कानों में मारवाड़ी का शक भरा सवाल—क्या ब्याज के बारे में भी कोई नया कानून पास होगा?... बार-बार खटक कर उसके जिस्म में खुशी की एक लहर दौड़ा रहा था. कई बार अपनी मूंछों के अंदर हंसकर उसने उन मारवाड़ियों को गाली दी... गरीबों की खटिया में घुसे खटमल! नया कानून इनके लिए खौलता पानी साबित होगा!

▣

वह बेहद खुश था. खासकर उस समय उसके मन को बड़ी ठंडक पहुंचती जब वह सोचता था कि इन सफेद चूहों (गोरों) की थूथनियां नये कानून के आते ही, हमेशा-हमेशा के लिए बिलों में गायब हो जायेंगी.

जब नत्थू गंजा, पगड़ी बगल में दबाये, अड्डे में दाखिल हुआ तो मंगू दो कदम बढ़कर उससे मिला और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर, ऊंची आवाज़ में कहने लगा, "ला हाथ इधर! ऐसी खबर सुनाऊं कि तेरा जी खुश हो जाये!.. तेरी गंजी खोपड़ी पर बाल उग आयें!"

अपना श्रोता पाकर मंगू ने बड़े मज़े ले लेकर नये कानून के बारे में बातें शुरू कर दीं. बातों के दौरान उसने कई बार नत्थू गंजे के हाथ पर ज़ोर से अपना हाथ मारकर कहा, "तू देखता रह, क्या बनता है. यह रूस वाला बादशाह ज़रूर कुछ न कुछ करके रहेगा."

कुछ अर्से से पेशावर और दूसरे शहरों से सुर्खपोशों (गफ्फार खां के खुदाई खिदमतगारों) का आंदोलन चल रहा था. मंगू ने उस आंदोलन को अपने दिमाग में 'रूस वाले बादशाह' और फिर 'नये कानून' के साथ गडमगड कर दिया था. इसके अलावा जब वह कभी किसी से सुनता कि अमुक शहर में इतने बम बनाने वाले पकड़े गये हैं, या फलां जगह, इतने लोगों पर बगावत के इल्ज़ाम में मुकदमा चलाया गया है, तो वह इन सारी घटनाओं को नये कानून की पूर्व-सूचना समझता और मन ही मन बहुत खुश होता.

इस घटना के तीसरे दिन वह सरकारी कालेज के तीन लड़कों को अपने तांगे में बैठा कर मजंग जा रहा था. तीनों लड़के आपस में बातें कर रहे थे...

"नये कानून ने मेरी उम्मीदें बढ़ा दी हैं. अगर फलां साहब विधान सभा के सदस्य हो गये तो किसी सरकारी दफ्तर में नौकरी ज़रूर मिल जायेगी."

"वैसे भी कई जगहें और निकलेंगी. शायद हमारे हाथ भी कुछ आ जाये."

"हां-हां, क्यों नहीं."

"ये बेकार ग्रेजुएट, जो मारे-मारे फिर रहे हैं, उनमें कुछ तो कमी होगी."

इस बातचीत ने उस्ताद मंगू के दिल में नये कानून का महत्व और भी बढ़ा दिया और वह उसको ऐसी चीज़ समझने लगा, जो बहुत चमकती हो. नया कानून..! .. वह दिन में कई-कई बार सोचता... 'यानी कोई नयी चीज़' और हर बार उसकी नज़रों के सामने अपने घोड़ों का वह नया साज आ जाता, जो दो बरस हुए, उसने चौधरी खुदाबख्श से, ठोक-बजाकर खरीदा था. उस साज पर, जब वह नया था, जगह-जगह लोहे पर निक्कल चढ़ी हुई कीलें चमकती थीं और जहां-जहां पीतल का काम था, वो तो सोने की तरह दमकता था. उसके तई इस लिहाज से भी नये कानून का चमकता-दमकता होना बहुत ज़रूरी था.

▣

पहली अप्रैल तक उस्ताद मंगू ने नये विधान के पक्ष और विपक्ष में बहुत सुना. पर उसके बारे में जो खाका वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मन में बना चुका था, उसे बदल नहीं सका. वह समझता था कि पहली अप्रैल को नये कानून के आते ही सब मामला साफ हो जायेगा और उसके लागू होने पर जो चीज़ें नज़र आयेंगी, उनसे उसकी आंखों को ज़रूर ठंडक पहुंचेगी.

▣

पहली अप्रैल को सुबह-सवेरे उस्ताद मंगू उठा और अस्तबल में जाकर उसने तांगे में घोड़े को जोता और बाहर निकल गया. उसकी तबीयत आज गदगद हो रही थी . . . वह आज नये कानून को देखने वाला था.

उसने सुबह के सर्द धुंधलके में कई तंग और खुले बाज़ारों का चक्कर लगाया, मगर उसे हर चीज़ पुरानी नज़र आयी. आसमान की तरह पुरानी निगाहें आज ख़ास तौर पर नया रंग देखना चाहती थीं. पर सिवाय उस कलगी के जो रंग-बिरंगे परों से बनी रहती थी और उसके घोड़े के सिर पर जमी हुई थी, बाकी सब चीज़ें पुरानी नज़र आती थीं. यह नयी कलगी उसने नये कानून की ख़ुशी में इकतीस मार्च को चौधरी से साढ़े पंद्रह आने में ख़रीदी थी.

घोड़े के टापों की आवाज़; काली सड़क और उसके आस-पास, थोड़ा-थोड़ा फासला छोड़कर लगाये हुए बिजली के खंभे; दुकानों के बोर्ड; उसके घोड़े के गले में पड़े हुए घुंघरुओं की झनझनाहट; बाज़ार में चलते-फिरते आदमी—इनमें से कौन-सी चीज़ नयी थी? जाहिर है कि कोई भी नहीं! लेकिन मंगू निराश नहीं हुआ.

अभी बहुत सवेरा है. दुकानें भी तो सबकी-सब बंद हैं! इस ख़याल ने उसे तसकीन दी. इसके अलावा उसने यह भी सोचा कि हाई-कोर्ट में तो नौ बजे के बाद ही काम शुरू होता है, अब इससे पहले नया कानून क्या नज़र आयेगा!

जब उसका तांगा सरकारी कालेज के दरवाज़े के करीब पहुंचा तो कालेज के घड़ियाल ने बड़े घमंड से नौ बजाये. जो लड़के कालेज के बड़े दरवाज़े से बाहर निकल रहे थे, ख़ुश-पोश थे, पर उस्ताद मंगू को न जाने क्यों उनके कपड़े मैले-कुचैले-से नज़र आये. शायद इसकी वजह यही थी कि उसकी निगाहें आज आंखों को चौंधिया देने वाले किसी जलवे का इंतज़ार कर रही थीं.

तांगे को दायें हाथ मोड़कर, वह थोड़ी देर के बाद फिर अनारकली में चला आया. बाज़ार की आधी दूकानें खुल चुकी थीं और अब लोगों की चहल-पहल भी बढ़ गयी थी. हलवाई की दूकानों पर ग्राहकों की खूब भीड़ थी. मनियारी वालों की नुमायशी चीज़ें शीशे की अलमारियों में से, लोगों को आकर्षित कर रही थीं और बिजली के तारों पर कई कबूतर आपस में लड़-झगड़ रहे थे, पर उस्ताद मंगू के लिए इन तमाम चीज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं थी . . . वह नये कानून को देखना चाहता था, ठीक उसी तरह, जिस तरह कि वह अपने घोड़े को देख रहा था.

▣

जब उस्ताद के घर बच्चा पैदा होने वाला था तो उसने चार-पांच महीने बड़ी बेचैनी में गुज़ारे थे. उसको विश्वास था कि बच्चा किसी न किसी दिन ज़रूर पैदा होगा. पर वह इंतज़ार की घड़ियां नहीं काट सकता था. वह चाहता था कि अपने बच्चे को सिर्फ एक नज़र देख ले. इसके बाद वह पैदा होता रहे. चुनांचे इसी उत्साह और उत्कंठ इच्छा के तहत उसने कई बार बीमार बीवी के पेट को दबाकर उसके ऊपर कान रख-रखकर, बच्चे के बारे में कुछ जानना चाहा था पर असफल रहा था. एक बार तो वह इंतज़ार करते-करते तंग आ गया था और अपनी बीवी पर बरस भी पड़ा था, "तू हर वक्त मुर्दे की तरह पड़ी रहती है. उठ, ज़रा चल-फिर . . तेरे अंगों में थोड़ी ताकत भी आये. यों तख्ता बने रहने से कुछ न होगा. तू समझती है कि इस तरह लेटे-लेटे बच्चा जन देगी?"

कुछ भी हो, पर उस्ताद मंगू नये कानून के इंतज़ार में इतना बेचैन नहीं था जितना कि उसे अपनी तबीयत के लिहाज से होना चाहिए था. वह आज नये कानून लागू होता देखने के लिए घर से निकला था, ठीक उसी तरह जैसे वह महात्मा गांधी या जवाहर लाल के जुलूस को देखने के लिए निकलता था.

नेताओं की महानता का
उस्ताद मंगू हमेशा उनके
हंगामों और उनके गले में
फूल-मालाओं से किया
अगर कोई नेता गेंदे के फूलों
हो तो उस्ताद मंगू के नजदीक
आदमी था और जिस नेता के
भीड़ की वजह से दो-तीन
रह जाते, वह उसकी नज़र में
बड़ा हो जाता. अब नये
वह अपने जेहन के इसी तराज़ू
जा रहा था.

जब उस्ताद मंगू को किसी
तलाश नहीं होती थी या
बीती हुई घटना पर गौर करना
तो वह आमतौर पर अगली
कर पिछली सीट पर बैठ जाता
बड़े इतमीनान से अपने घोड़े
दायें हाथ के गिर्द लपेट लिया
ऐसे अवसरों पर उसका घोड़ा
सा हिनहिनाने के बाद बड़ी धीमी
चलना शुरू कर देता था.
उसे कुछ देर के लिए भाग
छुट्टी मिल गयी हो.

घोड़े की चाल और उस्ताद
के दिमाग़ में ख्यालों की आम
सुस्त थी. जिस तरह घोड़ा
कदम उठा रहा था, उसी तरह
मंगू के जेहन में नये कानून के
नये अनुमान दाखिल हो रहे थे.

वह नये कानून के आने पर
वालों से तांगों के नंबर मिलने
पर गौर कर रहा था और इस
बात को नये विधान की
देखने की कोशिश कर रहा था.
सोच-विचार में डूबा था, जब
लगा, जैसे किसी सवारी ने उसे
पीछे पलटकर देखने पर उसे
उस पार, दूर बिजली के खंभे
एक गोरा खड़ा नज़र आया,
हाथ के इशारे से बुला रहा था.

अपनी नयी सवारी को
के रूप में देखा तो उसके मन
के भाव जाग उठे. पहले तो उसे
आया कि बिल्कुल ध्यान न दे
छोड़कर चला आये, पर बाद
ख्याल आया कि इनके पैसे
बेवकूफी है. कलगी पर जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धोखा : मंटो की कहानी 'बाबू गोपीनाथ' का एक अंश

"बात दरअसल यह है कि मैं शुरू से फकीरों और कंजरों की सोहबत में रहा हूं. मुझे उनसे कुछ मुहब्बत-सी हो गयी है. मैं उनके बगैर नहीं रह सकता. मैंने सोच रखा है जब मेरी दौलत खत्म हो जायेगी, तो किसी तकिये में जा बैठूंगा. रंडी का कोठा और पीर का मज़ार, बस ये दो जगहें हैं जहां मेरे दिल को सुकून मिलता है... रंडी का कोठा तो छूट जायेगा.... इसलिए कि जेब खाली होने वाली है. मगर हिंदुस्तान में हज़ारों पीर हैं. किसी एक पीर के मज़ार पर चला जाऊंगा!"

मैंने उससे पूछा, "कोठे और तकिये ही क्यों पसंद हैं आपको?"

कुछ देर सोचकर उसने जवाब दिया, "इसलिए कि इन दोनों जगहों पर फर्श से लेकर छत तक धोखा ही धोखा है... जो आदमी खुद को धोखा देना चाहे उसके वास्ते इनसे बेहतर मुकाम और क्या हो सकता है?" □

चौदह आने खर्च कर दिये हैं, इनकी जेब से ही वसूल करने चाहिए... चलो चलते हैं! घोड़े की लगाम खींचकर उसने तांगा ठहराया और पिछली सीट पर बैठे-बैठे, गोरे से पूछा, "साब बहादुर, कहां जाना मांगता है?"

इस सवाल में गजब का कटाक्ष था. 'साहब बहादुर' कहते समय उसका ऊपर का मूंछों भरा होंठ, नीचे की ओर खिंच गया और पास ही गाल के दायीं तरफ हल्की बारीक-सी लकीर, जो नाक के नथुने से ठोड़ी के ऊपरी सिरे तक चली आ रही थी, एक कंपकंपी के साथ गहरी हो गयी, मानो किसी ने नोकीले चाकू से शीशम की सांवली लकड़ी में खरोंच-सी डाल दी हो. उसका सारा चेहरा हंस रहा था, मगर अपने अंदर उसने उस गोरे को सीने की आग में जलाकर राख कर डाला था!

गोरे ने सिगरेट का धुआं निगलते हुए कहा, "जाना मांगटा या फिर गड़बड़ करेगा?"

'वही है!' ये अलफ़ाज उस्ताद मंगू के दिमाग में उभरे और उसकी चौड़ी छाती के अंदर कसमसाने लगे. उसे यकीन हो गया कि यह गोरा वही है, जिससे पिछले बरस उसकी झड़प हुई थी और फालतूबाजी के झगड़े में, जिसकी वजह गोरे के दिमाग में नचनियाती शराब थी, उसे लाचार होकर बहुत-सी बातें सहनी पड़ी थीं. मंगू ने गोरे का दिमाग दुरुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके परखचे उड़ा दिये होते, पर वह एक खास वजह से चुप ही रह गया था. उसको मालूम था कि ऐसे झगड़ों में अदालत का नजला आम तौर पर कोचवानों पर ही गिरता है.

उस्ताद मंगू ने पिछली बार की लड़ाई और पहली अप्रैल के नये कानून पर गौर करते हुए गोरे से चाबुक-सी तेजी से पूछा, "कहां जाना मांगटा है?"

गोरे ने जवाब दिया, "हीरा मंडी."

"किराया पांच रुपया होगा." मंगू की मूंछें मुस्करा दीं.

गोरा हैरान हो गया. वह चिल्लाया, "पांच रुपये! क्या टुम....?"

"हां-हां, पांच रुपये!" मंगू ने मुट्ठी कसकर घूंसा तान लिया. उसका लहजा और भी सख्त हो गया, "क्यों, चलते हो या बेकार बातें बनाओगे?"

गोरा पिछले वर्ष की घटना का ख्याल करके, मंगू के सीने की चौड़ाई नज़र-अंदाज़ कर चुका था. वह सोच रहा था, इसकी खोपड़ी फिर खुजला रही है. हौसला बढ़ाने वाले इस ख्याल के तहत, वह अकड़कर तांगे की ओर बढ़ा और अपनी छड़ी से मंगू को तांगे से नीचे उतरने का इशारा किया.

बेंत की वो पालिश की हुई पतली-सी छड़ी, उस्ताद मंगू की मोटी रान के साथ दो-तीन बार छुई तो उसने खड़े-खड़े नाटे कद के गोरे को ऊपर से नीचे तक देखा, जैसे वह अपनी निगाहों के भार ही से उसे पीस डालना चाहता हो. फिर उसका घूंसा कमान में तीर की तरह ऊपर को उठा और पलक झपकते ही गोरे की ठोड़ी के नीचे जम गया. धक्का देकर उसने गोरे को परे हटाया और लपक कर उसे धड़ाधड़ पीटना शुरू कर दिया.

गोरा हक्का-बक्का रह गया. उसने इधर-उधर सिमटकर मंगू के वजनी घूंसों से बचने की कोशिश की मगर जब देखा कि मंगू की हालत पागलों-सी हो गयी है और उसकी आंखों से अंगारे बरस रहे हैं तो मदद के लिए चिल्लाने लगा. उस चीख-पुकार ने उस्ताद मंगू की बांहों का काम और भी तेज कर दिया. वह गोरे को अंधाधुंध पीटता हुआ अपने आप में बड़बड़ाता भी जा रहा था, "पहली अप्रैल को भी वही अकड़-फूं.. पहली अप्रैल को भी वही अकड़ फूं....अब हमारा राज है बच्चा!"

लोग जमा हो गये और पुलिस के दो सिपाहियों ने बड़ी मुश्किल से गोरे को उस्ताद मंगू की पकड़ से छुड़ाया. उस्ताद मंगू उन दो सिपाहियों के बीच खड़ा था. उसकी चौड़ी छाती फूली हुई सांस की वजह से, ऊपर-नीचे हो रही थी. मुंह से झाग बह रहा था और अपनी मुस्कराती हुई आंखों से सहमी और हैरतज़दा भीड़ की तरफ देख-देखकर, वह हांफती हुई आवाज में कह रहा था, "वो दिन गुजर गये, जब खलील खां फाख्ता उड़ाया करते थे. अब नया कानून है मियां... नया कानून!"

गोरा बेचारा अपने बिगड़े हुए चेहरे के साथ, बेवकूफों की तरह, कभी उस्ताद मंगू की तरफ देख रहा था और कभी भीड़ की तरफ.

उस्ताद मंगू को पुलिस के सिपाही थाने में ले गये. रास्ते में और थाने के अंदर कमरे में भी वह 'नया कानून' चिल्लाता रहा, पर किसी ने एक न सुनी.

"नया कानून, नया कानून क्या बक रहे हो? कानून वही है.. पुराना!" उसे पीटा गया और फिर हवालात में बंद कर दिया गया. □

● रूपांतर : रमेश बत्तरा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपको मेरे इस ख़त से जले हुए गोश्त की बू आयेगी !

सआदत हसन मंटो की कि[...]
'बगैर उन्वान के' का मु[...]
पंडित नेहरू के [...]
पंडित मंटो का पहला [...]
जो इस किताब [...]
भूमिका बन [...]

पंडित जी, अस्सलाम-अलैकुम!

यह मेरा पहला खत है, जो मैं आपकी खिदमत में अरसाल कर रहा हूं. आप माशाअल्लाह अमरीकनों में बड़े हसीन मुतसव्वर (कल्पित) किये जाते हैं, लेकिन मैं समझता हूं कि मेरे खदो-खाल (नैन-नक्श) भी कुछ ऐसे बुरे नहीं हैं. अगर मैं अमरीका जाऊं तो शायद मुझे भी हुस्न का रुतबा अता (प्रदान) हो जाये. लेकिन आप हिंदुस्तान के बज़ीरे-आज़म हैं, और मैं पाकिस्तान का अज़ीम अफसानानिगार. इनमें बहुत बड़ा तफ़ावुत (अंतर) है. बहरहाल हम दोनों में एक चीज़ मुश्तरक (साझी) है कि आप कश्मीरी हैं और मैं भी! आप नेहरू हैं, मैं मंटो! कश्मीरी होने का दूसरा मतलब खूबसूरती है और खूबसूरती का मतलब, मैंने नहीं देखा.

मुद्दत से मेरी तमन्ना थी कि आपसे मिलूं (शायद बशर्ते ज़िंदगी मुलाकात हो भी जाये). मेरे बुजुर्ग तो आप के बुजुर्गों से अक्सर मिलते-जुलते रहते हैं, लेकिन यहां कोई ऐसी सूरत नहीं निकली कि आपसे मुलाकात हो सके.

यह कितनी बड़ी ट्रेजडी है कि मैंने आपको देखा तक नहीं! आवाज़ रेडियो पर अलबत्ता ज़रूर सुनी है, एक दफा.

जैसाकि मैं कह चुका हूं, मुद्दत से मेरी तमन्ना थी कि आपसे मिलूं. इसलिए कि आपसे मेरा कश्मीर का रिश्ता है, लेकिन अब सोचता हूं, इसकी ज़रूरत ही क्या है! कश्मीरी किसी न किसी रास्ते से किसी न किसी चौराहे पर दूसरे कश्मीरी से मिल ही जाता है.

आप किसी नहर के करीब आबाद हुए और नेहरू हो गये, और मैं अभी तक सोचता हूं कि मंटो कैसे हो गया? आपने तो खैर लाखों मर्तबा कश्मीर देखा होगा. मगर मुझे सिर्फ बनिहाल तक जाना नसीब हुआ है. मेरे कश्मीरी दोस्त, जो कश्मीरी ज़ुबान जानते हैं, मुझे बताते हैं कि मंटो का मतलब 'मुंट' है, यानी डेढ़ सेर का बट्टा! आप यकीनन कश्मीरी ज़ुबान जानते होंगे. इस खत का जवाब लिखने की अगर आप ज़हमत (कष्ट) फरमाएं तो मुझे ज़रूर लिखिए कि 'मंटो' की वजह-तसमीया क्या है?

अगर मैं सिर्फ डेढ़ सेर हूं तो मेरा आपका मुकाबला नहीं. आप पूरी नहर हैं और मैं सिर्फ डेढ़ सेर. आपसे मैं क्या टक्कर ले सकता हूं! लेकिन हम दोनों ऐसी बंदूकें हैं, जो कश्मीरियों के बारे में मशहूर कहावत के मुताबिक—'धुप में ठस करती हैं.'

माफ कीजिएगा, आप इसका बुरा न मानिएगा. मैंने भी यह फर्जी कहावत सुनी, तो कश्मीरी होने की वजह से मेरा तन-बदन जल गया. चूंकि यह दिलचस्प है, इसलिए मैंने इसका ज़िक्र तफरीही कर दिया, हालांकि मैं और आप दोनों अच्छी तरह जानते हैं कि हम कश्मीरी किसी मैदान में आज तक नहीं हारे!

मैं डेढ़ सेर का बट्टा हूं!

सियासत (राजनीति) में आपका नाम मैं बड़े फख्र से ले सकता हूं, क्योंकि आप बात कहकर फौरन तरदीद (खंडन) करना खूब जानते हैं. पहलवानी में हम कश्मीरियों को आज तक किसने हराया है! शायरी में हमसे कौन बाज़ी ले सकता है! लेकिन मुझे यह सुनकर हैरत हुई है कि आप हमारा दरिया बंद कर रहे हैं. लेकिन पंडित जी, आप तो सिर्फ नेहरू हैं. अफसोस कि मैं डेढ़ सेर का बट्टा हूं. अगर मैं तीस-चालीस हजार मन का पत्थर होता तो खुद को इस दरिया में लुढ़का देता कि आप कुछ देर के लिए उसको निकालने के लिए अपने इंजीनियरों से मशवरा करते रहते.

पंडित जी, इसमें कोई शक नहीं कि आप बहुत बड़े आदमी हैं. आप हिंदुस्तान के वज़ीरे-आज़म हैं. उस मुल्क पर, जिस पर हमारा भी तअल्लुक रहा है, आपकी हुक्मरानी है. आप सब कुछ हैं.

लेकिन गुस्ताखी माफ कि आ[...] खाकसार (सेवक, जो कश्मीरी [...] किसी बात की परवाह नहीं की. [...]

देखिए, मैं आपसे एक दिलचस्[...] का ज़िक्र करता हूं. मेरे वालिद [...] (मरहूम) जो ज़ाहिर है कश्मी[...] जब किसी हातो को देखते, तो [...] ले आते. ड्योढ़ी में बिठाकर उसे [...] कीन-चाय पिलाते. साथ कुल[...] होता. उसके बाद वह बड़े फख्र [...] 'हातो' से कहते, "मैं भी काशर [...]

पंडित जी, आप काशर हैं [...] की कसम, अगर मेरी जान लेना [...] हर वक्त हाज़िर हूं. मैं जानता हूं [...] समझता हूं कि आप सिर्फ [...] कश्मीर के साथ चिमटे हुए हैं कि [...] को कश्मीर से कश्मीरी होने के [...] बड़ी मिकनातीसी किस्म की [...] है. जो हर कश्मीरी को, ख्वाह [...] कश्मीर देखा भी न हो, होना [...]

जैसाकि मैं इस खत में पहले [...] चुका हूं, मैं सिर्फ बनिहाल तक [...] कुद, बटोत, कष्टवार, यह सब [...] देखे हैं. लेकिन हुस्न के साथ मैंने [...] (दरिद्रता) चिपका देखा. अगर [...] इस अफलास को दूर कर दिया [...] आप कश्मीर अपने पास रखिए [...] मुझे यकीन है कि आप कश्मी[...] के बावजूद उसे दूर नहीं कर [...] इसलिए कि आपको फुरसत ही [...]

आप ऐसा क्यों नहीं [...] आपका पंडित भाई हूं. मुझे बुला [...] मैं पहले आपके घर शलजम [...] देग खाऊंगा. उसके बाद [...] सारा काम संभाल लूंगा. [...] वगैरा अब बख्श देने के [...] अव्वल दर्जे के चार सौ बीस [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने ख्वाहमख्वाह अपनी जरूरियात के मुताबिक आला रुतबा बख्श दिया है. आखिर क्यों? ... मैं समझता हूं कि आप सियासतदान हैं, जो कि मैं नहीं हूं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं कोई बात समझ न सकूं.

बंटवारा हुआ. रेडक्लिफ को जो झख मारना था, मारा. आपने जूनागढ़ पर नाजायज़ तौर पर कब्जा कर लिया. जो कोई कश्मीरी, किसी मरहटे के ज़ेरे-असर (प्रभावाधीन) ही कर सकता है. मेरा मतलब पटेल से है. (खुदा उसे मग़फिरत (मुक्ति) करे.)

आग बाहर से आ रही है !

आप अंग्रेज़ी ज़ुबान के अदीब (लेखक) हैं. मैं भी यहां उर्दू में अफसाना-निगारी करता हूं. उस ज़ुबान में, जिसको आपके हिंदुस्तान में मिटाने की कोशिश की जा रही है. पंडित जी, मैं आपके बयानात पढ़ता रहता हूं. उनसे मैंने यह नतीजा निकाला है कि आपको उर्दू अज़ीज (प्यारी) है, लेकिन मैंने आपकी एक तकरीर रेडियो पर, जब हिंदुस्तान के टुकड़े हुए थे, सुनी. आपकी अंग्रेज़ी के तो सब कायल हैं, लेकिन जब आपने नाम-नहाद उर्दू में बोलना शुरू किया तो ऐसा मालूम होता था कि आपकी अंग्रेज़ी तकरीर का तर्जुमा किसी कट्टर महासभाई ने किया है, जिसे पढ़ते वक्त आपकी ज़ुबान का जायजा दुरुस्त नहीं था. आप हर फिकरे पर उबकाइयां ले रहे थे.

मेरी समझ में नहीं आता कि आपने तहरीर पढ़ना कबूल कैसे की! यह उस ज़माने की बात है, जब रेडक्लिफ ने हिंदुस्तान की डबलरोटी के दो तोस बनाकर रख लिये थे. लेकिन अफसोस है कि अभी तक वह सेंके नहीं गये. इधर आप सेंक रहे हैं और उधर हम! लेकिन आपकी-हमारी अंगीठियों में आग बाहर से आ रही है.

पंडित जी, आजकल बग्गो-गोशों का मौसम है. गोशे तो खैर मैंने बेशुमार देखे हैं. लेकिन बग्गो-गोशे खाने को जी बहुत चाहता है. यह आपने क्या ज़ुल्म किया कि बख्शी को सारा हक बख्श दिया है कि वह बख्शीश में भी मुझे थोड़े से बग्गो-गोशे नहीं भेजता.

बख्शीश जाये जहन्नुम में और बग्गो-गोशे .. नहीं वह जहां है, सलामत रहें. मुझे आपसे दरअसल कहना यह था कि आप मेरी किताबें क्यों नहीं पढ़ते? आपने अगर पढ़ी तो मुझे अफसोस है कि आपने दाद नहीं दी. अगर नहीं पढ़ीं तो और भी ज्यादा अफसोस का मुकाम है. इसलिए कि आप अदीब हैं.

अब बताइये ... मैं क्या करूं?

आपसे मुझे एक और भी गिला है. आप हमारे दरियाओं का पानी बंद कर रहे हैं. और आपकी देखा-देखी आपकी राजधानी के पब्लिशर मेरी इजाज़त के बगैर मेरी किताबें धड़ाधड़ छाप रहे हैं. यह भी कोई शराफत है. मैं तो यह समझता था कि आपकी वज़रात में ऐसी कोई बेहूदा हरकत हो ही नहीं सकती! मगर आपको फौरन मालूम हो सकता है कि दिल्ली, लखनऊ और जालंधर में कितने प्रकाशकों ने मेरी किताबें नजायज तौर पर छापी हैं.

फुहश-निगारी (अश्लीलता) के इलज़ाम में मुझ पर कई मुकदमे चल चुके हैं, मगर यह कितनी बड़ी ज़्यादती है कि दिल्ली में, आपकी नाक के ऐन नीचे, वहां का एक पब्लिशर मेरे अफसानों का मजमूआ (संकलन) 'मंटो के फाहश (अश्लील) अफसाने' के नाम से छापता है.

मैंने किताब 'गंजे फरिश्ते' लिखी. उसको आपके भारत के एक पब्लिशर ने 'परदे के पीछे' के उन्वान (शीर्षक) से प्रकाशित कर दिया ... अब बताइये, मैं क्या करूं!

आ रहा हूं आपके पास!

मैंने यह नयी किताब लिखी है. इसका दीबाचा यही खत है, जो मैंने आपके नाम लिखा है. अगर यह किताब भी आपके यहां नाजायज़ तौर पर छप गयी तो खुदा की कसम, मैं किसी न किसी दिन दिल्ली पहुंचकर आपको गरेबान से पकड़ लूंगा. फिर छोड़ूंगा नहीं आपको ... आपके साथ ऐसा चिमटूंगा कि आप सारी उम्र याद रखेंगे. हर रोज़ सुबह को आपसे कहूंगा कि नमकीन-चाय पिलायें. साथ एक कुलचा भी हो. शलजमों की शबदेग तो खैर हर हफ्ते के बाद जरूर होगी.

यह किताब छप जाये तो मैं इसका एक नुस्खा (प्रति) आपको भेजूंगा. उम्मीद है, आप इसकी रसीद से मुझे जरूर सूचित करेंगे और मेरी तहरीर (लिखित) के बारे में अपनी राय से भी जरूर आगाह करेंगे.

आपको मेरे इस खत से जले हुए गोश्त की बू आयेगी. आपको मालूम है, हमारे वतन कश्मीर में एक शायर 'गनी' रहता था, जो 'गनी कश्मीरी' के नाम से मशहूर है. उसके पास ईरान से एक शायर आया. उसके घर के दरवाज़े खुले थे, इसलिए कि वह घर में नहीं था. वह लोगों से कहा करता था कि मेरे घर में है क्या जो मैं दरवाज़े बंद रखूं. अलबत्ता जब मैं घर में होता हूं तो दरवाज़े बंद कर देता हूं. इसलिए कि मैं ही तो उसकी वाहिद (एक मात्र) दौलत हूं.

मैं दिल जला!

ईरानी शायर उसके वीरान घर में अपनी बियाज (काव्य-संकलन) छोड़ गया. उसमें एक शेअर नामुकम्मल (अधूरा) था. मिसरा सानी (दूसरा) हो गया. मगर मिसरा अव्वल उस शायर से नहीं कहा गया था. मिसरा सानी यह था—

'कि अज़ लिबासे तू बूए कबाब मी आयद.'

जब वह ईरानी शायर कुछ देर के बाद वापस आया तो उसने अपनी बियाज देखी. मिसरा अव्वल मौजूद था— 'कदाम सोख्ता जान दस्त ज़द बद अमानत.'

पंडित जी, मैं भी एक सोख्ता-जान (जला हुआ) हूं. मैंने आपके दामन पर अपना हाथ दिया है. इसलिए कि मैं यह किताब आपके नाम से मानून (समर्पित) कर रहा हूं.

सआदत मंटो

27 अगस्त, 1954

□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संटो की कहानियां : पांच

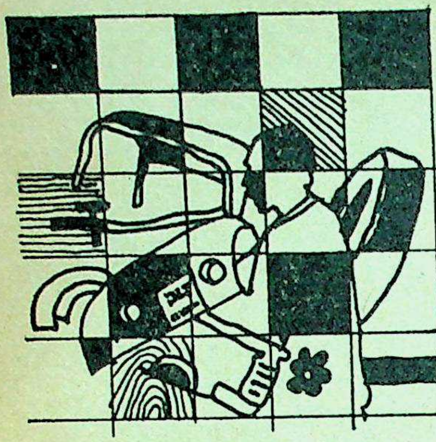

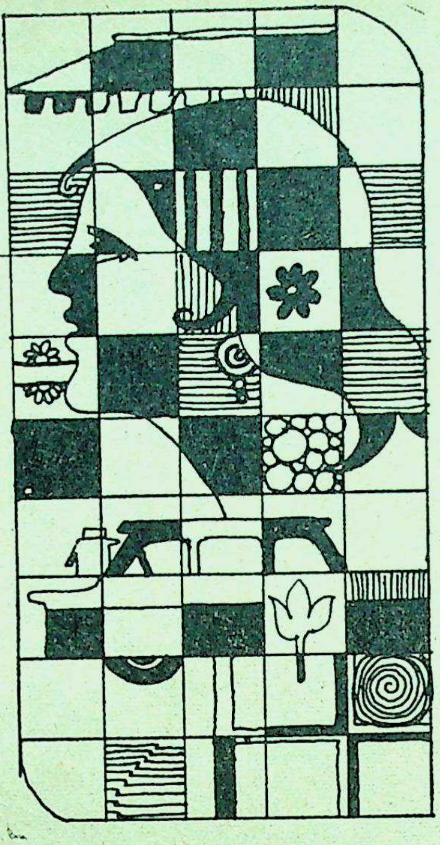

खुशिया सोच में डूबा हुआ था. बनवारी से काले तंबाकू वाला पान लेकर वह उसकी दूकान के साथ उस पत्थर के चबूतरे पर बैठा था जो दिन के वक्त टायरों और मोटरों के बेतरह पुर्जों से भरा रहता है. रात आठ बजे के करीब मोटर के पुर्जों और टायरों की यह दूकान बंद हो जाती है, तो यह चबूतरा खुशिया के लिए खाली हो जाता है.

वह धीरे-धीरे पान चबाता हुआ सोच रहा था. गाढ़ी तंबाकू मिली पीक उसके दांतों की रीखों से निकलकर उसके मुंह में इधर-उधर गुमक रही थी और उसे लग रहा था कि उसके विचार दांतों तले उसकी पीक में घुल रहे हैं. शायद इसी वजह से वह उसे फेंकना नहीं चाहता था.

खुशिया पान की पीक मुंह में पुलपुला रहा था और उस घटना के बारे में सोच रहा था जो उसके साथ अभी घटी थी.

▣

रोज़ की तरह वह उस चबूतरे पर बैठने से पहले खेतवाड़ी की पांचवीं गली में गया था. मंगलोर से जो नयी छोकरी कांता आयी थी, उसी गली के नुक्कड़ पर रहती थी. खुशिया को किसी ने बताया था कि वह अपना मकान बदल रही है. उसका धंधा ही ऐसा है कि उसे हर छोकरी का अता-पता ठीक से मालूम होना चाहिये. इसलिए वह इसी बात का पता लगाने के लिए वहां गया था.

उसने खोली का दरवाजा खटखटाया.

अंदर से आवाज आयी, "कौन है?" इस पर खुशिया ने कहा, "मैं, खुशिया!"

आवाज दूसरे कमरे से आयी थी. थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला. खुशिया अंदर घुसा. जब कांता ने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया, तब खुशिया ने मुड़कर देखा. उसकी हैरत की कोई इंतहा न रही. कांता उसके सामने मादरजाद खड़ी थी . . बिल्कुल मादरजाद ही समझो. वह खुद को सिर्फ एक तौलिये से ढांपे हुए थी. इसे ढांपना भी तो नहीं कहा जा सकता . . . क्योंकि छिपाने की जितनी चीज़ें होती हैं वे सबकी-सब उसकी हैरान आंखों के सामने थीं.

"कह खुशिया, कैसे आया? . . .मैं बस अब नहाने ही वाली थी. बैठ-बैठ . .. बाहर चाय वाले से अपने लिए एक कप चाय के लिए तो कह आया होता . . . जानता है वह मुआ रामू यहां से भाग गया है."

खुशिया, जिसकी आंखों ने कभी औरत को इस तरह आदिम नहीं देखा था, बेहद घबरा गया. उसकी समझ में नहीं आया था कि क्या कहे! उसकी निगाहें जो एकदम निर्वस्त्र औरत से रू-ब-रू हो गयी थीं, अपने आपको कहीं छिपा लेना चाहती थीं.

उसने जल्दी-जल्दी सिर्फ इतना कहा, "जा . . .जा, तू नहा ले!" फिर एकदम उसकी जुबान खुल गयी, "पर जब तू इस हालत में थी तो दरवाजा खोलने की क्या जरूरत थी? . . .अंदर से कह दिया होता, मैं फिर आ जाता! . . . जा . . .तू नहा ले."

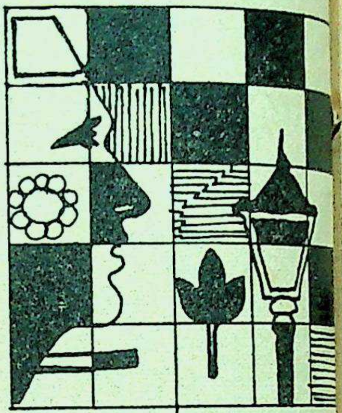

कांता मुस्करा दी, "जब तुमने कहा खुशिया, तो मैंने सोचा क्या हर्ज है, अपना खुशिया ही तो है, आने दो . . ."

कांता की यही मुस्कराहट अभी तक खुशिया के दिल-दिमाग में डूब-तैर रही थी. इस वक्त भी कांता का नंगा शरीर मोम के पुतले की तरह उसकी आंखों के सामने खड़ा था और पिघल-पिघलकर उसके अंदर समाता जा रहा था.

उसका जिस्म सुंदर था. पहली बार खुशिया को मालूम हुआ था कि पैसा बेचने वाली औरतें भी ऐसी सुडौल देह रखती हैं. उसको इस बात पर हैरत हुई थी. पर सबसे अधिक हैरत उसे इस बात पर हुई कि नंग-धड़ंग वह उसके सामने खड़ी हो गयी और उसको लाज तक न आयी . . .!

'क्यों?' उसने खुद से पूछा.

इसका जवाब तो कांता दे ही चुकी थी . . . . "जब तूने कहा खुशिया, मैंने सोचा क्या हर्ज है, अपना खुशिया . . ."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो है... आने दो!"

कांता और खुशिया एक ही पेशे में शरीक थे. वह उसका दलाल था, इस दृष्टि से वह उसी का था... पर यह कोई कारण नहीं था कि वह उसके सामने नंगी हो जाती. 'कोई खास बात थी...' कांता के सवाल का खुशिया कोई और ही अर्थ कुरेद रहा था.

यह अर्थ एक ही समय में इतना स्पष्ट और इतना अस्पष्ट था कि वह किसी खास नतीजे पर नहीं पहुंच सका था. उस समय भी वह कांता के नग्न शरीर को देख रहा था, जो ढोलकी पर मढ़े हुए चमड़े की भांति तना हुआ था. उसकी फिसलती हुई निगाहों से बिलकुल बे-परवाह. कई बार उस विमूढ़ स्थिति में

खुशिया

भी उसने कांता के सांवले-सलोने शरीर पर टोह लेने वाली नजरें गाड़ी थीं, पर उसका एक रोआं तक भी न कंपकंपाया था. बस पत्थर की उस मूर्ति के समान वह खड़ी रही, जो अनुभूतिहीन हो!

भई, एक मर्द उसके सामने खड़ा था ...मर्द, जिसकी निगाहें कपड़ों में भी औरत के जिस्म तक पहुंच जाती हैं और जो, खुदा जाने ख्याल ही ख्याल में जाने कहां तक पहुंच जाता है! लेकिन वह ज़रा भी न घबरायी और...और उसकी आंखें, ऐसा समझ लो कि अभी लांड्री से धुलकर आयी हैं...उसको थोड़ी-सी लाज तो आनी चाहिए थी. ज़रा-सी सुर्खी तो उसकी आंखों में पैदा होनी चाहिए थी. मान लिया, वेश्या थी, पर वेश्याएं यों नंगी तो नहीं खड़ी हो जातीं!

उसे दलाली करते दस साल हो गये थे और इन दस सालों में वह पेशा कराने वाली लड़कियों के सारे भेदों से वाक़िफ हो चुका था. मिसाल के तौर पर उसे यह मालूम था कि पायधोनी के अंतिम छोर पर जो छोकरी एक युवा लड़के को भाई बनाकर रहती है, इसलिए 'अछूत कन्या', का रिकार्ड 'काहे करता मूरख प्यार-प्यार...' अपने टूटे हुए बाजे पर बजाया करती है कि उसे अशोक कुमार से बुरी तरह इश्क है. कई मनचले अशोक कुमार से उसकी मुलाकात कराने का झांसा देकर अपना उल्लू सीधा कर चुके हैं. उसे यह भी मालूम था कि दादर में जो पंजाबिन रहती है, केवल इसलिए कोट-पतलून पहनती है कि उसके एक आशिक ने उससे कहा था कि तेरी टांगें तो बिलकुल उस अंग्रेज़ ऐक्ट्रेस की तरह हैं जिसने 'मराको' उर्फ़ 'खूने-तमन्ना' में काम किया था. यह फ़िल्म उसने कई बार देखी और जब उसके आशिक ने कहा कि मार्लिन डिट्रेच इसलिए पतलून पहनती है कि उसकी टांगें बहुत सुंदर हैं और उसने उन टांगों का दो लाख का बीमा करा रखा है, तो उसने भी पतलून पहननी शुरू कर दी, जो उसके नितंबों पर बुरी तरह फंस-कर आती थी. वह मझगांव वाली दक्षिणी छोकरी के बारे में भी जानता है, जो सिर्फ इसलिए कालेज के खूबसूरत लड़कों को फांसती है कि उसे एक खूबसूरत बच्चे की मां बनने का अरमान है. वह यह भी जानता है कि वह कभी भी अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सकेगी, क्योंकि वह बांझ है. उस काली मद्रासिन के बारे में जो हर समय कानों में हीरे के टाप्स पहने रहती थी, उसे यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि उसका रंग कभी सफ़ेद नहीं हो सकता और वह उन दवाओं पर फ़िजूल पैसा बरबाद कर रही है जो वह आये दिन खरीदती रहती है.

वह उन सभी छोकरियों के अंदर-बाहर के हाल अच्छी तरह जानता था जो पेशे में शामिल थीं. पर उसको यह अंदाज न था कि एक दिन कांता कुमारी, जिसका असली नाम इतना कठिन था कि वह सारी उम्र भी याद नहीं कर सकता था, उसके सामने नंगी खड़ी हो जायेगी. और उसे जिंदगी के सबसे बड़े ताज्जुब में डाल देगी.

सोचते-सोचते उसके मुंह में पान की इतनी पीक इकट्ठी हो गयी थी कि अब वह मुश्किल से सुपारी के उन नन्हें-नन्हें रेज़ों को चबा सकता था जो उसकी दांतों में से इधर-उधर फिसलकर निकल जाते थे. उसके छोटे-से माथे पर पसीने की नन्हीं-नन्हीं बूंदें उभर आयी थीं जैसे मलमल में पनीर को बोरे-से दबा दिया गया हो... उसके पुंसत्व को धक्का-सा पहुंचता था, जब भी वह कांता के नंगे जिस्म को अपनी कल्पना में देखता था. उसे महसूस होता था जैसे उसका अपमान हुआ है.

अनायास उसने अपने मन में सोचा; भई, यह अपमान नहीं है तो क्या है...! यानी एक छोकरी नंग-धड़ंग तुम्हारे सामने खड़ी हो जाती है...! 'तुम खुशिया ही तो हो'... खुशिया न हुआ साला वह बिल्ला हो गया जो उसके बिस्तर पर हर समय ऊंघता रहता है...!

▣

उसे विश्वास होने लगा कि सचमुच उसका अपमान हुआ है... वह मर्द था और उसको इस बात की पूरी आशा थी कि औरतें चाहे शरीफ़ हों, चाहे बाज़ारू, उसको मर्द ही समझेंगी और उसके तथा अपने बीच वो पर्दा कायम रखेंगी जो एक मुद्दत से चला आ रहा है.

वह तो सिर्फ़ यह पता लगाने के लिए कांता के यहां गया था कि वह कब तक मकान बदल रही है और कहां जा रही है! कांता के पास उसका जाना बिलकुल व्यापार से संबंधित था.

अगर खुशिया कांता के बारे में सोचता कि जब वह उसका दरवाज़ा खटखटायेगा, तो वह अंदर क्या कर रही होगी, तो उसकी कल्पना में हद से हद इतनी ही बातें आ सकती थीं...

—सिर पर पट्टी बांधे लेटी होगी!

—बिल्ले के बालों से पिस्सू निकाल रही होगी!

—उस हेयर-रिमूवर से अपनी बगलों के बाल साफ़ कर रही होगी जो इतनी बास मारता था कि खुशिया की नाक बर्दाश्त नहीं कर सकती थी!

—पलंग पर अकेली बैठी ताश फैलाये पेशंस खेलने में मस्त होगी.

बस यही काम थे, जो उसके दिमाग में आते. घर में वह किसी को रखती नहीं थी, इसलिए इस बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था. पर उसने यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो सोचा ही नहीं था. वह तो काम से वहां गया था कि अचानक कांता... यानी कपड़े पहनने वाली कांता मतलब यह कि वह कांता जिसको वह हमेशा कपड़ों में देखा करता था, उसके सामने निर्वस्त्र खड़ी हो गयी...बिल्कुल नंगी ही समझो, क्योंकि एक छोटा-सा तौलिया सब कुछ तो छिपा नहीं सकता. खुशिया को यह दृश्य देखकर ऐसा महसूस हुआ था कि जैसे छिलका तो उसके हाथ में रह गया है और केले का गूदा बिछलकर उसके सामने जा गिरा है. नहीं, उसे कुछ और ही महसूस हुआ था जैसे ...जैसे वह स्वयं नग्न हो गया है. अगर बात यहीं पर खत्म हो जाती तो कुछ भी न होता. खुशिया अपने आश्चर्य को किसी न किसी तरह से दूर कर देता. मगर यहां मुसीबत यह आ पड़ी थी कि उस लौंडिया ने मुस्कराकर कहा था, "जब तुमने कहा खुशिया है, तो मैंने सोचा, अपना खुशिया ही तो है, आने दो...!" यह बात उसे खाये जा रही थी.

साली मुस्करा रही थी...! वह बार-बार बड़बड़ाया. जिस तरह कांता नंगी थी. उसी तरह उसकी मुस्कराहट भी उसे नंगी नज़र आयी थी. यह मुस्कराहट ही नहीं, उसे कांता का बदन भी इस हद तक दिखायी दिया था जैसे उस पर रंदा फिरा हुआ है.

उसे बचपन के वे दिन याद आ रहे थे. जब पड़ोस की एक औरत उसे कहती थी, "खुशिया बेटा, जा दौड़कर यह बाल्टी पानी से भर ला." जब वह बाल्टी भरकर लाता तो उस धोती के बनाये हुए पर्दे के पीछे से वह कहती, "अंदर आकर यहां मेरे पास रख दे. मैंने मुंह पर साबुन लगा रखा है..." वह पर्दा हटाकर बाल्टी उसके पास रख दिया करता था. उस समय साबुन की झाग में लिपटी हुई एक नग्न औरत उसे नज़र आती थी, पर उसके मन में किसी तरह की उथल-पुथल नहीं होती थी.

भई, मैं उस समय बच्चा था. बिल्कुल भोला-भाला. बच्चे और मर्द में बहुत अंतर होता है! बच्चों से पर्दा कौन करता है. मगर अब....मर्द हूं. मेरी उम्र इस समय करीब अठ्ठाईस साल है और इस उम्र के जवान आदमी के सामने तो कोई बूढ़ी औरत भी नग्न नहीं होगी.

कांता ने उसे क्या समझा था? क्या उसमें वे तमाम बातें नहीं थीं जो एक नौजवान मर्द में होती हैं? इसमें कोई संदेह नहीं कि कांता को अनायास नंग-धड़ंग देखकर वह घबरा गया था. लेकिन चोर दृष्टि से क्या उसने कांता के उन अंगों का जायजा नहीं लिया था! क्या हैरानी के साथ उसके दिमाग में यह ख्याल नहीं आया था कि दस रुपये में कांता बिल्कुल महंगी नहीं. और दशहरे के दिन बैंक का वह बाबू जो दो रुपये की रिआयत न मिलने पर वापस लौट गया था, बिल्कुल गधा था. ....इन सबके ऊपर क्या एक क्षण के लिए उसकी नसों में एक अजीब किस्म का तनाव पैदा नहीं हो गया था! और उसने एक ऐसी अंगड़ाई लेनी चाही थी, जिससे उसकी हड्डियां तक चटखने लगें ... फिर आखिर क्या वजह थी कि मंगलोर की उस सांवली छोकरी ने उसे मर्द न समझा और सिर्फ़.... खुशिया समझकर उसको अपना सब कुछ देखने दिया.

उसने गुस्से में आकर पान की पीक थूक दी, जिसने सड़क पर कई बेल-बूटे बना दिये. पीक थूक कर वह उठा और... परेशान-सा अपने घर चला गया.

▣

घर में उसने नहा-धोकर नयी धोती पहनी. जिस बिल्डिंग में वह रहता था, उसकी एक दूकान में सैलून था. उसमें जाकर उसने आईने के सामने अपने बालों में कंघी की. फिर एकाएक कुछ सोचकर वह कुर्सी पर बैठ गया और गंभीरता से उसने दाढ़ी मूंड़ने के लिए नाई से कहा. आज चूंकि वह दूसरी बार दाढ़ी मुंड़वा रहा था, इसलिए नाई ने कहा, "अरे भाई खुशिया, भूल गये क्या! सुबह मैंने ही तो तुम्हारी दाढ़ी मूंड़ी थी...?" इस पर उसने बड़ी गंभीरता से चेहरे पर उल्टा हाथ फेरते हुए कहा, "खूंटी अच्छी तरह नहीं निकली.......!"

अच्छी तरह खूंटी निकलवाकर और चेहरे पर पाउडर मलवाकर वह बाहर निकला. सामने टैक्सी-स्टैंड था. ... खास अंदाज में उसने 'शी...शी... करके एक टैक्सी वाले को अपनी ... आकृष्ट किया और उंगली के इ... उसे टैक्सी लाने को कहा.

जब वह टैक्सी में बैठ गया तो ... ने घूमकर उससे पूछा, "कहां ... है साहब ?"

इन चार शब्दों ने और खास ... से 'साहब' शब्द ने खुशिया को ... खुश कर दिया. मुस्कराकर उस... दोस्ताना लहज़े में जवाब दिया, "... पहले तुम लेमिंग्टन रोड से हो... ऑपेरा हाउस की ओर चलो... सम...

लेमिंग्टन रोड का आखिरी ... आ गया तो उसने ड्राइवर को ... दिया, "बायें हाथ मोड़ लो."

टैक्सी बायीं तरफ मुड़ गयी. ... ड्राइवर ने गियर भी नहीं बदला ... खुशिया ने कहा, "उस सामने वाले ... के पास रोक लेना ज़रा."

ड्राइवर ने ठीक खंभे के पास ... रोक दी. दरवाजा खोलकर वह ... निकला और एक पान वाले की ... की तरफ बढ़ गया. यहां से उस... लिया और एक आदमी से जो ... दूकान के पास खड़ा था, चंद बातें ... उसे अपने साथ टैक्सी में बिठा लि... फिर ड्राइवर को 'सीधे ले चलो' ... सीट पर पसर गया.

टैक्सी चलती रही. खुशिया ने ... संकेत किया, ड्राइवर ने उधर ही स्टी... घुमा दिया. कई बाज़ारों से हो... टैक्सी एक गली में दाखिल हुई. ... धुंधली-सी रोशनी थी और कुछ ... आ-जा रहे थे. कुछ लोग फुटपा... बिस्तर बिछाये लेटे थे. उनमें से ... बड़े इतमीनान से चंपी करवा र... टैक्सी जब उन चंपी कराने वालों ... से निकली और एक लकड़ी के बं... मकान के पास पहुंची तो खुशि... ड्राइवर को रोकने के लिए कहा, ... यहां रुक जाओ !"

टैक्सी रुक गयी तो खुशिया ने ... आदमी से, जिसे वह साथ लेकर आ... कहा, "जाओ मैं यहां इंतजार करता ...

वह आदमी बेवकूफों की तरह ... की ओर देखता हुआ टैक्सी से ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकला और सामने मकान में घुस गया.

वह टैक्सी की सीट पर एक टांग दूसरी टांग पर रखकर बैठ गया. जेब से बीड़ी निकालकर सुलगायी और कुछ कश लेकर बाहर सड़क पर फेंक दी. वह अब बहुत बेचैन था, इसलिए उसे लगा कि टैक्सी का इंजन बंद नहीं हुआ. चूंकि उसके सीने में फड़फड़ाहट-सी हो रही थी, इसलिए वह समझा कि ड्राइवर ने बिल बढ़ाने के लिए पैट्रोल छोड़ रखा है. अतः उसने तेजी से कहा, "इंजन चालू रखकर तुम कित्ते पैसे और बढ़ा लोगे?"

ड्राइवर ने घूमकर उसकी ओर देखा और कहा, "सेठ, इंजन तो बंद है."

खुशिया को अपनी गलती का अहसास हुआ तो उसकी बेचैनी और बढ़ गयी. . . . उसने कुछ कहने के बजाय होंठ चबाने शुरू कर दिये. फिर एकाएक उसने ड्राइवर का कंधा हिलाया और कहा, "देखो, अभी एक छोकरी आयेगी. जैसे ही वह अंदर आये, तुम टैक्सी चला देना.....समझे?......घबराना नहीं!"

इतने में सामने वाले मकान से दो आदमी बाहर निकले. आगे-आगे खुशिया का दोस्त था, पीछे-पीछे कांता, जिसने शोख रंग की साड़ी पहन रखी थी.

▣

खुशिया झट से सीट के उस तरफ सरक गया, जिधर अंधेरा था. खुशिया के दोस्त ने टैक्सी का दरवाजा खोला और कांता को अंदर दाखिल करके दरवाजा बंद कर दिया. उसी समय कांता की हैरतअंगेज़ आवाज सुनायी दी, जो किसी कदर चीख से मिलती-जुलती थी, "खुशिया तू?"

"हां मैं. . . . .लेकिन तुझे रुपये मिल गये हैं न?" खुशिया की भरभरी आवाज़ बुलंद हुई, "देखो ड्राइवर, जुहू ले चलो!"

ड्राइवर ने सेल्फ दबाया. इंजन घड़-घड़ाने लगा. वो बात जो कांता ने कही, सुनायी न दे सकी. टैक्सी एक धक्के के साथ आगे बढ़ी और खुशिया के दोस्त को सड़क पर हक्का-बक्का खड़ा छोड़ उस लगभग अंधेरी गली में गायब हो गयी.

इसके बाद किसी ने खुशिया को मोटरों की दूकान के उस पत्थर के चबूतरे पर नहीं देखा! □

● रूपांतर : महावीर

मंटोनामा

वह बड़ा नामवर अफसाना-निगार था

जन्म : ११ मई, १९१२

जन्म स्थान : समराला, जिला : लुधियाना (पंजाब)

पत्नी का नाम : साफिया

औलाद : तीन लड़कियां—निगहत, नजहत और नुसरत

तालीम : अमृतसर, और अलीगढ़

आवास : अमृतसर, अलीगढ़, लाहौर, दिल्ली और बंबई

इंतकाल : १८ जनवरी, १९५५—लाहौर मियां साहब कब्रिस्तान में दफन किये गये.

▣

पहली कहानी: तमाशा (साप्ताहिक 'खल्क', अमृतसर)

पहला कहानी संकलन : चिंगारियां (१९३५)

आखिरी कहानी: कबूतर और कबूतरी

जिन कहानियों पर मुकदमे चले

'काली सलवार', 'बू', 'ठंडा गोश्त', 'धुआं', 'खोल दो', 'ऊपर, नीचे और दरम्यान'.

पुस्तकें

मंटो के अफसाने, चुगद, खाली बोतलें-खाली डिब्बे, सरकंडों के पीछे, जनाज़े, धुआं, स्याह हाशिये, ऊपर नीचे और दरम्यान, आओ, मंटो के ड्रामे, यज़ीद, सड़क के किनारे, बुरके, करवट, लज्जते-संग, तल्ख-तुर्श-शीरीं, फुंदने, तीन औरतें, अफसाने और ड्रामे, नमरूद की खुदाई, बादशाहत का खात्मा, मंटो के मज़ामीन, नूरजहां सरवर जान, ठंडा गोश्त, गंजे फरिश्ते, शिकारी औरतें, इस्मत चुगताई.

▣ **अनुवाद :** वीरा, सरगुज़श्ते असीरा, गोर्की के अफ़साने

□ **'गंजे फरिश्ते' में जिन्ना, आगा हशर, अख्तर शीरानी, मीराजी, इस्मत चुगताई, श्याम नसीम, नरगिस, डिसाई और बाबूराव पटेल आदि के रेखाचित्र हैं.**

□ **अमृतसर में कूचा वकीलां 'मंटोओं का मुहल्ला' था. सआदत कहा करते थे कि 'मंट' कश्मीरी जुबान में तराजू को कहते हैं. कश्मीर में हमारे अब्बा के यहां दौलत तराज में तुल्ती थी. इसी रिवायत से हम 'मंटो' कहलाये.** □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

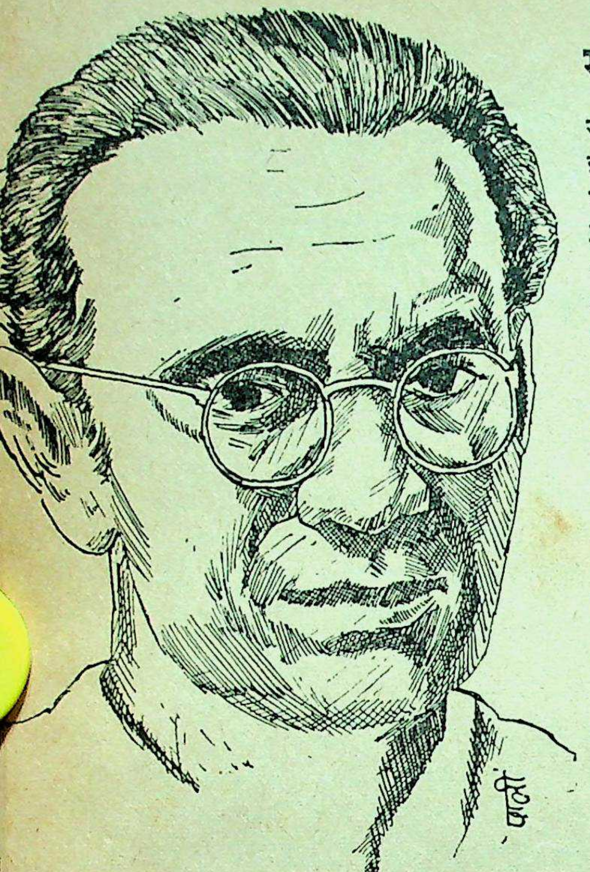

परिचर्चा

मंटो: उर्दू अदब का मसीहा या शैतान?

▣ डा. कमलकिशोर गोयनका

मंटो के जीवन और उसके रचना संसार को लेकर उर्दू अदब में बड़ी चर्चाएं हुई हैं. इन बहसों में दो तरह के अदीब रहे हैं—एक, जिन्होंने मंटो की हक़ीकत निगारी और बेबाक वर्णन के लिए उसे उर्दू अदब का मसीहा घोषित किया और दूसरे, जिन्होंने उसे बीमार ज़ेहन का आदमी, तथा जिंसी भूख एवं नंगेपन का कहानीकार घोषित करते हुए उसे उर्दू अदब का शैतान बनाकर पेश किया. मंटो को शैतान मानने वाले असल में वे लोग थे जो मज़हब के करीब थे और नैतिकता के समर्थक एवं अश्लीलता के विरोधी थे. परंतु यह भी सच है कि ये लोग बाहर से मंटो को गाली देते थे और घर जाकर चुपके से उसके अफ़साने पढ़ते थे. मंटो ने एक बार अपने आलोचकों को उत्तर देते हुए कहा था कि ज़माने के जिस दौर से हम गुज़र रहे हैं, अगर आप उससे वाकिफ़ हैं तो मेरे अफ़साने पढ़िये और अगर आप इन अफ़सानों को बरदाश्त नहीं कर सकते तो इसका मतलब है कि ज़माना नाकाबिले-बरदाश्त है. मेरी तहरीर (लेखन-शैली) में कोई नक्श नहीं, जिस नक्श को मेरे नाम से मनसूब किया जाता है, वह दरअसल मौजूदा निज़ाम का एक नक्श है. मैं हंगामा पसंद नहीं हूं और लोगों के विचारों में उत्तेजना पैदा करना नहीं चाहता. मैं तहज़ीब और तमद्दुन (संस्कृति) और सोसाइटी की चोली क्या उतारूंगा, जो है ही नंगी. मैं उसे कपड़े पहनाने की कोशिश भी नहीं करता, क्योंकि यह मेरा काम नहीं, दर्जियों का काम है. यहां प्रस्तुत हैं मंटो के व्यक्तित्व-कृतित्व पर सुधी विद्वानों की टिप्पणियां—

उसे मसीहा कहा जा सकता है

▣ डा. क़मर रईस

मंटो का नाम ज़ेहन में आते ही उसके कुछ पात्र सामने आने लगते हैं, जैसे जानकी, मम्मद भाई, मोज़िल; और कुछ कहानियां—नया कानून, ठंडा गोश्त, आदि. 'स्याह हाशिये' भी एकदम ज़ेहन में उतर आते हैं जो उसने भारत विभाजन पर लिखे हैं और जिनमें छोटी-छोटी कहानियां दी गयी हैं. मंटो से मेरा सबसे पहले परिचय उस समय हुआ, जब मैं इंटरमिडिएट में पढ़ता था. दोस्तों ने बताया कि सैक्स का मज़ा लेने के लिए उसके अफ़साने पढ़ो. उस उम्र में मैंने सैक्स के लिए ही मंटो को पढ़ा था, क्योंकि उस समय उम्र ही ऐसी थी, परंतु आज महसूस करता हूं कि वह दृष्टिकोण गलत था. मंटो के अफ़सानों में केवल सैक्स नहीं है. वह केवल पच्चीस प्रतिशत है और शेष भाग में समाज के गिरे हुए लोगों—जल्लाद, वेश्या, एजेंट, दुकानदार, मज़दूर, साधु, क्लर्क, शराबी आदि की कहानियां आती हैं, जिनमें इंसान, घटना और भावना इस प्रकार से संश्लिष्ट रूप में व्यक्त हुई है कि ज़िंदगी की हकीकत सामने आ जाती है. मंटो ने वेश्यावृत्ति, सांप्रदायिकता आदि कुछ समस्याओं को जिस वैज्ञानिक तटस्थता से पेश किया है, उसे देखते हुए उसे मसीहा कहा जा सकता है. वेश्या की घिनौनी ज़िंदगी को उसने घिनौने रूप में ही पेश किया, परंतु तवायफ़ के अंदर बैठे इंसान को भी उसने 'डिस्कवर' किया, जो उर्दू अफ़साने में एक नयी बात थी. यह सच है कि नैतिकतावादियों एवं प्रगतिशील लेखकों ने उसकी कटु आलोचना की लेकिन

कमल किशोर

क़मर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू अदब का शैतान हर्गिज नहीं कहा जा सकता. उसने बहुत-सी कहानियां लोगों को 'इरिटेट' करने तथा उन्हें झकझोरने के लिए लिखी और उनका वैसा ही असर भी हुआ. लोग झुंझलाते थे, गाली देते थे, परंतु घर जाकर कहानियां पढ़ते थे. मंटो का यह योगदान क्या कम है कि जो लोग उसे शैतान कहते थे, वे भी उसे पढ़ते थे. फिर भी, उसका योगदान कला की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है. उसके अफ़साने का आर्ट फ्रेंच यथार्थवादियों के आर्ट के बहुत करीब है. मंटो की गद्य-शैली उर्दू में सबसे अच्छी गद्य-शैली है और आज़ादी के बाद उभरी हुई लेखकों की पीढ़ी पर मंटो की कला-शैली का गहरा असर पड़ा है. नयी उर्दू कहानी पर प्रेमचंद का असर कहीं दिखलायी नहीं देता. मंटो की कला और शैली का असर ही सर्वाधिक है.

मैं उसे एक इंसान मानता हूं

■ सैयद गुलाम समनानी

मंटो का नाम सुनते ही मेरे मन में जो पहली प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है, वह है कि मंटो उर्दू में एक सुधारवादी लेखक था. एक चीज अश्लील हो सकती है, लेकिन उसका उद्देश्य अश्लील नहीं हो सकता. मंटो का उद्देश्य भी समस्याओं का चित्रण और सुधारवादी है. पाकिस्तान में उसकी तीन किताबों—'स्याह हाशिये', 'ठंडा गोश्त' और 'सरकंडे के पीछे' पर मुकदमा चला और प्रतिबंध लगाया गया, परंतु उस पर नंगेपन और अश्लीलता का इल्ज़ाम लगाना एकदम गलत बात है. उसका एक छोटा अफ़साना है, 'खोल दो.' हो सकता है, साहित्य को न समझने वाला तथा सैक्स के लिए ही पढ़ने वाला पाठक उसे अश्लील समझकर मज़ा ले, परंतु यह कहानी उद्देश्य की दृष्टि से बहुत ही अर्थवान है. इस कहानी में एक लड़की है, जो बेहोशी के आलम में डाक्टर के सामने लेटी है. डाक्टर अपने दूसरे साथी से इशारा करते हुए खिड़की खोल देने को कहता है, तभी 'खोल दो' शब्द सुनकर उस बेहोश लड़की का हाथ अपनी सलवार खोलने के लिए उठ जाता है. क्या लड़की की यह मन:स्थिति सारी कहानी नहीं कह देती! क्या मंटो का उद्देश्य यहां साफ नहीं हो जाता! मंटो

जिस बात को कहता है, उसके बाहर से अश्लील लगने पर भी वह उसमें मज़ा नहीं लेता. अंग्रेजी और फ्रांसीसी साहित्य में इस तरह का साहित्य बहुत लिखा गया है. 'लेडीज़ चटर्जीस लवर' और 'लोलिता' इसी तरह की किताबें हैं जो समाज के घिनौने रूप को उजागर करती हैं. और उर्दू साहित्य एवं संस्कृति में तो इस प्रकार का वर्णन नया नहीं है. उर्दू शायरी तथा 'तिलिस्मे होशरुबा' आदि में ऐसे बहुत उदाहरण हैं जहां भावनाओं को उत्तेजित करना ही उद्देश्य है. यदि हम पुराने शायरों को अनैतिक एवं शैतान कहने को तैयार हों, तो मंटो भी उसी कोटि का एक लेखक है. पुराने शायरों और मंटो में सबसे बड़ा अंतर यह है कि उनका कोई उद्देश्य नहीं था, जबकि मंटो में सभी कुछ उद्देश्य के साथ जुड़ा हुआ है. इसी कारण मैं उसे न मसीहा कहूंगा और न शैतान. मैं उसे एक इंसान मानता हूं, क्योंकि उसने अपनी कहानियों में इंसानी कमजोरियों एवं खूबियों का चित्रण किया है. मंटो खुद 'सुपर मैन' नहीं है, इस कारण उसके पात्र भी 'सुपर मैन' नहीं हैं. वह एक सामान्य आदमी है, उसके पात्र भी उसी तरह से सामान्य आदमी—अच्छाई और बुराई के पुतले हैं. उसकी कला भी सीधी-सरल है. वह बिंब भी समाज से लेता है. इसी कारण मंटो उर्दू के अस्तित्ववादी लेखकों में तो सबसे बड़ा लेखक है.

शैतान कहने को तैयार नहीं

■ अनवार अहमद खां

मंटो को मैंने सबसे पहले तब पढ़ा था, जब मैं उर्दू से एम. ए. कर रहा था. उसके बाद फिर कई बार मैंने मंटो को पढ़ा. उसके कुछ अफ़साने—नया कानून, खुशिया, डरपोक, सरकंडों के पीछे, धुआं, ब्लाउज़, हतक, काली सलवार, ठंडा गोश्त आदि आज भी मेरे मस्तिष्क में जिंदा तस्वीरों की तरह विद्यमान हैं. उर्दू के कुछ आलोचकों ने उसे अश्लील अफ़साने लिखने वाला एवं बीमार ज़ेहन का आदमी कहा है. इन आरोपों से मैं उस समय भी सहमत नहीं था, जब मैंने एक छात्र के रूप में उसके अफ़साने पढ़े थे. मंटो के संदर्भ में अश्लीलता और जिंसी भूख क्या है, यह समझना जरूरी है. स्त्री-पुरुष का शारीरिक संबंध एक प्राकृतिक नियम है. फिर उसे चित्रित करना कैसे अश्लील हो सकता है? मैं नहीं मानता कि इस हकीकत को बयान करना अश्लीलता और नंगापन है. मंटो की कहानियां और किरदार किसी दूसरी दुनिया की चीज नहीं हैं. वे इसी समाज और परिवेश में से चुने गये हैं. उसने समाज की हकीकत को ही पाठक के

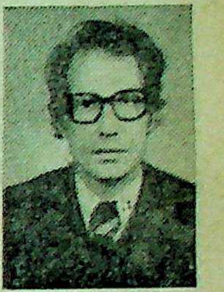

सामने रखा है. उसने हकीकत बयानी से काम लिया है अर्थात् उसने हकीकत की अक्कासी की है. हकीकत हमेशा तल्ख होती है, इसलिए लोग वो तल्खी बर्दाश्त नहीं कर सके.

मंटो ने सिर्फ जिंसयात पर ही नहीं लिखा, देश की आज़ादी पर भी उसके अफ़साने मिलते हैं. 'नया कानून' के किरदार मंगू कोचवान में अंग्रेजों के खिलाफ नफरत है. आज़ादी मिलने पर एक अंग्रेज जब उसे छड़ी छुआ देता है, तो वह कोचवान मुक्का मारता है. परंतु मंटो में गांधी के समान सियासत नहीं है. मंटो ने साफ लिखा है कि सियासत से मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है. लीडरों और दवाफरोशों को मैं एक ही ज़ुमारे (जन-समूह) में शुमार करता हूं. ये दोनों ही पेशे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही मंटो को शैतान या मसीहा कहने की बात, तो मैं उसे शैतान कहने को कतई तैयार नहीं हूं. उसने समाज को गहरी नज़र से देखा और बड़े ही कलात्मक रूप में पेश किया. उसकी हकीकत बयानी ही उसे मसीहा बनाने के लिए काफी है.

मसीहा उसे नहीं कहूंगी

■ जाहिदा ज़ैदी

मंटो का नाम किस परिस्थिति और किस संदर्भ में लिया जा रहा है, मंटो के संबंध में पड़ी पुरानी बहस को क्यों छेड़ा जा रहा है और हिंदी के अदीब इस बहस में इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहे हैं? मंटो का संबंध किसी विशेष गुट या गिरोह से नहीं है. उसका संबंध चारों ओर फैली जिंदगी से है, अतः मंटो हिंदी वालों का भी उतना ही है, जितना उर्दू वालों का. मैंने मंटो को अपनी युवावस्था में पढ़ा था. अदब से गहरी दिलचस्पी थी, परंतु उस समय मंटो के नाम से हुए हंगामों तथा मुदकमों से वाकिफ नहीं थी. यह सच है कि मंटो ने सेक्स पर काफ़ी ज़ोर दिया है, लेकिन मैं उसे बुरा नहीं समझती. वैसे भी मंटो के अफ़सानों में सैक्स प्रमुख नहीं है. उसने जीवन के दूसरे पहलुओं पर भी उतना ही ध्यान दिया है और पाठकों को भी ध्यान देने के लिए उत्तेजित किया है. उसके कई स्मरणीय पात्रों में वेश्याएं आती हैं, जो वेश्या होने के साथ इंसान और औरत की हैसियत से भी हमारे सामने आती हैं. सुल्ताना की तनहाई, परेशानियां और मज़हब के बारे में सीधे-सादे विचार, सुगंधी की खुद्दारी, निश्छलता और अपने ग्राहकों से हमदर्दी, जानकी का मुहब्बत भरा दिल और अपने आशिकों की खिद-मत और देखमाल आदि उन्हें इंसान एवं औरत के रूप में पेश करते हैं. मंटो को बदनाम तो वही लोग करते हैं जो हर सच्चाई पर बिदकते हैं या फिर वे लोग जो सेक्स का ज़िक्र आते ही इतने मंत्र-मुग्ध हो जाते हैं कि और कोई बात देख ही नहीं सकते. ये लोग उसके मज़े भी लूटते हैं और उसके ख़तरनाक होने का रोना भी रोते हैं. मंटो एक अनुभूतिशील दिल का मालिक है. ज़िंदगी को उसने करीब से और गहराई से देखा है. उसके किरदार बेहद मामूली इंसान हैं, लेकिन मंटो ने उन्हें बड़ी होशियारी और फन की नज़ाकतों के साथ पेश किया है. उसने अपने किरदारों को इंतहाई हमदर्दी देने के बावजूद अपनी तटस्थता को कायम रखा है. किरदारों का हालात से समझौता करना या दुनिया से पलायन कर जाना, दोनों ही स्थितियों में उन्हें मंटो की हमदर्दी मिलती है. उसके बेहतरीन अफ़सानों में कामेडी-ट्रेजडी का मिला-जुला अंदाज़ है, जिसने उसके फन को बड़ा दिलकश और आधुनिक बना दिया है. उसके फन की एक और विशेषता है—'ब्रेविटि', अर्थात् वह इशारों में बात कह जाता है और कुछ बातें अनकही छोड़ देता है. उसके अफ़सानों के अंत में अक्सर एक सवाल पैदा होता है, जिसके कई जवाब हो सकते हैं. लेकिन ये सवाल हमें ज़िंदगी की बुनियादी हकीकतों से दो-चार नहीं करते, बल्कि उसी महदूद दायरे में वापस ले आते हैं जो मंटो के अफ़सानों की दुनिया है. मेरी निगाह में मंटो 'शैतान' तो हर्गिज नहीं था, क्योंकि यह ज़िंदगी आदम और हव्वा की जन्नत तो नहीं है, जहां इंसान की मासूमियत और पाकीज़गी के आगे फरिश्तों को भी सिर झुकाना पड़ा था. मंटो तो हमारी-आपकी तरह उस खोयी हुई जन्नत का वासी है जो पहले से ही गुनाहों में लिप्त है. परंतु उसने मासूम रूहों को गुमराह नहीं किया. फिर भी 'मसीहा' उसे नहीं कहूंगी, क्योंकि मंटो ने किसी मुर्दा जिस्म में जान नहीं डाली. उर्दू अफ़साना एक ज़िंदा हकीकत थी. मंटो ने अवश्य ही उसका रंग-रूप निखारा, ऊंचाइयों तक ले गया, लेकिन एक मसीहा की तरह उसकी नजात का ज़रिया न बन सका, क्योंकि नजात की मंज़िल अभी दूर थी. □

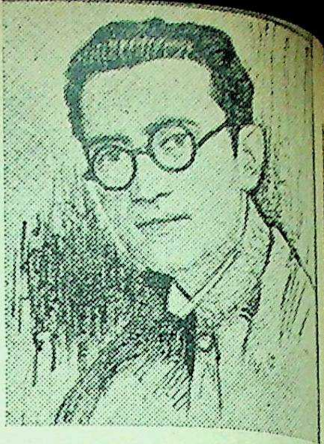

मंटो की व्यंग्य रचनाएं

देख कबीरा रोया

"भाइयो! बाज-याफ़्ता औरतों का मसला हमारा सबसे बड़ा मसला है. इसका हल हमें सबसे पहले सोचना है. अगर हम गाफ़िल रहे, तो ये औरतें वेश्यालयों में चली जायेंगी. फाहिशा बन जायेंगी. सुन रहे हो, फाहिशा बन जायेंगी . . . तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम इनको इस खौफ़नाक भविष्य से बचाओ और अपने घरों में उनके लिए जगह पैदा करो . . . अपनी, अपने भाई की या अपने बेटे की शादी करने से पहले तुम्हें इन औरतों को हरगिज़ भूलना नहीं चाहिये!"

कबीर फूट-फूटकर रोने लगा. तकरीर करने वाला रुक गया. कबीर की तरफ इशारा करके उसने बुलंद आवाज़ में हाज़रीन से कहा, "देखो, इस शख़्स के दिल पर कितना असर हुआ है!"

कबीर ने रुंधी आवाज़ में कहा, "शब्दों के बादशाह! तुम्हारी तकरीर ने मेरे दिल पर कुछ असर नहीं किया. मैंने जब सोचा कि तुम किसी मालदार औरत से शादी करने की खातिर अभी तक कुवांरे बैठे हो तो मेरी आंखों में आंसू आ गये!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो की कहानियां : छः

दो कौमें

मुख्तार ने शारदा को पहली बार झिरियों में से देखा. वह ऊपर कोठे पर कटी हुई पतंग लेने गया, तो उसे झिरियों में से एक झलक दिखायी दी. सामने वाले मकान की ऊपरी मंज़िल की खिड़की खुली थी. एक लड़की डोंगा हाथ में लिये नहा रही थी. मुख्तार को बड़ा विस्मय हुआ कि यह लड़की कहां से आ गयी, क्योंकि सामने वाले मकान में कोई लड़की नहीं थी. जो थी, ब्याही जा चुकी थी. केवल रूप कौर थी. उसका पिलपिला पति कालूमल था. उनके तीन लड़के थे और बस !

मुख्तार ने पतंग उठायी और ठिठक कर रह गया. लड़की

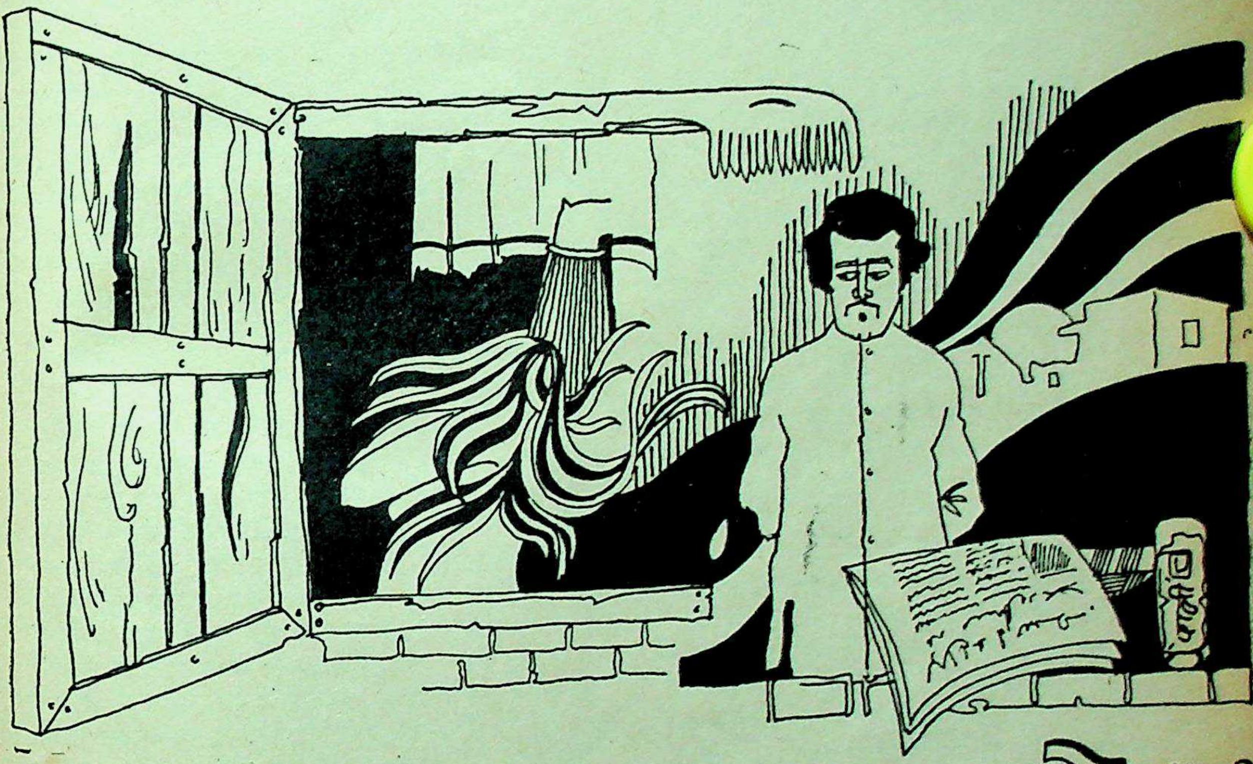

बहुत खूबसूरत थी. उसके नंगे बदन पर सुनहरे रोएं थे. उनमें फंसी हुई पानी की नन्हीं-नन्हीं बूंदें चमक रही थीं. उसका रंग हल्का सांवला था. सांवला भी नहीं, तांबे के रंग जैसा. पानी की नन्हीं-नन्हीं बूंदें ऐसी लगती थीं, जैसे उसका बदन पिघलकर बूंद-बूंद बनकर गिर रहा था.

मुख्तार ने झिरी के सुराखों के साथ अपनी आंखें जमा दीं और उस लड़की को, जो डोंगा हाथ में लिये नहा रही थी, दिलचस्पी और गौर से देखना शुरू कर दिया. उसकी उमर अधिक से अधिक सोलह वर्ष की थी. गीले सीने पर उसकी छोटी-छोटी गोल छातियां, जिन पर पानी की बूंदें फिसल रही थीं, बड़ी चित्ताकर्षक थीं. उसे देखकर मुख्तार के दिल-दिमाग में कामभावनाएं उत्पन्न नहीं हुईं. एक जवान, खूबसूरत और बिल्कुल निरावरण लड़की उसकी नज़रों के सामने थी. होना यह चाहिए था कि मुख्तार के अंदर कामोत्तेजना व्याप्त हो जाती, पर वह बड़ी तल्लीनता से उसे देख रहा था, जैसे किसी चित्रकार का चित्र देख रहा हो.

लड़की के निचले होंठ के अंतिम कोने पर बड़ा-सा तिल था. . .बेहद गंभीर . .बेहद संजीदा, जैसे वह अपने अस्तित्व से अनभिज्ञ है, पर दूसरे उसके अस्तित्व से अवगत हैं. . .केवल इस हद तक कि उसे वहां होना चाहिए था, जहां कि वह था.

बांहों पर सुनहरे रोएं पानी की बूंदों के साथ लिपटे हुए चमक रहे थे. उसके सिर के बाल सुनहरे नहीं, भूसले थे, जिन्होंने शायद सुनहरे होने से इंकार कर दिया था. शरीर सुडौल और गदराया हुआ था, पर उसे देखने से उत्तेजना पैदा नहीं होती थी. मुख्तार देर तक झिरी के साथ आंखें जमाये रहा.

लड़की ने बदन पर साबुन मला. मुख्तार तक उसकी खुशबू पहुंची. सलोने, तांबे जैसे रंग वाले बदन पर सफेद झाग बड़े सुहाने लगते थे. फिर जब यह झाग पानी के प्रवाह से फिसले तो मुख्तार ने महसूस किया, जैसे उस लड़की ने अपना बुलबुलों का लिबास बड़े इतमीनान से उतारकर एक ओर रख दिया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नान से निपटकर लड़की ने तौलिये से अपना बदन पोंछा. बड़ी शांति और निश्चितता से धीरे-धीरे कपड़े पहने. खिड़की के डंडे पर दोनों हाथ रखे और सामने देखा. एकदम उसकी आंखें लज्जा की झीलों में डूब गयीं. उसने खिड़की बंद कर दी. मुख्तार हठात् हंस पड़ा. लड़की ने फौरन खिड़की के पट खोले और बड़े गुस्से में झिरी की ओर देखा. मुख्तार ने कहा, "मैं कसूरवार नहीं. आप खिड़की खोलकर क्यों नहा रही थीं."

लड़की ने कुछ नहीं कहा. उद्विग्न नज़रों से झिरी को देखा और खिड़की बंद कर ली.

चौथे दिन रूप कौर आयी. उसके साथ वही लड़की थी. मुख्तार की मां और बहन दोनों सिलाई और क्रोशिये के काम में प्रवीण थीं. गली की अधिकांश लड़कियां उनसे यह काम सीखने के लिए आया करती थीं. रूप कौर भी इस लड़की को इसी मतलब से लायी थी, क्योंकि उसे क्रोशिये के काम का बहुत शौक था. मुख्तार अपने कमरे से निकलकर सेहन में आया, तो उसने रूप कौर को प्रणाम किया. लड़की पर उसकी नजर पड़ी, तो वह सिमट-सी गयी. वह मुस्कराकर वहां से चला गया.

लड़की रोज़ाना आने लगी. मुख्तार को देखती, तो सिमट जाती. धीरे-धीरे उसकी यह प्रतिक्रिया दूर हुई और उसके दिमाग से यह ख़्याल कुछ लुप्त हुआ कि मुख्तार ने उसे नहाते हुए देखा था.

मुख्तार को मालूम हुआ कि उसका नाम शारदा है. रूप कौर के चाचा की लड़की है. अनाथ है. चेचोकी-मलिया में एक गरीब रिश्तेदार के साथ रहती थी. रूप कौर ने उसे अपने पास बुला लिया. इंट्रेंस पास है. बड़ी बुद्धिमान है, क्योंकि उसने क्रोशिये का मुश्किल से मुश्किल काम चुटकियों में सीख लिया था.

▣

दिन बीतते गये. इस दौरान मुख्तार ने महसूस किया कि वह शारदा के प्रेम में फंस गया है. यह सब कुछ धीरे-धीरे हुआ. जब मुख्तार ने उसे पहली बार झिरी में से देखा था, तो उस समय उसके सामने एक दृश्य था—बड़ा मनमोहक दृश्य, पर अब शारदा धीरे-धीरे उसके दिल में बैठ गयी थी. मुख्तार ने कई बार सोचा था कि यह प्रेम का मामला बिल्कुल गलत है, इसलिए कि शारदा हिंदू है. मुसलमान कैसे एक हिंदू लड़की से प्रेम करने का साहस कर सकता है! मुख्तार ने स्वयं को बहुत समझाया, पर वह अपनी प्रेम की भावना को मिटा न सका.

एक दिन घर में कोई नहीं था. मुख्तार की मां और बहन दोनों किसी रिश्तेदार के चालीसवें पर गयी हुई थीं. शारदा नित्य की तरह अपना थैला उठाये सुबह दस बजे आयी. मुख्तार सेहन में चारपाई पर लेटा अखबार पढ़ रहा था. शारदा ने उससे पूछा, "बहन जी कहां हैं?"

मुख्तार के हाथ कांपने लग, "वह. . . . वह कहीं बाहर गयी है."

शारदा ने पूछा, "माता जी ?"

मुख्तार उठकर बैठ गया, "वह उसके साथ गयी हैं."

"अच्छा!" कहकर शारदा ने तनिक घबराई हुई नज़रों से मुख्तार को देखा और नमस्ते करके चलने लगी. मुख्तार ने उसे रोका, "ठहरो शारदा!"

शारदा को जैसे बिजली के करंट ने छू लिया. चौंककर रुक गयी, "जी?"

मुख्तार चारपाई पर से उठा, "बैठ जाओ. वह लोग अभी आ जायेंगे."

"जी नहीं. . . .मैं जाती हूं." कहकर भी शारदा खड़ी रही.

मुख्तार ने बड़े साहस से काम लिया. आगे बढ़ा. उसकी एक कलाई पकड़ी और खींचकर उसके होंठों को चूम लिया. यह सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि मुख्तार और शारदा दोनों को एक क्षण के लिए बिल्कुल पता न चला कि हुआ क्या है! उसके बाद दोनों कांपने लगे. मुख्तार ने केवल इतना कहा, "मुझे माफ़ कर देना!"

शारदा खामोश खड़ी रही. उसका तांबे जैसा रंग सुर्ख हो गया. होंठों में हल्की-सी कंपकंपाहट थी, जैसे वह छेड़े जाने पर शिकायत कर रहे हैं. मुख्तार अपनी क्रिया और उसके परिणाम को भूल गया. उसने एक बार फिर शारदा को अपनी ओर खींचा और सीने के साथ भींच लिया. शारदा ने प्रतिरोध न किया. वह केवल विस्मय-मूर्ति बनी हुई-सी एक प्रश्न बन गयी थी... एक ऐसा प्रश्न, जो स्वयं से किया गया हो. वह शायद स्वयं से पूछ रही थी. . .यह क्या हुआ है? यह क्या हो रहा है? क्या उसे होना चाहिए था? क्या ऐसा किसी और से भी हुआ है?

मुख्तार ने उसे चारपाई पर बिठा लिया और पूछा, "तुम बोलती क्यों नहीं हो शारदा?"

शारदा के दुपट्टे के पीछे उसका सीना धड़क रहा था. उसने कोई उत्तर न दिया. मुख्तार को उसका यह मौन बहुत चिंताजनक महसूस हुआ, "बोलो शारदा, अगर तुम्हें मेरी यह हरकत बरी लगी है तो कह दो. . . . .खुदा की कसम, मैं माफ़ी मांग लूंगा. तुम्हारी तरफ निगाह उठाकर नहीं देखूंगा. मैंने कभी ऐसी हिम्मत न की होती, लेकिन न जाने मुझे क्या हो गया है! . दरअसल. . . दरअसल मुझे तुमसे मुहब्बत है!"

शारदा के होंठ हिले, जैसे उन्होंने शब्द 'मुहब्बत' उच्चारण करने का प्रयत्न किया हो. मुख्तार ने बड़ी गर्मजोशी से कहना शुरू किया, "मुझे मालूम नहीं, तुम मुहब्बत का मतलब समझती हो कि नहीं . . . मैं खुद इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं रखता. सिर्फ इतना जानता हूं कि तुम्हें चाहता हूं. तुम्हारी सारी हस्ती को अपनी इस मुट्ठी में ले लेना चाहता हूं, अगर तुम चाहो तो मैं अपनी सारी जिंदगी तुम्हारे हवाले कर दूंगा. शारदा, तुम बोलती क्यों नहीं हो?"

शारदा की आंखें स्वप्निल हो गयीं. मुख्तार ने फिर बोलना शुरू कर दिया, "मैंने उस दिन झिरी में से तुम्हें देखा. नहीं... तुम मुझे खुद दिखायी दी. यह ऐसा दृश्य था, जो मैं कयामत तक नहीं भूल सकता. तुम शरमाती क्यों हो, मेरी निगाहों ने तुम्हारी खूबसूरती चुरायी तो नहीं. . . मेरी आंखों में सिर्फ उस दृश्य की तस्वीर है. तुम उसे ज़िंदा कर दो तो मैं तुम्हारे पांव चूम लूंगा." यह कहकर मुख्तार ने शारदा का एक पांव चूम लिया.

वह कांप गयी. चारपाई पर से एकदम उठकर उसने कांपते स्वर में कहा, "यह आप क्या कर रहे हैं. हमारे धर्म में. . . . ."

मुख्तार खुशी से उछल पड़ा, "धर्म-वर्म को छोड़ो. प्रेम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म में सब ठीक है." यह कहकर उसने शारदा को चूमना चाहा, पर वह तड़पकर एक ओर हटी और बड़े शर्मीले अंदाज़ में मुसकराती हुई भाग गयी. मुख्तार ने चाहा कि वह उड़कर ममटी पर पहुंच जाये. सेहन में कूदे और नाचना शुरू कर दे.

दूसरे दिन वह कोठे पर चढ़ा. झिरी में से झांका तो देखा कि शारदा खिड़की के पास खड़ी बालों में कंघी कर रही है. मुख्तार ने उसे आवाज़ दी, "शारदा!"

शारदा चौंकी. कंघी उसके हाथ से छूटकर नीचे गली में जा गिरी. मुख्तार हंसा. शारदा के होंठों पर भी मुसकराहट पैदा हुई. मुख्तार ने उससे कहा, "कितनी डरपोक हो तुम. . . हौले से आवाज़ दी और तुम्हारी कंघी छूट गयी."

शारदा ने कहा, "अब लाकर दीजिए नयी कंघी मुझे. . . यह तो मोरी में जा गिरी है." मुख्तार ने जवाब दिया, "अभी लाऊं!"

शारदा ने फौरन कहा, "नहीं नहीं, मैंने मज़ाक किया है."

"मैंने भी मज़ाक किया था. तुम्हें छोड़कर मैं लेने जाता? . . .कभी नहीं." शारदा मुसकरायी, "मैं बाल कैसे बनाऊं?"

मुख्तार ने झिरी के सूराखों में अपनी उंगलियां डालीं, "यह मेरी उंगलियां ले लो."

शारदा हंसी. मुख्तार का जी चाहा कि वह अपनी सारी उमर इस हंसी की छाया में बिता दे, "शारदा, खुदा की कसम, तुम हंसती हो, तो मेरा रोआं-रोआं प्रफुल्लित हो जाता है. तुम क्यों इतनी प्यारी हो ? क्या दुनिया में कोई और लड़की भी तुम जितनी प्यारी होगी! यह कमबख्त झिरी. . . .यह मिट्टी के ज़लील परदे. जी चाहता है, इन्हें तोड़-फोड़ दूं."

शारदा ने कहा, "आप बातें बड़ी अच्छी करते हैं."

"तो मुझे इनाम दो. मुहब्बत की एक हल्की-सी निगाह इन झिरियों से मेरी तरफ फेंक दो. मैं इसे अपनी पलकों से उठा कर अपनी आंखों में छुपा लूंगा." मुख्तार ने शारदा के पीछे दूर एक छाया-सी देखी और फौरन झिरी से हट गया. थोड़ी देर बाद वापस आया, तो खिड़की खाली थी. शारदा जा चुकी थी.

▣

धीरे-धीरे मुख्तार और शारदा दोनों घी-शक्कर हो गये. तनहाई का मौका मिलता, तो देर तक प्यार-मुहब्बत की बातें करते रहते. एक दिन रूप कौर और उसका पति लाला कालूमल कहीं बाहर गये हुए थे. मुख्तार गली में से गुजर रहा था कि उसको एक कंकर लगा. उसने ऊपर देखा. शारदा थी. उसने हाथ के इशारे से उसे बुलाया.

मुख्तार उसके पास पहुंच गया. पूरा एकांत था. खूब घुल-मिलकर बातें हुईं. मुख्तार ने उससे कहा, "उस दिन मुझसे गुस्ताखी हुई थी और मैंने माफी मांग ली थी. आज फिर गुस्ताखी करने का इरादा रखता हूं, पर माफी नहीं मांगूंगा." और अपने होंठ शारदा के कंपकंपाते होंठों पर रख दिये.

शारदा ने शर्मीली शरारत से कहा, "अब माफी मांगिए!"

"जी नहीं. अब यह होंठ आपके नहीं, मेरे हैं. क्या मैं झूठ कहता हूं!"

शारदा ने निगाहें नीची करके कहा, "यह होंठ क्या, मैं भी आप की हूं."

मुख्तार एकदम संजीदा हो गया, "देखो शारदा. हम इस समय एक ज्वालामुखी पहाड़ पर खड़े हैं. तुम सोच लो, समझ लो, मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूं, खुदा की कसम खा कर कहता हूं कि तुम्हारे सिवा मेरी जिंदगी में और कोई औरत नहीं आयेगी. मैं कसम खाता हूं कि जिंदगी भर तुम्हारा रहूंगा. मेरी मुहब्बत साबित-कदम रहेगी . . . क्या तुम भी इसकी प्रतिज्ञा करती हो ?"

शारदा ने अपनी नज़रें उठाकर मुख्तार की ओर देखा, "मेरा प्रेम सच्चा है."

मुख्तार ने उसे सीने के साथ भींच लिया और कहा, "ज़िंदा रहो. सिर्फ मेरे लिए, मेरी मुहब्बत के लिए. खुदा की कसम शारदा, अगर तुम्हारा प्रेम मुझे न मिलता, तो मैं अवश्य ही आत्म-हत्या कर लेता. तुम मेरे आलिंगन में हो तो मुझे ऐसा महसूस होता है कि सारी दुनिया की खुशियों से मेरी झोली भरी हुई है. मैं बहुत खुशकिस्मत हूं."

▣

देर तक दोनों एक दूसरे में खोये रहे. जब मुख्तार वहां से गया, तो उसकी आत्मा एक नये और सुहाने स्वाद से आनंदित थी. सारी रात वह सोचता रहा. दूसरे दिन कलकत्ता चला गया, जहां उसका बाप कारोबार करता था. आठ दिन के बाद वापस आया.

शारदा रोज की तरह क्रोशिये का काम सीखने निश्चित समय पर आयी. उसकी नज़रों ने उससे कई बातें कीं. कहां गायब रहे इतने दिन? मुझसे कुछ न कहा और कलकत्ते चले गये? मुहब्बत के बड़े दावे करते थे? . . . .मैं नहीं बोलूंगी तुमसे. . . मेरी ओर क्या देखते हो! क्या कहना चाहते हो मुझसे?

मुख्तार बहुत कुछ कहना चाहता था, पर तनहाई नहीं थी. वह उससे काफी लंबी बातचीत करना चाहता था. दो दिन बीत गये. अवसर न मिला. नज़रों ही नज़रों में गूंगी बातें होती रहीं, आखिर तीसरे दिन शारदा ने उसे बुलाया. मुख्तार बहुत खुश हुआ. रूप कौर और उसका पति लाला कालूमल घर में नहीं थे.

शारदा सीढ़ियों में मिली. मुख्तार ने वहीं उसे सीने के साथ लगाना चाहा. वह तड़पकर ऊपर चली गयी. नाराज़ थी. मुख्तार ने उससे कहा, "देखो मेरी जान ! मेरे पास बैठो ! मैं तुमसे बहुत जरूरी बात करना चाहता हूं, ऐसी बातें, जिनका हमारी ज़िंदगी से बड़ा गहरा संबंध है."

शारदा उसके पास पलंग पर बैठ गयी, "तुम बात टालो नहीं. . . . . बताओ, मुझे बताये बिना कलकत्ता क्यों गये? . . . सच. . . . मैं बहुत रोयी."

मुख्तार ने बढ़कर उसकी आंखें चूमीं, "उस दिन जब मैं गया तो सारी रात सोचता रहा. जो कुछ उस दिन हुआ, उसके बाद यह सोच-विचार जरूरी था. हमारी हैसियत मियां-बीवी की थी. मैंने गलती की. तुमने कुछ न सोचा. हमने एक ही छलांग में कई मंज़िलें तय कर लीं और यह सोचा ही नहीं कि हमें जाना किस तरफ है. . . समझ रही हो न शारदा!"

शारदा ने आंखें झुका लीं, "जी हां."

"मैं कलकत्ता इसलिए गया था कि अब्बाजी से मशवरा करूं. तुम्हें सुनकर खुशी होगी कि मैंने उन्हें राज़ी कर लिया है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

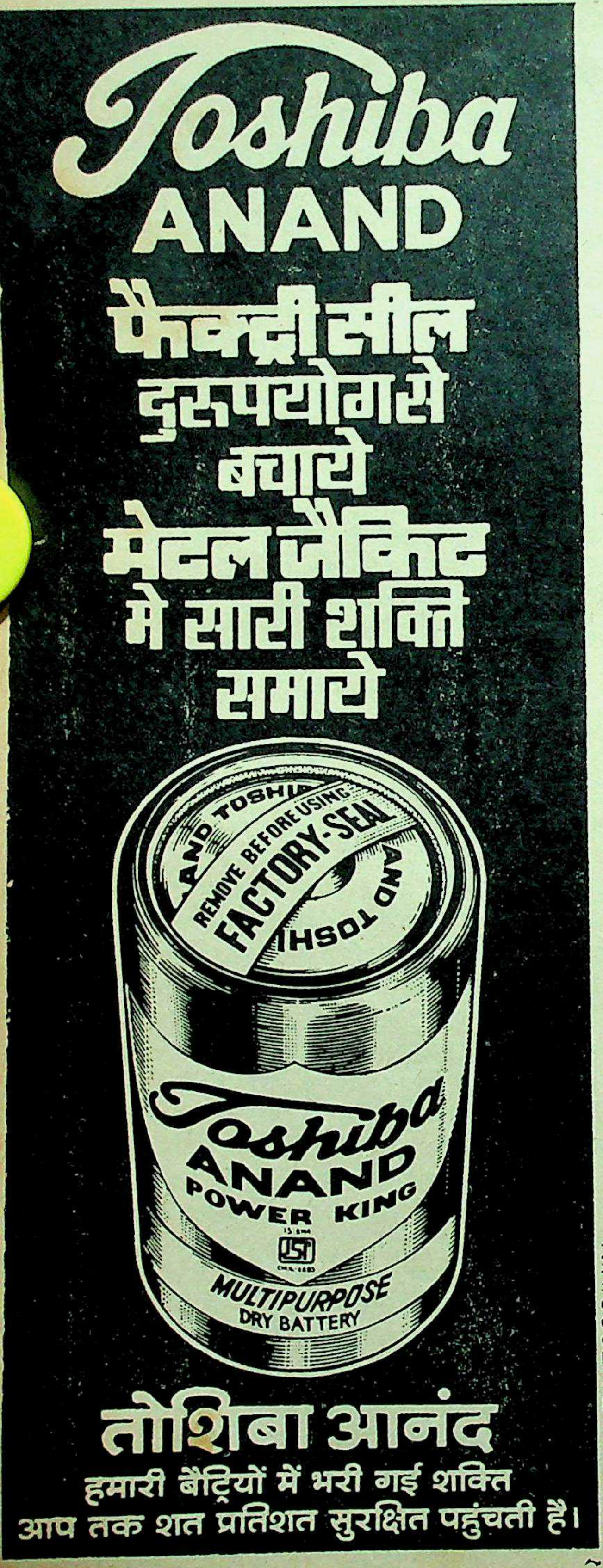

मुख्तार की आंखें खुशी से चमक उठीं. शारदा ने दोनों हाथों को अपने हाथों में लेकर उसने कहा, "मेरे दिल का सारा बोझ हल्का हो गया है. मैं अब तुमसे शादी कर सकता हूं."

शारदा ने हौले से कहा, "शादी !"

"हां, शादी."

शारदा ने पूछा, "कैसे हो सकती है हमारी शादी?"

मुख्तार मुस्कराया, "इसमें मुश्किल ही क्या है...तुम मुसलमान हो जाना."

शारदा एकदम चौंकी, "मुसलमान!"

मुख्तार ने बड़े इतमीनान से कहा, "हां ! हां ! इसके अलावा और हो ही क्या सकता है. . . .मुझे मालूम है कि तुम्हारे घर वाले बड़ा हंगामा मचायेंगे, लेकिन मैंने उसका इंतज़ाम कर लिया है. हम दोनों यहां से गायब हो जायेंगे. सीधे कलकत्ते चलेंगे. बाकी काम अब्बा जी के सुपुर्द है. जिस रोज़ वहां पहुंचेंगे, उसी रोज़ मौलवी बुलाकर तुम्हें मुसलमान बना देंगे. शादी भी उसी वक्त हो जायेगी."

शारदा के होंठ जैसे किसी ने सी दिये. मुख्तार ने उसकी तरफ देखा, "खामोश क्यों हो गयीं ?"

शारदा न बोली. मुख्तार को बड़ी उलझन हुई, "बताओ शारदा, क्या बात है?"

शारदा ने मुश्किल से इतना कहा, "तुम हिंदू हो जाओ."

"मैं हिंदू हो जाऊं !" मुख्तार के लहजे में हैरानी थी. वह हंसा, "मैं हिंदू कैसे हो सकता हूं!"

"मैं मुसलमान कैसे हो सकती हूं ?" शारदा की आवाज़ मद्धिम थी.

"तुम क्यों मुसलमान नहीं हो सकतीं ! मेरा मतलब है कि तुम मुझसे मुहब्बत करती हो. इसके अलावा इस्लाम सबसे अच्छा मज़हब है. हिंदू मज़हब भी कोई मज़हब है. गाय का पेशाब पीते हैं. बुत पूजते हैं. मेरा मतलब है कि ठीक है अपनी जगह यह मज़हब भी, मगर इस्लाम का मुकाबला नहीं कर सकता!" मुख्तार के ख़्यालात परेशान थे. "तुम मुसलमान हो जाओगी तो बस. . . . मेरा मतलब है कि सब ठीक हो जायेगा."

शारदा के चेहरे का तांबे जैसा रंग ज़र्द पड़ गया, "आप हिंदू नहीं होंगे ?"

मुख्तार हंसा, "पागल हो तुम ?"

शारदा का रंग और ज़र्द हो गया, "आप जाइए. वह लोग आने वाले हैं." यह कहकर वह पलंग पर से उठी.

मुख्तार विस्मित-विमूढ़ हो गया, "लेकिन शारदा..."

"नहीं ! नहीं, जाइए आप. . . . जल्दी जाइए. वे आ जायेंगे." शारदा के लहजे में बेपरवाही की सरदी थी.

मुख्तार ने अपने खुश्क गले से मुश्किल से यह शब्द निकाले, "हम दोनों एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं. शारदा, तुम नाराज़ क्यों हो गयी ?"

"जाओ. चले जाओ. हमारा हिंदू मज़हब बहुत बुरा है. तुम मुसलमान बहुत अच्छे हो !" शारदा के लहजे में नफ़रत थी. वह दूसरे कमरे में चली गयी और दरवाज़ा बंद कर दिया. मुख्तार अपना इस्लाम सीने में दबाये वहां से चला गया! ☐

● अनुवाद : सुरजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काली सलवार

दिल्ली आने से पहले वह अंबाला छावनी में थी, जहां कई गोरे उसके ग्राहक थे. इन गोरों से मिलने-जुलने के कारण वह अंग्रेज़ी के दस-पंद्रह वाक्य सीख गयी थी. इनको वह आम बातचीत में इस्तेमाल नहीं करती थी. लेकिन जब वह दिल्ली में आयी और उसका कारोबार न चला तो एक दिन उसने अपनी पड़ोसिन तमंचाजान से कहा, "दिस लैफ बैरी बैड, यानी यह ज़िंदगी बहुत बुरी है, जबकि खाने को ही नहीं मिलता!"

अंबाला छावनी में उसका धंधा बहुत अच्छा चलता था. छावनी के गोरे शराब पीकर उसके पास जाते थे और वह तीन-चार घंटों ही में आठ-दस गोरों को निबटाकर बीस-तीस रुपये पैदा कर लिया करती थी. ये गोरे इसके देशवासियों की अपेक्षा बहुत अच्छे थे. इसमें कोई शक नहीं कि वे ऐसी ज़ुबान बोलते थे, जो सुल्ताना की समझ में नहीं आती थी. किंतु उनकी भाषा से उसका अंग्रेजी ठीक से न समझना उसके वास्ते अच्छा ही साबित होता था. यदि वे उससे कुछ रिआयत चाहते तो वह सिर हिलाकर कह दिया करती थी, "साहब, हमारी समझ में तुम्हारी बात नहीं आता!" कभी वे उससे ज़रूरत से ज्यादा छेड़छाड़ करते तो वह उनको अपनी ज़ुबान में गालियां देना शुरू कर देती. वे आश्चर्य से उसका मुंह ताकने लगते तो वह कहती, "साहब, एकदम उल्लू का पट्ठा है! हरामजादा! समझा?" यह कहते समय वह अपने चेहरे पर कड़वाहट न लाकर हंसते-हंसते उनसे बातें करती. गोरे हंस देते और हंसते समय सुल्ताना को बिल्कुल उल्लू के पट्ठे दिखाई देते.

मगर वह जब से दिल्ली आयी थी, एक गोरा भी उसके यहां नहीं आया था. तीन महीने उसको हिंदुस्तान के उस शहर में रहते हो गये थे, जहां उसने सुना था कि बड़े-बड़े लाट साहब रहते हैं, जो गर्मियों में शिमला चले जाते हैं. अब तक सिर्फ छः आदमी उसके पास आये थे. छः यानी महीने में दो. . .और उन छः ग्राहकों से उसने, खुदा झूठ न बुलवाये तो साढ़े अठारह रुपये वसूल किये थे. तीन रुपये से ज्यादा कोई देने को तैयार ही न होता था. सुल्ताना ने उनमें से पांच आदमियों को दस रुपये रेट बताया था. मगर हैरानी इस बात की थी कि हर किसीने यही कहा, "भई, हम तीन रुपये से ज्यादा नहीं देंगे." न जाने क्या बात थी कि उनमें से हरेक ने उसे बस तीन रुपये के काबिल समझा. इसलिए जब छठा आदमी आया तो उसने खुद उससे कहा, "देखो, मैं तीन रुपये एक टैम के लूंगी. उससे एक अधेला भी कम कहो तो न होगा. तुम्हारी इच्छा हो, रहो, नहीं तो जाओ." छठे आदमी ने यह बात सुनकर तकरार नहीं की और उसके यहां ठहर गया. जब दूसरे कमरे में दरवाजे बंद करके वह अपना कोट उतारने लगा तो सुल्ताना ने कहा, "एक रुपया दूध का लाओ." उसने एक रुपया तो न दिया किंतु नये बादशाह की चमकती हुई अठन्नी जेब में से निकालकर

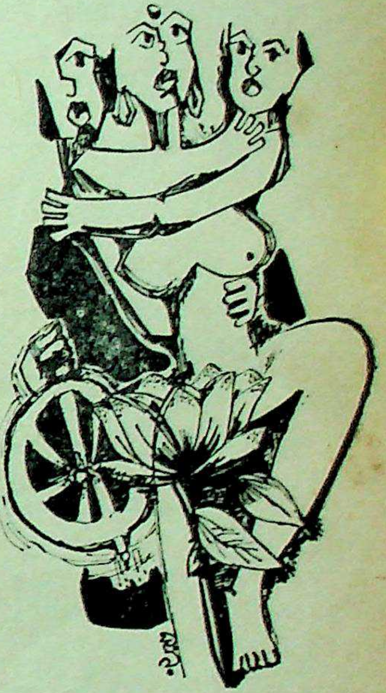

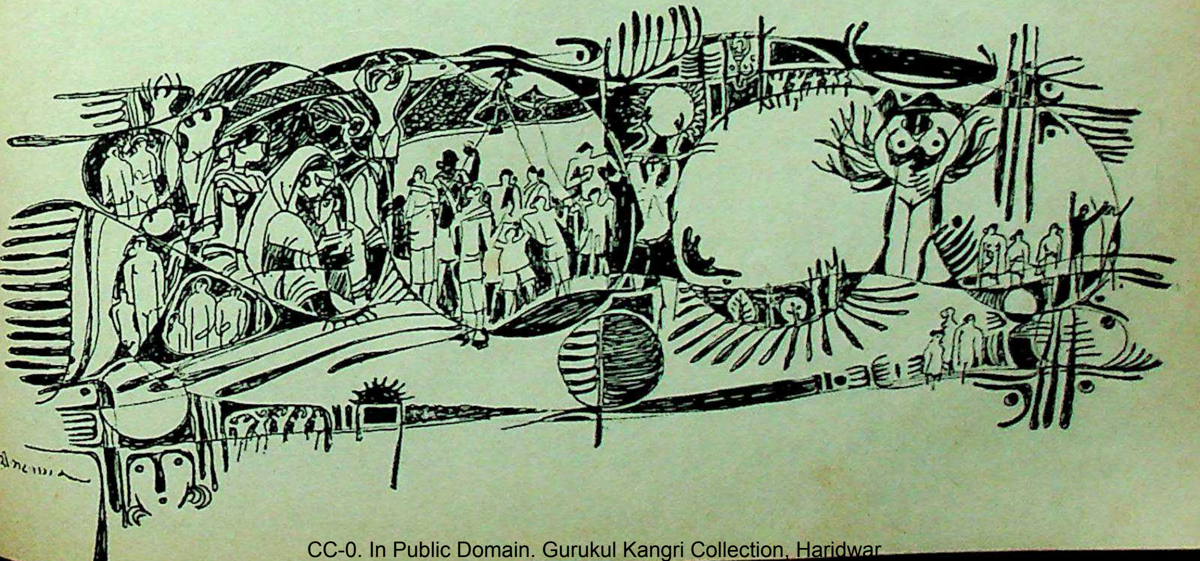

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको दे दी और सुल्ताना ने भी चुपके से ले ली. . . जो आता है अच्छा है.

खुदाबख्श और सुल्ताना का आपस में कैसे संबंध हुआ, इसकी एक लंबी दास्तान है. खुदाबख्श रावलपिंडी का था. मैट्रिक करने के बाद उसने लारी चलाना सीख लिया और चार साल तक रावलपिंडी और काश्मीर के बीच लारी चलाने का काम करता रहा. उसके बाद काश्मीर में एक औरत से उसकी दोस्ती हो गयी. उसको भगाकर वह लाहौर ले आया. लाहौर में उसे कोई काम न मिला, तो उसने उस स्त्री को पेशे पर लगा दिया. दो-तीन बरस तक यह सिलसिला जारी रहा. फिर वह किसी दूसरे के साथ भाग गयी. खुदाबख्श को पता लगा कि वह अंबाला में है. वह वहां उसकी तलाश में आया तो वहीं उससे सुल्ताना मिल गयी. सुल्ताना ने उसे पसंद कर लिया और दोनों में गहरी छाने लगी.

▣

खुदाबख्श के आने से सुल्ताना का कारोबार चमक उठा. वह अंधविश्वासी औरत थी. उसे लगा खुदाबख्श बड़ा किस्मत वाला है. उसके आने पर पहले से ज़्यादा और बढ़िया ग्राहक आने लगे हैं. इसलिए सुल्ताना की दृष्टि में खुदाबख्श की इज्जत बढ़ गयी.

खुदाबख्श मेहनती आदमी था. सारा दिन हाथ पर हाथ रखकर बैठना उसे पसंद नहीं था. उसने एक फोटोग्राफर से दोस्ती की, जो रेलवे स्टेशन के बाहर काले पर्दे वाले कैमरे से फोटो खींचा करता था. उससे उसने फोटो खींचना सीखा. फिर सुल्ताना से साठ रुपया लेकर कैमरा खरीद लिया. धीरे-धीरे एक पर्दा बनवाया, दो कुर्सियां खरीदीं और फोटो धोने का सब सामान लेकर उसने अलग से अपना काम शुरू कर दिया. काम चल निकला. कुछ ही दिनों के बाद उसने अपना अड्डा अंबाला छावनी में कायम कर दिया. वहां वह गोरों के फोटो खींचता. एक महीने के अंदर-अंदर छावनी में रहने वाले गोरों से अच्छी जान-पहचान भी हो गयी. इसलिए वह सुल्ताना को वहीं ले गया और वहां छावनी में खुदाबख्श के जरिए से कई गोरे सुल्ताना के पक्के ग्राहक बन गये.

अंबाला छावनी में वह बहुत चैन से थी, किंतु एकाएक न जाने खुदाबख्श के दिल में क्या आया कि उसने दिल्ली जाने की ठान ली. सुल्ताना इंकार न कर सकी क्योंकि वह खुदाबख्श को अपने लिए बहुत शुभ मानती थी. उसने खुशी-खुशी दिल्ली जाना मंजूर कर लिया. उसे यह भी लगा कि इतने बड़े शहर में, जहां लाट साहब रहते हैं, उसका धंधा और भी अच्छा चलेगा. अपनी सहेलियों से वह दिल्ली की तारीफ सुन ही चुकी थी. उस पर हजरत निज़ामुद्दीन औलिया की खानकाह भी थी जिसमें उसकी बेहद श्रद्धा थी. इसीलिए जल्दी-जल्दी घर का भारी सामान बेच-बाचकर वह खुदाबख्श के साथ दिल्ली आ गयी. वहां आकर खुदाबख्श ने वह बीस रुपये महीना का मकान ले लिया जिसमें वे दोनों रहने लगे.

दूकान खोलते ही ग्राहक थोड़े ही आते हैं. इसलिए एक महीने सुल्ताना जब बेकार रही तो उसने यही सोचकर अपने दिल को तसल्ली दी . किंतु जब यों ही दो महीने गुज़र गये और कोई ग्राहक नहीं आया तो उसे बड़ी परेशानी हुई. उसने खुदाबख्श से कहा, "क्या बात है खुदाबख्श, हमें यहां आये दो महीने हो गये हैं लेकिन किसीने इस तरफ का रुख ही नहीं किया. . .माना आजकल बाजार बहुत मंदा है, पर इतना मंदा नहीं कि महीने भर में एक भी आदमी हमारे यहां न आये." खुदाबख्श को भी यह बात बहुत समय से खटक रही थी. उसने कहा, "मैं क़ई दिनों से इसकी बाबत सोच रहा हूं. एक बात समझ में आती है, वह यह कि लड़ाई की वजह से लोग-बाग दूसरे धंधों में पड़कर इधर का रास्ता भूल गये हैं—या फिर हो सकता है. . .!" वह इसके आगे कुछ कहने ही वाला था कि सीढ़ियों पर किसीके चढ़ने की आवाज़ आयी. दोनों का ध्यान आवाज़ की तरफ खिंच गया. फिर किसीने आवाज़ दी. खुदाबख्श ने लपककर दरवाजा खोला. एक आदमी अंदर आया. वह पहला ग्राहक था जिससे तीन रुपये में सौदा तय हु[आ]. उसके बाद पांच और आये यानी [तीन] महीने में छः ग्राहक, जिनसे सुल्ताना [को] सिर्फ साढ़े अठारह रुपये प्राप्त [हुए].

बीस रुपये महीने तो मकान के [किराये] में निकल जाते थे. पानी और बि[जली] का बिल अलग रहा. इसके अ[लावा] घर के दूसरे खर्च, खाना-पीना, क[पड़े], दवा-दारू, दसियों खर्चे और. आम[दनी] कुछ भी नहीं थी. साढ़े अठारह [रुपये] तीन महीने में आये भी तो उसे आम[दनी] तो नहीं कह सकते. सुल्ताना परेशान [हो] गयी. साढ़े पांच तोले की आठ कंगनि[यां] जो उसने अंबाले में बनवायी थीं, [बिक] गयीं. धीरे-धीरे जब आखिरी कं[गनी] की बारी आयी तो उसने खुदाबख्श [से] कहा, "तुम मेरी सुनो और चलो वा[पस] अंबाला. यहां क्या रखा है. और अ[गर] कुछ होगा तो कहीं होगा. . हमारे लि[ए] तो यह शहर मनहूस ही साबित हुआ [है]. तुम्हारा काम तो वहां भी खूब चलता [था]. चलो, वहीं चलते हैं जो-जो नुक[सान] हुआ है उसे किस्मत में बदा सम[झो]. इस कंगनी को बेच आओ, मैं सामा[न] वगैरा बांधकर तैयार रखती हूं. रात [की] गाड़ी से ही चल देंगे."

खुदाबख्श ने कंगनी सुल्ताना के हा[थ] से ले ली और कहा, "नहीं जानेम[न], अंबाले नहीं जायेंगे. यहीं दिल्ली में र[ह] कर कमायेंगे. ये तुम्हारी चूड़ियां सब [की सब] वापस आयेंगी, अल्लाह पर भरोसा र[खो]. वह बिगड़ा काम बनाने वाला है."

सुल्ताना चुप हो रही और आखि[र] कंगनी भी हाथ से उतर गयी. अ[पनी] नंगी कलाई देखकर उसे बहुत दु[ख] होता था. पर क्या करती, पेट भी [तो] आखिर किसी तरह भरना ही [था].

▣

जब पांच महीने गुजर गये [और] आमदनी व्यय की अपेक्षा चौथाई [से भी] कुछ कम में ही रही, तो सुल्ताना [की] परेशानी और ज़्यादा बढ़ गयी. खुदा[बख्श] सारे दिन घर से गायब रहने लगा [था]. सुल्ताना को इसका अफसोस भी था. सारा दिन सुनसान घर में बैठी रहती. [कभी] सुपारी काटती रहती और कभी पुराने [और] फटे कपड़ों को सीती रहती और [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालकनी में आकर जंगले से सटकर स्थिर हो जाती और सामने रेलवे शेड में पटरी पर खड़े और दौड़ते हुए इंजनों को घंटों अपलक निहारती रहती.

कभी-कभी गाड़ी के किसी डिब्बे को, जिसे इंजन ने धक्का देकर छोड़ दिया हो, वह अकेले पटरियों पर रेंगता देखती तो उसे अपना ख्याल आता. वह सोचती कि उसे भी किसी ने जिंदगी की पटरी पर धक्का देकर छोड़ दिया है और वह दिशाहीन-सी चली जा रही है. दूसरे लोग कांटे बदल रहे हैं और वह पटरियां बदल रही है. कुछ पता नहीं कौन-सी पटरी कहां ले जायेगी? एक दिन जब उस धक्के का जोर धीमे-धीमे खत्म होगा और वह कहीं रुक जायेगी, किसी ऐसी जगह पर जो उसकी जानी-पहचानी नहीं होगी.

सुल्ताना सोचती थी कि ऐसी बातें सोचना दिमाग की खराबी का कारण है, इसलिए जब इस प्रकार के विचार उसके दिमाग में आने लगे तो उसने बालकनी में जाना छोड़ दिया. खुदाबख्श से उसने बार-बार कहा, "देखो, मेरे हाल पर रहम करो और यहां घर में रहा करो, मैं सारे दिन यहां मरीजों की तरह पड़ी रहती हूं." किंतु उसने हर बार सुल्ताना को यह कहकर सांत्वना दी, "जानेमन, मैं बाहर कुछ कमाने की फिकर कर रहा हूं. अल्लाह ने चाहा तो कुछ दिनों में ही बेड़ा पार हो जायेगा."

पूरे पांच महीने हो गये किंतु अभी तक न सुल्ताना का बेड़ा पार हुआ था और न खुदाबख्श का.

■

मुहर्रम का महीना सिर पर आ रहा था. सुल्ताना के पास काले कपड़े बनवाने के लिए भी कुछ नहीं था. मुख्तार ने लेडी हैमिल्टन के कट की नयी कमीज बनवायी थी, जिसकी आस्तीनें काली जार्जट की थीं. उसके साथ मैच करने के लिए उसके पास काली साटन की सलवार थी जो काजल की तरह चमकती थी. अनवरी ने रेशमी जार्जट की एक बड़ी बढ़िया साड़ी खरीदी थी. उसने सुल्ताना से कहा था कि वह उस साड़ी के नीचे सफेद बोस्की का पेटीकोट पहनेगी, क्योंकि यह नया फैशन था. उस साड़ी के साथ पहनने को अनवरी काली मखमल का एक जूता लायी थी जो बड़ा नाजुक था. सुल्ताना ने जब यह तमाम चीजें देखीं तो उसे यह सोचकर बड़ा दुःख हुआ कि वह मुहर्रम मनाने के लिए वैसी चीजें खरीदने की सामर्थ्य नहीं रखती.

अनवरी और मुख्तार के पास ऐसे कपड़े देखकर जब वह घर आयी तो उसका दिल बहुत उदास था. उसे लगता कि कोई फोड़ा-सा उसके अंदर पैदा हो गया है. घर बिल्कुल खाली था, खुदाबख्श बाहर गया हुआ था. देर तक वह दरी पर सिर के नीचे तकिया लगाये लेटी रही. लेकिन जब उसकी गर्दन ऊंचाई के कारण अकड़-सी गयी तो वह बाहर बालकनी में चली गयी, ताकि अपने दुःख-दर्द को किसी तरह भुला सके.

सामने पटरियों पर गाड़ी के डिब्बे खड़े थे. आज वहां कोई इंजन नहीं था. शाम का वक्त था. छिड़काव हो चुका था, इसलिए मिट्टी-धूल दब गयी थी. बाजार में ऐसे आदमी चलने शुरू हो गये थे, जो ताक-झांक करने के बाद चुपचाप घरों का रुख करते हैं. ऐसे ही एक आदमी ने गर्दन ऊंची करके सुल्ताना की ओर देखा. सुल्ताना मुस्करा दी और कुछ देर को वह दुःख-दर्द भूल गयी, क्योंकि सामने पटरियों पर एक इंजन चढ़ आया था. सुल्ताना गौर से उसकी ओर देखने लगी और धीरे-धीरे यह विचार उसके दिमाग में आया कि इंजन ने भी काले कपड़े पहन रखे हैं. यह विचित्र विचार अपने मस्तिष्क से निकालने के लिए उसने जब सड़क की ओर देखा तो उसे वही आदमी बैलगाड़ी के पास खड़ा नज़र आया, जिसने उसकी ओर ललचाई नज़रों से देखा था. सुल्ताना ने हाथ से उसे इशारा किया. उस आदमी ने इधर-उधर देखकर एक हल्के इशारे से पूछा, "किधर से आऊं?" सुल्ताना ने उसे रास्ता बता दिया. वह आदमी थोड़ी देर वहां खड़ा रहा और फिर बड़ी तेज़ी से ऊपर चढ़ आया.

■

सुल्ताना ने उसे दरी पर बिठाया. जब वह बैठ गया तो उसने बातचीत शुरू करने के लिए कहा, "आप ऊपर आने में डर क्यों रहे थे?"—वह आदमी यह सुनकर मुस्कराया, "तुम्हें कैसे मालूम हुआ—डरने की बात ही क्या थी!" इस पर सुल्ताना ने कहा, "यह मैंने इसलिए कहा कि आप देर तक वहीं खड़े रहे और फिर कुछ सोचकर इधर आये." वह यह सुनकर फिर मुस्कराया, "तुम्हें गलतफहमी हुई. मैं तुम्हारे ऊपर वाले फ्लैट की ओर देख रहा था. वहां कोई स्त्री खड़ी एक पुरुष को ठेंगा (अंगूठा) दिखा रही थी. मुझे यह दृश्य अच्छा लगा. फिर बालकनी में हरा बल्ब जला तो मैं कुछ देर के लिए खड़ा हो गया. हरी रोशनी मुझे बहुत पसंद है, आंखों को बहुत अच्छी लगती है." यह कहकर उसने कमरे में इधर-उधर नजरें दौड़ाना शुरू कर दिया और फिर वह उठ खड़ा हुआ. सुल्ताना ने पूछा, "आप जा रहे हैं?" उस आदमी ने जवाब दिया, "नहीं मैं तुम्हारे घर को देखना चाहता हूं. मुझे तमाम कमरे दिखाओ."

सुल्ताना ने तीनों कमरे उसे दिखा दिये. जब वे दोनों घूमकर उसी कमरे में आ बैठे जहां पहले बैठे थे, तो उस आदमी ने कहा, "मेरा नाम शंकर है."

■

शंकर दरी पर कुछ इस तरह बैठा था, जिससे मालूम होता था कि शंकर के बजाय सुल्ताना ग्राहक है. इस तरह के रुख ने सुल्ताना को बहुत परेशान कर दिया. उसने शंकर से कहा, "कहिए."

शंकर बैठा था. यह सुनकर लेट गया, "मैं क्या कहूं, कुछ तुम ही कहो. बुलाया तुम्हीं ने है." जब सुल्ताना कुछ न बोली तो वह उठ बैठा. "मैं समझा, लो अब मुझसे सुनो. जो कुछ तुमने समझा वह गलत है. मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो कुछ देकर जाते हैं. डाक्टरों की तरह मेरी भी फीस है. मुझे जब बुलाया जाए तो फीस देनी ही पड़ती है."

सुल्ताना यह सुनकर चकरा गयी, किंतु इसके बावजूद उसे इतनी हंसी आयी कि रोके न रुकी, "आप काम क्या करते हैं?"

शंकर ने जवाब दिया, "यही जो तुम लोग करती हो."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या?"

"तुम क्या करती हो?"

"मैं. . .मैं. . .मैं कुछ भी नहीं करती."

"मैं भी कुछ नहीं करता!"

"तो आओ दोनों झख मारें!"

सुल्ताना ने भिन्नाकर कहा, "यह तो कोई बात न हुई, आप कुछ न कुछ तो करते ही होगे."

शंकर ने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया, "तुम भी कुछ न कुछ जरूर करती होगी.

"झख मारती हूं."

"मैं भी झख मारता हूं."

"हाजिर हूं, किंतु झख मारने के दाम मैं कभी नहीं दिया करता."

"होश की बात करो, यह लंगरखाना नहीं है."

"और मैं भी वालंटियर नहीं हूं."

सुल्ताना यहां रुक गयी. उसने पूछा, "ये वालंटियर कौन होते हैं?"

शंकर ने जवाब दिया, "उल्लू के पट्ठे."

"मैं उल्लू की पट्ठी नहीं."

"किंतु वह आदमी खुदाबख्श जो तुम्हारे साथ रहता है, ज़रूर उल्लू का पट्ठा है."

"क्यों?"

"इसलिए कि वह कई दिनों से एक ऐसे खुदा के प्यारे फकीर के पास अपनी तकदीर खुलवाने के लिए जा रहा है जिसकी अपनी तकदीर जंग लगे ताले की तरह बंद है." यह कहकर शंकर हंसा.

इस पर सुल्ताना ने कहा, "तुम हिंदू हो, इसलिएं तुम हमारे बुजुर्गों का मजाक उड़ाते हो."

शंकर मुस्कराया, "ऐसी जगहों पर हिंदू-मुस्लिम सवाल पैदा नहीं हुआ करते. बड़े-बड़े पंडित और मौलवी भी यहां आयें तो शरीफ आदमी बन जायें."

"जाने क्या ऊटपटांग बातें करते हो—बोलो, रहोगे?"

"उसी शर्त पर जो पहले बता चुका हूं."

सुल्ताना उठकर खड़ी हो गयी, "तो जाओ, अपनी राह नापो."

▣

शंकर आराम से उठा. पतलून की जेबों में अपने दोनों हाथ ठूंसे और जाते हुए बोला—"मैं कभी-कभी इस बाज़ार से गुज़रा करता हूं. तुम्हें मेरी ज़रूरत हो, बता देना. बहुत काम का आदमी हूं."

शंकर चला गया और सुल्ताना अपने काले लिबास को भूलकर देर तक उसके बारे सोचती रही. उस आदमी की बातों ने उसके दुःख को बहुत हल्का कर दिया था. यदि वह अंबाले में आया होता, जहां कि वह खुशहाल थी, तो उसने किसी और रंग में उस आदमी को देखा होता और बहुत संभव है कि उसे धक्के देकर बाहर निकाल दिया होता, किंतु यहां वह बहुत उदास रहती थी, इसलिए शंकर की बातें उसे पसंद आयीं.

▣

संध्या को जब खुदाबख्श घर आया तो सुल्ताना ने उससे पूछा, "तुम आज सारे दिन किधर गायब रहे हो?"

खुदाबख्श थककर चूर-चूर हो रहा था, कहने लगा, "पुराने किले के पास से आ रहा हूं. वहां एक बुजुर्ग कुछ दिनों से ठहरे हुए हैं, उन्हीं के पास हर रोज जाता हूं ताकि हमारे दिन फिर जायें. . ."

"कुछ उन्होंने तुमसे कहा?"

"नहीं, अभी वे मेहरबान नहीं हुए—मगर सुल्ताना, मैं जो उनकी सेवा कर रहा हूं, वह अकारथ कभी नहीं जाएगी. अगर अल्लाह की टेढ़ी नज़र न हुई तो ज़रूर वारे-न्यारे हो जायेंगे."

सुल्ताना के दिमाग में मुहर्रम का ख्याल समाया हुआ था. वह रोनी आवाज़ में बोली, "तुम सारे के सारे दिन गायब रहते हो. मैं यहां पिंजरे में कैद रहती हूं. कहीं जा सकती हूं न आ सकती हूं. मुहर्रम सिर पर आ गया है, कभी तुमने उसकी भी फिकर की है. मुझे काले कपड़े चाहिए. घर में फूटी कौड़ी तक नहीं. कंगनियां थीं सो एक-एक करके बिक गयीं. अब तुम्हीं बताओ, क्या होगा? यों फकीरों के पीछे कब तक मारे-मारे फिरा करोगे! मुझे तो ऐसा दिखाई देता है कि यहां दिल्ली में भी खुदा ने हमसे मुंह मोड़ लिया है. मेरी सुनो तो अपना काम शुरू करो, कुछ तो सहारा हो ही जायेगा."

खुदाबख्श दरी पर लेट गया और कहने लगा, "लेकिन यह काम शुरू करने के लिए भी तो थोड़ा-बहुत रुपया चाहिए? खुदा के लिए अब ऐसी दुःखभरी बातें न करो. मुझसे अब बरदाशत नहीं हो सकता. सचमुच अंबाला छोड़कर मैंने गलती की. लेकिन जो कुछ करता है, अल्लाह करता है और वह हमारी भलाई के लिए ही करता है. क्या पता कुछ तकलीफें उठाने के बाद हम. . ."

सुल्ताना ने बात काटकर कहा, "तुम खुदा के लिए कुछ करो. चोरी करो, डाका डालो, लेकिन मुझे एक सलवार का कपड़ा ज़रूर ला दो. मेरे पास सफेद बोस्की की कमीज़ पड़ी है. उसको मैं रंगवा लूंगी. सफेद नैनी का दुपट्टा भी मेरे पास मौजूद है, वही जो तुमने मुझे दीवाली पर लाकर दिया था. वह भी कमीज़ के साथ रंगवा लिया जाएगा. एक सिर्फ सलवार की ज़रूरत है, सो वह तुम किसी न किसी तरह पूरी करो. . .देखो तुम्हें मेरी जान की कसम, किसी न किसी तरह से ज़रूर लाओ. मेरा मरा मुंह देखो, अगर न लाओ."

खुदाबख्श उठ बैठा, "अब तुम बेकार जोर दिये चली जा रही हो. कहां से लाऊंगा? अफीम खाने के लिए तो मेरे पास एक पैसा नहीं!"

"कुछ भी करो, मुझे साढ़े चार गज़ काली साटन ला दो!"

"दुआ करो कि आज रात ही अल्लाह दो-तीन आदमी भेज दे."

"लेकिन तुम कुछ नहीं करोगे. तुम अगर चाहो तो ज़रूर उतने पैसे पैदा कर सकते हो. . .लड़ाई से पहले यह साटन बारह-चौदह आना गज़ मिल जाती थी. अब सवा रुपया गज़ के हिसाब से मिलती है. साढ़े चार गज़ पर कितने रुपये खर्च हो जायेंगे?"

"अब तुम कहती हो तो कोई इंतज़ाम करूंगा," यह कहकर खुदाबख्श उठा. "लो, अब उन बातों को भूल जाओ, मैं होटल से खाना ले आऊं."

होटल से खाना आया. दोनों ने मिलकर खाया और सो गये.

▣

शाम हो चुकी थी, बल्ब जल रहे थे. नीचे सड़क पर रौनक दिखायी देने लगी. सर्दी कुछ बढ़ गयी—किंतु सुल्ताना को यह बुरी नहीं लगी. वह सड़क पर आने जाने वाले तांगों और मोटरों की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी समय से देख रही थी. एकाएक उसे शंकर दिखायी पड़ गया. घर के नीचे पहुंचकर उसने गर्दन ऊंची की और सुल्ताना की तरफ देखकर मुस्करा दिया. सुल्ताना ने ही अनजाने में ही हाथ का इशारा करके उसे ऊपर बुला लिया.

शंकर ऊपर आ गया तो सुल्ताना बहुत परेशान हुई कि उससे क्या कहे! वास्तव में उसने ऐसे ही बिना सोचे-समझे उसे इशारा कर दिया था. सुल्ताना ने देर तक उससे कोई बात नहीं की तो उसने कहा, "तुम मुझे सौ बार बुला सकती हो और सौ बार कह सकती हो कि जाओ. मैं ऐसी बातों पर कभी नाराज़ नहीं हुआ करता."

सुल्ताना असमंजस में पड़ गयी और कहने लगी, "नहीं, बैठो, तुम्हें जाने को कौन कहता है?"

शंकर इस पर मुस्करा दिया, "तो मेरी शर्तें तुम्हें मंजूर हैं?"

"कैसी शर्तें ?" सुल्ताना ने हंसकर कहा, "क्या निकाह कर रहे हो मुझसे?"

"निकाह और शादी कैसी? न उम्र भर तुम किसी से निकाह करोगी और न मैं. ये रस्में हम लोगों के लिए नहीं. छोड़ो इन बेकार की बातों को, कोई काम की बात करो?"

"बोलो क्या बात करूं?"

"तुम औरत हो—कोई ऐसी बात शुरू करो जिससे दो घड़ी दिल बहल जाए. इस दुनिया में सिर्फ दुकानदारी नहीं, कुछ और भी है?"

सुल्ताना मन ही मन शंकर के प्रति झुक गयी थी. वह कहने लगी, "साफ-साफ कहो, तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

"जो दूसरे लोग चाहते हैं," शंकर उठकर बैठ गया.

"तुममें और दूसरों में फिर फर्क ही क्या रहा?"

"तुममे और मुझमे कोई फर्क नहीं, लेकिन उनमे और मुझमें जमीन-आसमान का फर्क है. बहुत-सी बातें होती हैं जो पूछनी नहीं चाहिए, खुद समझना चाहिए."

सुल्ताना ने थोड़ी देर शंकर की इस बात को समझने की कोशिश की, फिर कहा, "मैं समझ गयी."

"तो कहो क्या इरादा है?"

"तुम जीते मैं हारी, पर आज तक किसी ने ऐसी बात न मानी होगी."

"तुम गलत कहती हो. इसी मुहल्ले में तुम्हें ऐसी भोली औरतें भी मिल जाएंगी जो विश्वास न करेंगी कि कोई स्त्री ऐसी लज्जा की बात स्वीकार कर सकती है, जिसे तुम बिना किसी विचार के अब तक मानती रही हो. लेकिन उनके विश्वास न करने पर भी तुम हजारों की संख्या में मौजूद हो! तुम्हारा नाम सुल्ताना है न?"

"सुल्ताना ही है."

शंकर उठकर खड़ा हुआ और हंसने लगा, "मेरा नाम शंकर है. ये नाम भी अजब ऊटपटांग होते हैं. चलो, आओ अंदर चलें."

▣

शंकर और सुल्ताना दरी वाले कमरे में वापस आये तो वो दोनों हंस रहे थे, न जाने किस बात पर. जब शंकर जाने लगा तो सुल्ताना ने कहा, "शंकर मेरी एक बात मानोगे?"

शंकर ने कहा, "पहले बात बताओ."

सुल्ताना कुछ झेंप-सी गयी, "तुम कहोगे कि मैं दाम वसूल करना चाहती हूं, लेकिन. . ."

"कहो-कहो ....रुक क्यों गयी हो?"

सुल्ताना ने कुछ साहस से काम लेकर कहा, "बात यह है कि मुहर्रम आ रहा है और मेरे पास इतने पैसे नहीं कि मैं काली सलवार बना सकूं. यहां के सारे दुखड़े तो तुम मुझसे सुन ही चुके हो. कमीज और दुपट्टा मेरे पास मौजूद था जो मैंने आज रंगवाने के लिए दे दिया है."

"शंकर ने यह सुनकर कहा, "तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें कुछ रुपये दे दूं जिससे तुम यह काली सलवार बन सको?"

सुल्ताना ने तुरंत कहा, "नहीं, मेरा मतलब यह है कि अगर हो सके तो तुम मुझे एक काली सलवार ला दो."

शंकर मुस्कराया, "मेरी जेब में तो शायद ही कभी कुछ होता है. कुछ भी सही, मैं कोशिश करूंगा. मुहर्रम की पहली तारीख को तुम्हें यह सलवार मिल जाएगी. ले, अब खुश हो गयी?" सुल्ताना के बुंदों की तरफ देखकर फिर उसने पूछा, "क्या ये बुंदे तुम मुझे दे सकती हो?"

सुल्ताना ने हंसकर कहा, "तुम इनका क्या करोगे? चांदी के मामूली बुंदे हैं, ज्यादा से ज्यादा पांच रुपये के होंगे."

इस पर शंकर ने कहा, "मैंने तुमसे बुंदे मांगे हैं, कीमत नहीं पूछी! दोगी?"

"ले लो," यह कहकर सुल्ताना ने बुंदे उतारकर शंकर को दे दिये. इसके बाद उसे दुःख भी हुआ, मगर तब तक शंकर जा चुका था.

▣

सुल्ताना को भरोसा नहीं था कि शंकर अपना वादा पूरा करेगा, लेकिन आठ दिन बाद मुहर्रम की पहली तारीख को सुबह नौ बजे दरवाजे पर दस्तक हुई. सुल्ताना ने दरवाजा खोला तो शंकर खड़ा था. अखबार में लपेटी हुई चीज़ उसने सुल्ताना को दी और कहा, "साटन की काली सलवार है. देख लेना शायद लंबी हो. अब मैं चलता हूं" शंकर सलवार देकर चला गया, और कोई बात उसने सुल्ताना से न की.

सुल्ताना ने कागज खोला—साटन की काली सलवार थी, वैसी ही जैसी वह मुख्तार के पास देखकर आयी थी. सुल्ताना बहुत खुश हुई. बुंदों और उसके सौदे का जो दुःख उसे होता था, उसे काली सलवार ने और शंकर की ईमानदारी तथा वफाई ने दूर कर दिया.

दोपहर को वह नीचे लांड्री वाले से अपनी रंगी हुई कमीज और दुपट्टा ले आयी. तीनों काले कपड़े जब उसने पहन लिए तो दरवाजे पर दस्तक हुई. सुल्ताना ने दरवाजा खोला तो मुख्तार अंदर आयी. उसने सुल्ताना के तीनों कपड़ों की तरफ देखा और कहा, "कमीज और दुपट्टा तो रंगा हुआ मालूम होता है, पर यह सलवार नयी है—कब बनवाई?"

सुल्ताना ने जवाब दिया, "आज ही दरजी लाया है." यह कहते हुए उसकी नजर मुख्तार के कानों पर पड़ी.

"यह बुंदे तुमने कहां से लिये?"

मुख्तार ने जवाब दिया, "आज ही मंगवाये हैं."

इसके बाद दोनों को ही थोड़ी देर चुप रहना पड़ा. □

● रूपांतर : रमेश बत्तरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो की बातें

एक बार होटल में बैठे हुए मंटो साहब ने मदहोशी की अवस्था में कई गिलासों और प्लेटों को तोड़ दिया, लेकिन बैरा बिल लेकर आया तो उनकी आंखों में अक्लमंदी उभरकर आयी.

"इस बिल में टूटे हुए गिलासों और प्लेटों की कीमत क्यों शामिल की गयी है?" उन्होंने बैरे से पूछा.

"साहब, यहां का दस्तूर यही है."

"दस्तूर के बच्चे, बुलाओ मैनेजर को!" उन्होंने गुर्राते हुए बैरे को डांटा और जब मैनेजर आया तो उससे बहुत गंभीरता के साथ पूछने लगे, "क्यों साहब! आपकी बार में जो गिलास या प्लेटें टूट जायें, उनकी कीमत भी आप अपने ग्राहकों से ही वसूल करते हैं?"

"जी हां. . .और असूल भी यही है!" मैनेजर ने विनम्रता से जवाब दिया.

"अच्छी बात है!" कहकर मंटो साहब खामोशी से बिल चुकाकर चल दिये.

लगभग एक सप्ताह बाद वह उसी होटल में फिर से मौजूद थे. उनके दोस्त अब उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब वह एकदम बहक जायेंगे, लेकिन वह तो बहकने की बजाय एकदम चिल्ला उठे, "सांप. .अरे सांप!"

उनकी चीख-पुकार सुनकर बार के शांत वातावरण में खलबली की एक लहर दौड़ गयी. फिर सांप को देखकर वो हंगामा हुआ कि खुदा की पनाह! घबराकर भागने वालों ने कुरसियां और मेजें औंधी कर दीं. इस अंतराल में खाने की कई प्लेटें और गिलास इस अफर-तफरी की भेंट हो गये.

जब सांप मारा जा चुका और कुछ शांति हुई तो मंटो ने बैरे से बिल मंगवाया और फिर बिल को देखते ही मैनेजर को बुलाया. मैनेजर के सपाट चेहरे पर नज़र पड़ते ही उनकी आंखों में खास चमक आ गयी.

"आज आपने बिल में टूटे हुए गिलासों और प्लेटों की कीमत शामिल क्यों नहीं की?"

मैनेजर ने कुछ अधिक विनम्रता से जवाब दिया, "वह तो सांप की वजह से टूटी हैं जनाब! कस्टमरों का क्या कुसूर?"

"लेकिन किबला मैनेजर साहब, यह आपके असूल के खिलाफ है." उन्होंने मुस्कराते हुए फिकरा कसा और फिर बटुए में से कुछ नोट निकालकर मैनेजर के हवाले करते हुए कहने लगे, "लेकिन मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा."

मैनेजर हैरान होकर उन्हें देखने लगा.

और जब मंटो अपने दोस्तों के साथ बाहर जाने लगे तो उन्होंने मैनेजर के कंधे पर अपना हाथ रखते हुए कहा, "मैनेजर साहब! पिछली बार जब प्लेटें टूटीं थीं, तो आपने बिल के अलावा क्रॉकरी के तीन-चार रुपये चार्ज कर लिये थे और आज जब आपकी प्लेटें टूटी हैं, तो मुझे यह तीन रुपये आपको अदा करने के बजाय यहां आने से पहले एक सपेरे को देने पड़े हैं!"

"सपेरे को. . .?" मैनेजर ने हक्का-बक्का होकर पूछा.

"जी हां! जिस सांप को आप लोगों ने मार दिया है, मैं उसे तीन रुपयों में खरीदकर यहां लाया था."

■

मंटो साहब से जब अहमद नदीम कासमी का केरेक्टर-स्केच लिखने की फरमाइश की गयी तो बहुत उदास होकर बहुत बुझे-बुझे लहजे में कहने लगे, "कासमी का स्केच... वह नेक कोई आदमी है. जितने सफे चाहो स्याह करवा लो, लेकिन बार-बार मुझे यही जुमला लिखना पड़ेगा. . .कासमी बहुत शरीफ आदमी है."

■

"अजी छोड़िए उपेंद्रनाथ अश्क की बात, आप भी किस दोजखी का जिक्र ले बैठे. बेहद कंजूस है, बनिया है! सुनिये, खूब याद आया. . .! इस भूमिका के बाद मंटो ने कहना शुरू किया, "कमबख्त ने एक बिल्ली पाल रखी है. जी हां, बिल्ली! सुबह-सवेरे ही उसे अड़ोस-पड़ोस के घरों में भेज देते हैं. वह बेचारी भी कहीं न कहीं से आंख बचाकर दूध पीकर जब वापस आती है, तो अश्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब उसे उलटा-लटकाकर उसके पेट से सब दूध बाहर निकाल लेते हैं और फिर उसी दूध से चाय बनाकर पीते हैं. जी हां, बिलकुल सच कह रहा हूं. रत्ती भर मुबालगा (अतिश्योक्ति) नहीं. नहीं साहब, सुनी-सुनायी नहीं, आंखों देखी बात है. मैं खुद उनके यहां उस दूध की चाय पी चुका हूं."

▣

कहानी पूरी हो गयी तो मसौदा जेब में डालकर मंटो घर से बाहर निकले और आदत के अनुसार एक खाली तांगे की पिछली सीट पर अवलेट गये.

"कहां जाना है साहब?"

"अनारकली!"

तांगा चलने लगा. रास्ते में ऐनक के मोटे-मोटे शीशों के पीछे से उनकी बेचैन आंखें हर राह चलते को देख रही थीं. सहसा उनमें चमक पैदा हुई और तांगा रुकवा दिया गया.

एक प्रकाशक से राह ही मुलाकात हो गयी, लेकिन उसके पास से पांच के नोट के सिवा कुछ और हाथ न आ सका.

तांगा फिर से चलने लगा और आखिर एक पत्रिका के दफ्तर के सामने जा रुका उन्होंने उतरकर पांच का नोट कोचवान के हाथ में थमा दिया.

"साहब ! रेज़गारी नहीं है!" कोचवान ने कहा.

"यह क्या बकवास है? खैर, सामने दफ्तर में जा रहा हूं. बाकी पैसे वहीं पहुंचा देना." कहते वह लपककर दफ्तर में दाखिल हो गये.

"आइये! आइये! किबला मंटो साहब!" एक दुबले से नौजवान ने उठ कर स्वागत किया.

मंटो ने खट से अपनी जेब से कहानी का मसौदा निकालते हुए कहा, "लो मेरी जान! तुम्हारे रिसाले के लिए बड़ी टाप क्लास कहानी लिखी है, लेकिन इसके मुआवज़े की मुझे फौरन ज़रूरत है. कहां है वह फ्राडे-आज़म तुम्हारे आका-ए-मोहतरम!"

"उसकी क्या पूछते हैं आप मंटो साहब!" नौजवान ने तिलमिलाते हुए कहना शुरू किया, "साला सुबह से गायब है. मुझे खुद पैसों की सख्त ज़रूरत है. पिछले महीने की पूरी तनख्वाह भी कमबख्त ने अभी तक नहीं दी. इसलिए सुबह से बीड़ियों से काम चला रहा हूं. सिगरेट के लिए पैसे नहीं हैं."

इस बार अपनी झल्लाहट का प्रदर्शन उन्होंने खामोशी से किया. कुछ क्षण कुछ सोचते रहे और फिर दौड़कर बाहर निकल आये. उनके पीछे-पीछे संपादक भी आ गया.

बाहर तांगे वाले का निशान तक न था . दो-तीन बार ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें देने के बाद मंटो ने देखा कि वह मर्दे-होशियार नौ-दो-ग्यारह हो चुका है, तो वह किसी अज्ञात प्रसन्नता के अहसास से मुस्करा दिये और संपादक से संबोधित होकर कहने लगे, "तुमने सच कहा था चुगद! वाकई तुम बदनसीब आदमी हो! और तुम जैसे बदनसीबों को सिगरेट की जगह बीड़ियां ही पीनी चाहियें!"

"जी हां, जी हां" फिर एकदम संपादक ने चौंकते हुए पूछा, "क्यों... वह क्यों मंटो साहब?"

मंटो साहब ने उसे बताया कि किस तरह वह अपनी सारी पूंजी कुल पांच रुपये के नोट के रूप में तांगे वाले को दे कर आये थे और वह रेज़गारी के बहाने नोट पर ही हाथ साफ कर गया.

"तो बदनसीब आप हुए हज़रत...!"

"अजीब बोगस आदमी हो. अरे मियां! मैंने सोचा था तांगे वाला किराया काट कर जो पैसे देगा, वह तुम्हें सिगरेटों के लिए दे दूंगा. इतनी बात नहीं समझे. बदनसीब नहीं तो और क्या हो?"

▣

मंटो की हंसमुखता की सैकड़ों घटनाएं लोगों की ज़ुबान पर हैं. जब मंटो की कहानी 'बू' पर कुछ शिष्ट लोग बिदक उठे और मामला अदालत तक जा पहुंचा तो एक लेखक ने मंटो से कहा, "लाहौर के कुछ प्रमुख भंगियों ने अदालत से शिकायत की है कि आपने एक कहानी 'बू' लिखी है, जिसकी बदबू दूर-दूर तक फैल गयी है." मंटो ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "कोई बात नहीं. मैं एक कहानी 'फिनाइल' लिखकर उनकी शिकायत दूर कर दूंगा."

▣

किसी ने मंटो साहब से पूछा, "मंटो साहब! पिछली बार आप मिले थे, तो आपसे यह जानकर बेहद खुशी हुई थी कि आपने शराब से तौबा कर ली है, लेकिन कितने अफसोस की बात है कि आज आप फिर पिये हुए हैं."

"ठीक कहा आपने किबला! फर्क सिर्फ इतना है कि उस दिन आप खुश थे और आज मैं खुश हूं."

▣

जिगर मुरादाबादी लाहौर तशरीफ लाये तो कुछ स्थानीय लेखक और कवि दर्शन करने के लिए उनके आवास-स्थान पर पहुंचे. जिगर बहुत सहृदयता और तपाक से हर एक का स्वागत कर रहे थे कि इतने में सआदत हसन मंटो ने आगे बढ़कर जिगर साहब से हाथ मिलाते हुए कहा, "किबला! अगर आप मुरादाबाद के जिगर हैं तो यह खाकसार लाहौर का गुरदा है."

▣

एक रोज़ मंटो साहब बड़ी तेज़ी से रेडियो-स्टेशन की इमारत में दाखिल हो रहे थे कि वहां बरामदे में मडगार्ड के बगैर एक साइकल देखकर क्षण भर के लिए रुक गये और फिर दूसरे ही क्षण उनकी बड़ी-बड़ी आंखों में मुस्कराहट की एक चमकीली-सी लहर दौड़ गयी और वह चीख-चीखकर कहने लगे, "राशद साहब! जनाब राशद साहब! ज़रा जल्दी से बाहर तशरीफ लाइये!" शोर सुनकर न. म. राशद के अलावा कृश्नचंदर, उपेंद्रनाथ अश्क और रेडियो स्टेशन के अन्य कर्मचारी भी उनके गिर्द आ जमा हुए.

"राशद साहब! आप देख रहे हैं इसे!" मंटो ने इशारा करते हुए कहा, "यह बिना मडगार्ड की साइकिल! खुदा की कसम साइकिल नहीं, बल्कि हकीकत में आपकी कोई नज़्म मालूम पड़ती है." □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो : कहानी से कोर्ट तक

▣ इब्राहीम अश्क

साहित्य में श्लील-अश्लील को लेकर चर्चाएं होती हैं और उसे लेकर कभी-कभी साहित्यकार को कोर्ट की तारीखें भी भुगतनी पड़ती हैं. मंटो खुद ऐसे तल्ख अनुभवों से गुज़रे थे. यहां प्रस्तुत है उन्हीं अनुभवों का दस्तावेज़.

जब बुजुर्गों के मुंह से यह सुनते थे कि... भई अब क्या है. राजाओं और नवाबों के शहजादे अदब सीखने के लिए पहले तवायफ़ों के यहां जाया करते थे! ... तो बात कुछ समझ में नहीं आती थी. ज़हन घंटों इस गुत्थी को सुलझाने की नाकाम कोशिश करता रहता था और अंत में थक हार कर एक ही नतीजा निकलता था . . ."भला ऐसा कैसे हो सकता है? यह तो एक मुहावरा है. एक कहानी है, जो न जाने कितनी पीढ़ियों से चली आ रही है. हर कहानी की तरह इस कहानी का आधार भी झूठ पर है ही, जो सच के निकट तो लगता है लेकिन वास्तव में ऐसा है नहीं. बेअदब लोगों से अदब की शिक्षा लेना कैसे संभव है?"...लेकिन जब मंटो को पढ़ा तो लगा एक बहुत बड़ी गुत्थी सुलझ गयी है. एक बहुत बड़ा मसला हल हो गया है और मुझे इस बात पर पूरा विश्वास हो गया कि बुजुर्गों के कथन में इंच मात्र भी झूठ नहीं है. . .और न सिर्फ पुराने जमाने में बल्कि आज भी अदब बेअदब लोगों, बदनाम बस्तियों, गंदे समाज और घिनावने सायों की सड़ी-गली दुनिया में रहकर सीखा जा सकता है.

बंटवारे के बाद मंटो बेशक पाकिस्तान चला गया किंतु उसका ज़हन, उसका दिल हिंदुस्तान में ही रहा और उसकी इसी अंतर्द्वंद्व की स्थिति ने 'टोबा टेकसिंह' 'खोलदो' 'ठंडा गोश्त' और 'धुआं' जैसी कहानियों को जन्म दिया. इन सारी कहानियों पर पाकिस्तान सरकार ने मंटो पर मुकदमे चलाये. . .और इस तरह सच बात कहने की उसे बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ी. कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटते वक्त मंटो की मानसिक स्थिति कैसी थी, इसके संदर्भ में मंटो ने एक लेख 'ठंडा गोश्त' के मुक़दमे के बाद लिखा था—

"मेरे लिए यह जगह कोई नई जगह नहीं थी. अपने पिछले तीन मुक़दमों के सिलसिले में मैं यहां आकर कई बार धूल फांक चुका था. इसका नाम तो ज़िला कचहरी है, लेकिन बेहद गंदी जगह है. मच्छर, मक्खियां, कीड़े-मकौड़े, हथकड़ियों और बेड़ियों की झनकारें, निहायत ही दकियानूसी टाइपराइटरों की उकता देने वाली टप-टप. . .

और आगे लिखते हैं, "कोई गंदी गालियां बक रहा है, कोई बिसूर रहा है. अंदर कमरों में मजिस्ट्रेट साहेबान निहायत ही वाहियात मेज़ों के पास बैठे मुक़द्दमों की समाअत फरमा रहे हैं. पास दोस्त-यार बैठे हैं. दौराने-समाअत उनसे भी गुफ्तगू जारी रहती हैं. अलफ़ाज़ ज़िला कचहरी की सही तस्वीर नहीं खींच सकते. यहां का माहौल अलग, यहां की जबान अलग, यहां के सुधार अलग—अजीबो-ग़रीब जगह है. ख़ुदा इससे दूर ही रखे!"

'ठंडा गोश्त' के मुक़दमे को कुछ घटनाएं और गवाहों के कुछ बयानात बड़े ही दिलचस्प हैं. मंटो के गवाह के बयान चल ही रहे थे कि चार चुस्त नौजवान वकील काले कोट पहने दाखिल हुए और मंटो के पास आकर खड़े हो गये. उन्होंने पूछा "मंटो साहब, क्या हम आपके मुक़दमे की पैरवी कर सकते हैं?"

मंटो ने कुछ न सोचा और कह दिया "जी हां, आप पैरवी कर सकते हैं."

यह सुनते ही उन चारों में से एक नौजवान वकील आगे बढ़ा और पैरवी शुरू कर दी. मजिस्ट्रेट ने उस से पूछा, "आप कैसे?" वकील ने मुस्करा कर जवाब दिया, "हुज़ूर मैं इनका वकील हूं. क्यों मंटो साहब?" और मंटो ने 'हां' में सर हिला दिया.

कार्रवाई शुरू हुई तो बाक़ी तीन वकील भी बीच-बीच में बहस में हिस्सा लेने लगे. उनकी सरगर्मी में बड़ा दिलकश लड़कपन था, वही जो कॉलेज के जिंदादिल छात्रों में होता है. म[...] भन्ना गये. उन्होंने उन तीनों [...] "आप हजरात क्यों बीच में बोल [...]" उन्होंने जवाब दिया "हुज़ूर हम [...] मंटो के वकील हैं. क्यों [...] साहब?" मंटो ने फिर 'हां' में सि[र हिला] दिया. इन चारों वकीलों ने भरपूर [...] की, लेकिन कोर्ट से बाहर आने [...] मंटो ने उनका आभार मानते हु[ए] कहा कि आपने 'ठंडा गोश्त' की [...] स्टडी की है, तो नौजवान वकी[...] जवाब दिया, "मंटो साहब! खुदा [...] हम लोगों ने यह कहानी अब त[क पढ़ी] ही नहीं!"

एक साहब डॉक्टर आई. [...] अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, ए[...] कॉलेज, लाहौर, ने 'ठंडा गोश्त' [...] मुक़द्दमे में कहानी के खिलाफ [...] देते हुए कहा—

"मैंने 'ठंडा गोश्त' अभी-अभी [...] है. यह एक ग़लत रिसाले (पत्रिका[...]) छपी है. मेरा मतलब है यह क[...] एक पापुलर रिसाले में नहीं [...] चाहिए थी. अगर यह किसी साइं[टिफिक] रिसाले में 'केस हिस्टरी' के तौर [...] मर्दुमी (पुरुषत्व) और नामर्दी [...] समर्थन या खंडन के रूप में छप[ती] इस पर अश्लीलता का इल्ज़ाम नहीं [...] जिन (अश्लील) शब्दों की [...] इशारा किया गया है, बोलने में [...] बुरा समझता हूं, लेकिन 'केस हि[स्टरी'] में यह शब्द बड़ी अहमियत रखते [...]"

वकील ने कहा, "मंटो साहब, [...] गवाह तो 'होस्टाइल' हो गया [...]" जवाब में मंटो ने कहा, 'हटाइए' [...]

'ठंडा गोश्त' के मुक़दमे का [...] मंटो ने खुद लिखित रूप में दिया [...] जिसमें उसने अपने पात्रों और [...] की भरपूर समीक्षा की थी. इसे [...] के बाद मजिस्ट्रेट ने कहा था, "यह [...] ही मुल्जिम को सज़ा देने के लिए [...] है."

मंटो का वह बयान कुछ इस [...] था—

"मैं कहानी 'ठंडा गोश्त' प्र[...] मासिक 'जावेद' लाहौर का [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मैं हूं

'काली सलवार', मंटो की मशहूर कहानी जब प्रकाशित हुई तो एक साहब ने, जो मंटो के दोस्त भी थे और खुद भी एक अच्छे कहानीकार की हैसियत रखते थे, उस कहानी पर समीक्षा करते हुए लिखा कि यह कहानी वास्तविकता से बहुत हटकर है और ऐसी कहानी लिखने के लिए लेखक को पूरी तरह उसी पात्र की ज़िंदगी जीनी चाहिये. मंटो ने जब सुना तो आग-बबूला हो गया और जब समीक्षक महोदय से मुठभेड़ हुई तो बुरी तरह बरस पड़ा. मंटो ने स्वीकार किया कि—वह पात्र, कोई और नहीं, खुद मैं हूं!

जो इस्तग़ासे के नज़दीक नग्न और श्लील है. मैं इसका विरोध करता यह कहानी किसी भी दृष्टिकोण से सी नहीं है.

इससे पहले भी तीन बार कुछ कहानियों बारे में संदेह हुआ था कि वे अश्लील इसलिए मुझ पर मुकदमें चले, सजाएं ई, लेकिन अपील करने पर हर बार ोर्ट में मुझे और मेरी कहानियों को लीलता के इल्ज़ाम से बरी किया या.

कहानी में दो पात्र हैं. ईशर सिंह ौर उसकी रखैल या पत्नी कुलवंत कौर! ोनों ही ठेठ किस्म के गंवार सिक्ख हैं. ोनों ही यौन आधार पर बहुत तगड़े कहना चाहिए कि ईशर सिंह को ौन तृप्ति सिर्फ़ कुलवंत कौर जैसी ौरत से ही और कुलवंत कौर को ौन तृप्ति सिर्फ ईशर सिंह जैसे मजबूत ौर तंदरुस्त मर्द ही से मिल सकती थी. दोनों का यौन-जीवन सुखी था लेकिन एक ऐसा वक्त आता है जब कुलवंत कौर महसूस करती है कि ईशर सिंह बदल गया है. उसके यौन-प्रेम में पहले जैसी शक्ति नहीं रही. वह उससे बेरुखी बरत रहा है, किसी ौर औरत से उसने नाता जोड़ लिया है, लेकिन असल बात यह थी कि सरदार ईशर सिंह एक जबरदस्त मानसिक विघटन का शिकार था, जिसके कारण उसकी यौन शक्ति लकवाग्रस्त हो चुकी थी. वह लूटमार में कई कत्ल करने के बाद एक नौजवान लड़की उठा लाया था, जिससे अपनी यौन आकांक्षा पूरी करना चाहता था, लेकिन जब उसने ऐसा करना चाहा तो उसे मालूम हुआ कि लड़की तो मारे डर के उसके कंधों पर ही मर चुकी थी और उसके सामने एक ठंडी लाश पड़ी थी. इस घटना का ईशर सिंह पर इतना भयावह असर पड़ा कि वह नामर्द हो गया.

यह बात यहां काबिले-ग़ौर है कि क़त्ल और लूटमार करने से ईशर सिंह पर कोई असर नहीं हुआ. उसने कई इंसानों को मौत के घाट उतारा था मगर उसकी आत्मा पर अहसास की एक हल्की-सी खराश भी नहीं आयी. मगर जब वह लड़की की ठंडी लाश पर झुका तो उसकी मर्दानगी गायब हो गयी.

मुझे अफसोस है कि वह तहरीर जो इंसानों को बताती है कि वह इंसान से हैवान बनकर भी इंसानियत से अलग नहीं हो सकते, अश्लील समझी जा रही है और लतीफा है कि कहानी में एक इंसान को उसकी रही-सही इंसानियत एक बहुत बड़ी सज़ा देती है.

कहानी में अगर कोई कलात्मक कमज़ोरी रह गयी थी, बयान में कोई लचक थी या शैली में कोई खामी थी तो उस पर साहित्यिक आलोचना की जाती, मुझे उस वक्त दिली खुशी होती. मैं यहां मुल्ज़िमों के कटघरे में खड़ा हूं और एक निहायत ही घिनौने इल्ज़ाम का मुंह देख रहा हूं कि मैंने अपने लेखन के द्वारा लोगों की यौन आकांक्षाओं को भड़काया है. इसके विरोध में मेरे दिल से विरोध के सिवा और क्या चीज़ निकल सकती है. और भी आश्चर्य है कि ईशर सिंह को जो दर्दनाक सज़ा मिली, वे पाठक के दिलो-दिमाग़ में यौन भावनाएं कैसे जागृत कर सकती हैं!"

मजिस्ट्रेट ने मंटो का यह बयान पढ़कर तीन महीने के कठोर कारावास की सज़ा सुनायी थी, लेकिन उच्च न्यायालय में अपील करने के बाद उसे बरी कर दिया गया था. □

मंटो की व्यंग्य रचनाएं

देख कबीरा रोया

▣

मुल्क का सबसे बड़ा नेता चल बसा तो चारों तरफ मातम की सफें बिछ गयीं. अक्सर लोग बाज़ुओं पर स्याह बिल्ले बांधकर फिरने लगे. कबीर ने यह देखा तो उसकी आंखों में आंसू आ गये. स्याह बिल्ले वालों ने उससे पूछा, "क्या दुख है?"

कबीर ने जवाब दिया, "यह काले रंग की चंदियां अगर जमा कर ली जायें तो सैकड़ों की सतरपोशी (अंग ढांपना) कर सकती हैं."

स्याह बिल्ले वालों ने कबीर को पीटना शुरू कर दिया, "तुम कम्युनिस्ट हो. पाकिस्तान के गद्दार हो!"

कबीर हंस पड़ा, "लेकिन दोस्तो! मेरे बाज़ू पर तो किसी रंग का बिल्ला नहीं!"

▣

पंक्तिबद्ध फौजों के सामने जरनैल ने तकरीर करते हुए कहा, "अनाज कम है, कोई परवाह नहीं. फसलें तबाह हो गयी हैं, कोई फिक्र नहीं. हमारे सिपाही भूखे ही लड़ेंगे."

फौजियों ने ज़िंदाबाद के नारे लगाने शुरू कर दिये.

कबीर चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा. जरनैल को बहुत गुस्सा आया. चुनांचे वह पुकार उठा, "ए शख़्स! बता सकता है, तू क्यों रोता है?"

कबीर ने रोनी आवाज़ में कहा, "ए मेरे बहादुर, भूख से कौन लड़ेगा?"

दो लाख आदमियों ने 'कबीर, मुर्दाबाद' के नारे लगाने शुरू कर दिये. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो : फिल्मी दुनिया का बदनाम दुश्मन !

■ शब्द कुमार

फिल्म-क्षेत्र में प्रवास के दौरान अपने स्पष्टवादी स्वभाव के कारण दोस्तों की बजाय दुश्मन अधिक बनाये. फिल्मों में आने से पूर्व वह दिल्ली आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले अपने साप्ताहिक नाटक 'आओ' श्रृंखला एवं अपनी लेखनी द्वारा, सुनने और पढ़ने वालों में चर्चित और बदनाम हो चुका था. और अधिक लोगों तक पहुंचने का लोभ उसे बंबई खींच लाया, जहां वह उर्दू पत्रिका 'मुसव्विर' का संपादन करता रहा, लेकिन अपनी कड़वी जबान के कारण वहां अधिक नहीं टिक सका. मुसव्विर को छोड़कर उसने फिल्म इंडिया के संपादक बाबुराव पटेल के साथ मिलकर 'कारवां' नामक उर्दू पत्र का संपादन शुरू कर दिया.

यह उसके फिल्म-कैरियर की शुरुआत थी. इसी दौरान उसका संपर्क अशोक कुमार, श्याम, नसीम बानो, कुलदीप कौर, नरगिस एवं सितारा देवी जैसी फिल्मी हस्तियों से हुआ. 'कारवां' छोड़कर उसने इंपीरियल फिल्म कंपनी में चालीस रुपये मासिक पर संवाद लेखक की नौकरी कर ली. कहीं जमकर काम करना तो मंटो ने सीखा ही नहीं था. इंपीरियल कंपनी छोड़कर उसने 'सरोज मूविटोन' के मालिक नानूभाई देसाई के लिए प्रसिद्ध लेखक कृश्न चंदर के साथ मिल 'मड' (कीचड़) उर्फ 'अपनी नगरिया' फिल्म लिखी. फिल्म प्रदर्शित हुई तो टिकिट खिड़की पर दर्शकों से अधिक पुलिस की भीड़ थी, जो दर्शकों को संभाल रही थी. तभी नानू भाई ने फिल्म की सफलता के बावजूद भी कंपनी का दिवाला निकाल, मंटो को बंबई के रास्तों पर बेकार छोड़ दिया.

यह ज़माने में दम नहीं!

मगर मंटो की आदत ... हमको मिटा सके, यह जमाने में दम नहीं! हमसे है यह जमाना, जमाने से हम नहीं! वह घबराया नहीं. कलम चलती रही.

इस बीच मंटो की भेंट फिल्म निर्माता एहसान से हुई. ताजमहल पिक्चर्ज के झंडे वाले मंटो ने फिल्म 'उजाला' लिखी. लेकिन फिल्म को बुरी तरह बॉक्स-आफिस पर असफलता मिली. निर्माता फिल्म की नायिका नसीम बानो से विवाह कर दिल्ली चला गया और मंटो फिर से बिना किसी काम के, केवल कलम के बूते पर गुजर करने लगा. तभी उसकी मुलाकात शहीद लतीफ और उनकी पत्नी इस्मत चुगतई से हुई और मंटो फिलमिस्तान में संवाद लेखकों के दल में 150 रु. मासिक पर शामिल हो गया. 'चल चल रे नौजवान' लिखी. फिलिमस्तान के ज्ञान मुखर्जी और एस. मुखर्जी फिल्म का सिनेरियो लिखते और 'पीस डायलॉग' के रूप में संवाद लेखकों का दल, जिसमें मंटो के अलावा रेवती शरण वर्मा, उपेंद्रनाथ अश्क जैसे लेखक संवाद लिखते. तभी एहसान नसीम को लेकर वापिस बंबई लौट आए और मंटो द्वारा लिखी 'बेगम' पर फिल्म का निर्माण आरंभ किया. इस फिल्म में उन्होंने मंटो की मर्जी के विरुद्ध कहानी में अदला-बदली की. एहसान फिल्म में कहानी की बजाय नसीम की खूबसूरती को दर्शकों तक पहुंचाना चाहते थे. मंटो फिर बुरा बन गया लोगों के लिए.

उन्हीं दिनों प्रसिद्ध ... अशोक कुमार और मिस्टर ... बांबे टाकीज को अपने अधिकार ... लिया. मंटो ने न केवल उनके ... 'आठ दिन' और 'आगोश' जैसी ... लिखीं, बल्कि 'आठ दिन' में ... के रूप में भी अवतरित हुआ. इस ... में उसने एक 'पागल' की भूमिका ... जो फुटबाल फेंक-फेंककर कहता ... उसने बम फेंका है! यह भूमिका ... बिल्कुल वास्तविक जीवन के ... थी. वह जो लिखता था, उसे लोग ... बाल समझकर नकारते थे और ... 'बम' समझकर उसे पढ़ने वा... समक्ष प्रस्तुत करता था. इसी फि... उपेंद्रनाथ अश्क एवं राजा मेंहदी ... खां जैसे गीतकारों ने भी भूमि... अभिनीत कीं. 'आगोश' बनी, ... कमजोर निर्देशन के कारण बुरी ... पिट गयी.

इस बीच मंटो ने अशोक ... की कंपनी के लिए इस्मत चुगताई ... कहानी 'जिद्दी' की पटकथा ... लेकिन उसे अशोक कुमार ने ... नहीं किया. इसके दो कारण थे. ... तो अशोक कुमार, जो उन दिनों ... प्रिय अभिनेता थे, कहानी की ... इस्मत चुगतई के अनुसार 'फिट' ... बैठते थे और दूसरा, मंटो ठीक से ... नहीं लिख पाते थे.

मंटो फिर बुरा बन गया, ... मित्रों की नज़र में. सोहराब मो... उन्हें अपने यहां 'मिनंवा मूवी...' में लिखने का निमंत्रण दिया, ... उन्होंने 'मिर्जा ग़ालिब', राजेंद्र सिं... के संवादों के सहयोग से लिखी. ... राजनीतिक दंगे आरंभ हो गये. ... फिर से कलम चलानी आरंभ ... विभाजन के कुछ समय पश्चा... पाकिस्तान चला गया. उसकी ... पस्थिति में 'घमंड' फिल्म का ... हुआ, जो कमजोर अभिनय के ... अधिक समय तक पर्दे पर नहीं टिक... मंटो पाकिस्तान में फिल्म माध्यम ... अपना गुबार निकालना चाह... लेकिन उस के पास कुछ भी ... ...और यही उसके फिल्म प्र... अंत था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़े सरकार की हवेली—बाग़.

माली क्यारियां दुरुस्त करने में मसरूफ़ है, चमेली भी हाथ बंटा रही है.

चमेली (थक कर): मुझसे नहीं होता.

माली (मानीखेज़ लहजे में) : नहीं होता तो न किया कर...

चमेली: पर अकेले में क्या किया करूं?

इतने में मुंशी नमूदार होता है

माली: आइये, मुंशी साहब, आइये.

मुंशी आता है, अफसरदा (दुखी) है

माली: गुलाब का कुछ पता लगाया?

मुंशी: नहीं.

माली: आपकी औलाद है, दिल पर इस तरह पत्थर नहीं रख लेना चाहिये.

मुंशी: क्या करूं, भाई मैं मजबूर हूं. (बैठ जाता है) मुझमें इतनी हिम्मत नहीं.

माली: अच्छे बाप हैं आप, मुंशी साहब!

मुंशी: मेरे जख्मों पर नमक न छिड़को. जब से वह गया है, मेरे दिल की बुरी हालत है. तुम समझते हो मुझे इसका दर्द नहीं, तुम समझते हो कि मैं उसे कसूरवार समझता हूं.—नहीं, नहीं , नहीं!

माली: मैं पता लूं गुलाब का?

मुंशी: (आहिस्ता) नहीं.

छोटे सरकार की आवाज़ आती है

छोटे सरकार: माली!

माली: (एकदम खड़े होकर) हुजूर!

छोटे सरकार: हमारे कमरे के गुलदानों में कल के ही बासी फूल पड़े झक मार रहे हैं...वजह?

माली: (चमेली की तरफ देखकर) हुजूर, यह चमेली का कसूर है.

छोटे सरकार: तो भेजो उसे जल्दी, नये फूल सजाये.

छोटे सरकार चमेली की तरफ कनखियों से देखता हुआ चला जाता है.

माली: जाओ चमेली, ताज़ा फूल फव्वारे के पास पड़े हैं.

चमेली चली जाती है. माली अपने काम में मशगूल हो जाता है.

माली: (बड़बड़ाते हुए) आपने क्यों गुलाब को जाने दिया, क्या आपको सारी बात मालूम नहीं थी?

मुंशी: तुमने चमेली को क्यों जाने दिया?

(माली चौंकता है)

मुंशी: क्या तुम्हें मालूम नहीं है?

माली: (एकदम उठकर) क्या?

मुंशी: मुझसे क्या पूछते हो, अपने दिल से पूछो.

माली: बताइये, बताइये मुंशी साहब, आपको क्या मालूम है?

मुंशी: अपने दिल से पूछो.

माली: अपने दिल से? (आहिस्ता से) मेरा दिल है कहां?

मुंशी: तुम मुझसे कह रहे थे, अच्छे बाप है आप मुंशी साहब! मैं कहता हूं क्या तुम बाप नहीं?...तुमने कहा था, गुलाब आपकी औलाद है, दिल पर इस तरह पत्थर नहीं रख लेना चाहिए. मैं कहता हूं, चमेली तुम्हारी औलाद है, तुमने क्यों आंखों पर पट्टी बांध रखी है!

मंटो लिखित फिल्म

कटारी

की पटकथा के कुछ दृश्य

माली खामोश हो जाता है

मुंशी: जो खेल तुम्हारी आंखों के सामने हो रहा है, इंसान की आंखों पर पट्टी बंधी हो तो भी देख सकता है... लेकिन तुम इतने बेग़ैरत हो...

माली: बस, बस,!

मुंशी: मैं गुलाम हूं, मेरे बाप-दादा गुलाम थे...सदियों की गुलामी मेरे खून में रची हुई है...बेकसूर गुलाब को यहां से निकाला गया, मैं उफ तक न कर सका, इसलिए कि मुझमें जुर्रत नहीं थी. पर मैं खुश हूं कि मेरा बेटा इस गंदगी से निकल गया जो कुछ दिनों से यहां फैल रही है. तुम तो एक लड़की के बाप हो माली...चमेली मेरी बेटी होती...!

माली: ऐसी बात मुंह से न निकालो.

मुंशी : क्यों?

माली: चमेली तुम्हारी बेटी क्यों हो?

मुंशी: (हैरत से) क्या मतलब?

माली: इधर आओ.

मुंशी उसके साथ चलता है. कवार्टर तक दोनों खामोश चलते रहते हैं.

बड़े सरकार की हवेली में माली का क्वार्टर. मुंशी और माली अंदर आते हैं.

मुंशी खामोश खाट पर बैठ जाता है. माली कुछ इधर-उधर टहलता है, फिर एकदम रुककर मुंशी से कहता है.

माली: चमेली मेरी लड़की नहीं है.

[मुंशी उठकर खड़ा होता है.]

मुंशी: चमेली तुम्हारी लड़की नहीं है?

माली: नहीं **[और बेतहाशा हंसना शुरू कर देता है, फिर एक कोने में रखे पलंग की तरफ देखता है]**

माली: वह....वह यहां लेटी हुई थी.

मुंशी: कौन?

माली: मेरी बीवी **(उसकी आंखों में आंसू आ जाते हैं)** आखरी सांस थी... बच्चे की पैदाइश की जितनी खुशी थी, सब दुख बन गयी थी...उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे.. यकायक बच्ची दूध के लिए बिलखने लगी. मैंने कहा आखिरी घूंट तो मेरी बेटी को देती जाओ. यह सुनकर उसने मुंदी-मुंदी आंखों से बच्ची की तरफ देखा, फिर मेरी तरफ आंख उठायी और यह खौफनाक बात कही, "यह तुम्हारी बेटी नहीं है..." यह सारा कवार्टर मेरी आंखों तले घूम गया. "किसकी है?" मैंने पूछा. उसने जवाब दिया, "बड़े सरकार की... गला घोंट दो इसका...!" यह सुनकर मुझे होश न रहा...मुझे मालूम नहीं, उस गुनहगार की कब जान निकल गयी!

मुंशी: तुमने गला क्यों नहीं घोंट दिया उस शैतान की बच्ची का?

माली: मैं गला घोंटने वाला था.. लेकिन मेरे मन के अंदर एक शैतान पैदा हुआ—उसने मुझसे कहा—नहीं, इसे जिंदा रहने दो...इसको पाल-पोसकर बड़ा करो...बड़े सरकार का एक लड़का है. ..जवान होकर वह भी बाप की तरह खेल खेलेगा... क्या पता है कि यह हराम की बच्ची और वह...

मुंशी: (एकदम चीख उठता है) बस, बस, बस!

माली: अभी बस कहां...मैं अपने दिल के फोड़े को चौदह बरस तक पकाता रहा हूं...अब तो इसके फूटने और बह जाने का वक्त है...! □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदब या तो अदब है या एक बहुत बड़ी बेअदबी!

यह नयी चीजों का जमाना है. नये जूते, नयी ठोकरें, नये कानून, नये जुर्म, नयी घड़ियां, नयी बेवक्तियां, नये मालिक, नये गुलाम और लुत्फ यह है कि इन नये गुलामों की खाल भी नयी है, जो उधड़-उधड़कर नवीनप्रिय हो गयी है. अब उनके लिए नये कोड़े और नये चाबुक तैयार हो रहे हैं.

अदब (साहित्य) भी नया है, जिस के बेशुमार नाम हैं. कोई उसे तरक्कीपसंद कहता है, कोई प्रतिक्रियावादी. कोई अश्लील कहता है, कोई मज़दूरपरस्त. इन नये अदब को परखने के लिए नयी कसौटियां भी मौजूद हैं. यह कसौटियां पत्रिकाएं हैं. वार्षिकांक, मासिक, साप्ताहिक और दैनिक. इन पत्रिकाओं के मालिक और संपादक भी नये हैं. कोई पाकिस्तानी है. कोई अखंड हिंदुस्तानी. कोई कांग्रेसी है, कोई कम्युनिस्ट. . . सब अपनी-अपनी कसौटी पर इस नये अदब को परखते रहते हैं और उसका खोटा-खरा बताते रहते हैं, मगर अदब सोना नहीं, जो उसके घटते-बढ़ते भाव बताये जायें. अदब ज़ेवर है और जिस तरह खूबसूरत ज़ेवर खास सोना नहीं होते, उसी तरह खूबसूरत रचनाएं भी खालिस हकीकत नहीं होतीं. इनको सोने की तरह पत्थरों पर घिसा-घिसाकर परखना बहुत बड़ी बेज़ौकी (रुचि-हीनता) है.

अदब या तो अदब है, वरना एक बहुत बड़ी बेअदबी. ज़ेवर या तो ज़ेवर है, वरना एक बहुत ही बदनुमा शै है. अदब और गैर-अदब, ज़ेवर और गैर-ज़ेवर में कोई दरम्यानी इलाका नहीं.

यह जमाना नये दर्दों और नयी टीसों का जमाना है. एक नया दौर पुराने दौर का पेट चीरकर पैदा किया जा रहा है. पुराना दौर मौत के सदमे से रो रहा है. नया दौर ज़िंदगी की खुशी से चिल्ला रहा है. दोनों के गले रुंधे पड़े हैं. दोनों की आंखें सजल हैं.

इस नमी में अपनी कलम डुबोकर लिखने वाले लिख रहे हैं— नया अदब ! ज़बान वही है. सिर्फ लहजा बदल गया है. दरअसल उसी बदले हुए लहजे का नाम नया अदब, तरक्कीपसंद अदब, अश्लील अदब या मज़दूरपरस्त अदब है.

आंसुओं और कहकहों का वजन !

जब किसी इंसान का लहजा बदल जाता है. जब कोई इंसान हंसते-हंसते रोने लगता है. जब किसी राग के मद्धिम सुर एकाएक ऊंचे हो जाते हैं. जब बच्चा बिलखने लगता है, तो आवाज़ मापने वाले यंत्र से यांत्रिक तरीके पर इस तबदीली को नहीं जांचते. जो विद्वान हैं, जो साहबे-ज़ौक हैं, हमेशा इस कैफियत, इस भावना, इस प्रेरणा को टटोलने की कोशिश करेंगे, जिसने यह तबदीली पैदा की.

अदब एक व्यक्ति की अपनी ज़िंदगी की तस्वीर नहीं. जब कोई अदीब कलम उठाता है तो वह अपने घरेलू मामलों का रोज़नामचा नहीं लिखता. अपनी ज़ाती खुशियों, रंजिशों, बीमारियों और तंदरुस्तियों का ज़िक्र नहीं करता. उसकी कलमी तसवीरों में बहुत मुमकिन है—आंसू उसके दुखी बहन के हों, मुस्कराटें आपकी हों और कहकहे एक खस्ताहाल मज़दूर के.

इसलिए अपने आंसुओं, अपनी मुस्कराहटों और अपने कहकहों के तराज़ू में इन तस्वीरों को तौलना बहुत बड़ी गलती है. हर रचना एक खास फिज़ा, एक खास असर, एक खास मकसद के लिए पैदा होती है. अगर उसमें वह खास फिज़ा, वह खास असर और वह खास मकसद मसहूस न किया जाये तो वह एक बेजान लाश रह जायेगी.

रोटी, औरत और तख्त !

मगर अदब लाश नहीं, जिसे डॉक्टर और उसके शागिर्द पत्थर की मेज़ पर लिटाकर पोस्ट-मार्टम शुरू कर दें. अदब बीमारी नहीं, बल्कि बीमारी का रद्दे-अमल (प्रतिक्रिया) है. दवा भी नहीं, जिसके इस्तेमाल के लिए औकात और मकदार की पाबंदी आयद की जाती है. अदब दर्जा हरारत (तापमान) है अपने मुल्क का, अपनी कौम का. वह उसकी सेहत और बीमारी की खबर देता रहता है.

पुरानी अलमारी के किसी खाने से हाथ बढ़ाकर कोई गर्द भरी किताब उठाइये. बीते हुए ज़माने की नब्ज़ आपकी उंगलियों के नीचे धड़कने लगेगी.

कितनी सदियां गुज़र चुकी हैं. कितनी नस्लें उन गुज़री हुई सदियों के नीचे दफन हैं. ऐसा लगता है कि लाशों का एक अंबार है, जिसकी चोटी पर हम खड़े हैं और नीचे एक अथाह समंदर की तरफ देख रहे हैं. आसमान की तरफ निगाह उठाते हैं तो ऐसा मालूम होता है, जैसे हम उसके बिल्कुल करीब पहुंच गये हैं, लेकिन आने वाले ज़माने की एक छोटी-सी करवट, एक और सदी हमारी लाशों पर हमारी औलाद को खड़ा कर देगी और वह समझेगी, हम ऊंचे हैं, लेकिन सबसे पहली सदी की लाश कहां है ? किस हालत में है? किसी को कुछ मालूम नहीं. लेकिन आदम का किस्सा वही है. एक औरत और एक मर्द... दो औरतें और एक मर्द या दो मर्द और एक औरत... गरदान अज़ल से जारी है और अबद तक जारी रहेगी.

इंसान को भूख पहले भी लगती थी और अब भी लगती है. ताकत की इच्छा पहले भी थी, अब भी है. शेयर और शराब का शौकीन जैसा पहले था, अब भी है. तब्दीली क्या हुई है ?...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भी नहीं. रोटी, औरत और तख्त. . रोटी, औरत और तख्त, और अगर उनसे उकता गया तो खुदा, एक ऐसी ताकत जो रोटी, औरत और तख्त से कहीं ज्यादा अबूझ और पहुंच से परे है.

इंसान औरत से मुहब्बत करता है तो हीर-रांझा की दास्तान बन जाती है. रोटी से मुहब्बत करता है तो एपीक्यूरस का फलसफा (दर्शन) पैदा हो जाता है. तख्त से प्यार करता है तो सिकंदर, चंगेज, तैमूर और हिटलर बन जाता है और जब खुदा से लौ लगाता है तो महात्मा बुद्ध का रूप अख्तियार कर लेता है.

पत्थर मारने का सलीका !

दुनिया बहुत विशाल है. कोई चींटी मारना बहुत बड़ा पाप समझता है. कोई लाखों इंसान हलाक कर देता है और अपने इस कार्य को बहादुरी और वीरता से ताबीर करता है. कोई मज़हब को लानत समझता है. कोई उसी को सबसे बड़ी नियामत.. इंसान को किस कसौटी पर परखा जाये. यों तो हर मज़हब के पास एक बटिया मौजूद है, जिस पर इंसान कसकर परखे जाते हैं, मगर वह बटिया कहां है ? . . . सब कौमों, सब मज़हबों, सब इंसानों की एकमात्र कसौटी, जिस पर आप मुझे और मैं आपको परख सकता हूं ?. . . वह धर्मकांटा कहां है, जिसके पलड़ों में हिंदू और मुसलमान, ईसाई और यहूदी, काले और गोरे तुल सकते हैं ?

यह कसौटी, यह धर्मकांटा, जहां कहीं भी है, न नया है न पुराना. . . न तरक्कीपसंद है, न प्रतिक्रियावादी. न निरावरण है और छुपा हुआ. न अश्लील है न शिष्ट. . . इंसान और इंसान के सारे कर्म इसी तराजू में तोले जा सकते हैं. मेरे नज़दीक किसी और तराज़ू की कल्पना करना ही बड़ी हिमाकत है.

हर इंसान दूसरे इंसान को पत्थर मारना चाहता है. हर इंसान दूसरे इंसान के कर्म परखने की कोशिश करता है. यह उसकी फितरत है, जिसे कोई भी हादसा तबदील नहीं कर सकता. मैं कहता हूं कि अगर आप मेरे पत्थर मारना ही चाहते हैं तो खुदा के लिए, ज़रा सलीके से मारिये. मैं उस आदमी से हरगिज़-हरगिज़ अपना सिर फुड़वाने के लिए तैयार नहीं, जिसे सिर फोड़ने का सलीका ही न आता हो. अगर आपको यह सलीका नहीं आता, तो सीखिये. दुनिया में रहकर जहां आप नमाज़ें पढ़ना, रोज़े रखना और महफिलों में जाना सीखते हैं, वहां पत्थर मारने का ढंग भी आप को सीखना चाहिए.

"अदब लाश नहीं, जिसे डाक्टर मेज़ पर लिटा-कर पोस्ट-मार्टम शुरू कर दे. अदब बीमारी नहीं, बल्कि बीमारी का रद्दे-अमल है. दवा भी नहीं, जिसके इस्तेमाल के लिए औकात और मिकदार की पाबंदी आयद की जाती है. अदब दर्जा हरारत है अपने मुल्क का, अपनी कौम का. वह उसकी सेहत और बीमारी की खबर देता रहता है.

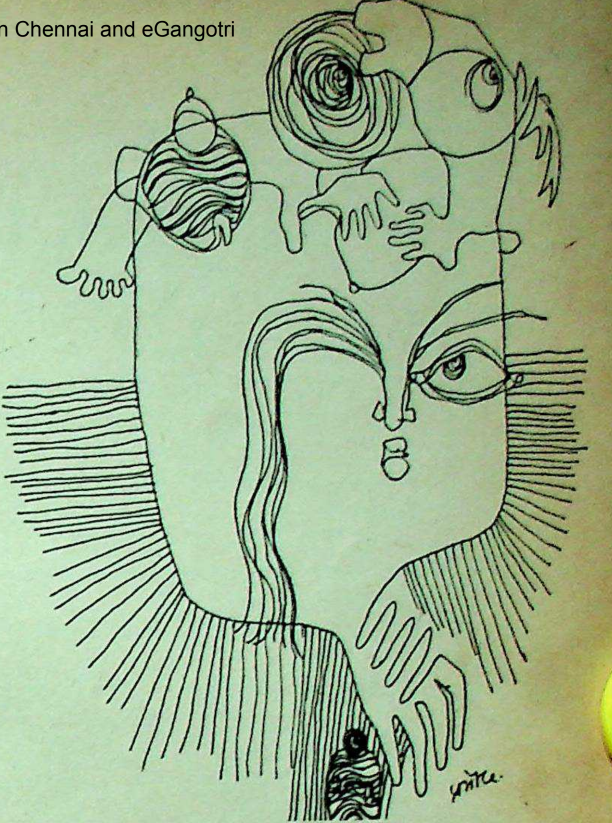

आप खुदा को खुश करने के लिए सौ हीले करते हैं. मैं आपके इस कदर नज़दीक हूं. मुझे खुश करना भी आपका फर्ज़ है. मैंने आपसे कुछ ज़्यादा तलब तो नहीं किया ? मुझे बड़े शौक से गालियां दीजिये. मैं गाली को बुरा नहीं समझता. इसलिए कि यह कोई गैर-फितरी चीज़ नहीं, लेकिन ज़रा सलीके से दीजिये. न आपका मुंह बदमज़ा हो और न मेरे ज़ौक को सदमा पहुंचे.

अदब की बेअदबियां !

मेरे नज़दीक बस यह सिलसिला भी एक कसौटी है. इंसान के हर कर्म के लिए, उसके गुनाह के लिए, उसके सवाब के लिए, उसकी शायरी के लिए, उसके अफसानों के लिए. मुझे नाम-निहाद (तथाकथित) आलोचकों में कोई दिलचस्पी नहीं. नुक्ताचीनियां सिर्फ पत्तियां नोंचकर बिखेर सकती हैं, लेकिन उन्हें जमा करके एक सालम फूल नहीं बना सकतीं.

बहुत से आलोचक गुज़र चुके हैं, लेकिन इस अदब से बेअदबियां दूर नहीं हुई. बहुत से पैगंबर आ चुके हैं, लेकिन इंसान एक दूसरे से संगठित नहीं हुआ. यह एक बहुत बड़ा दुखांत है, लेकिन मुसीबत यह है कि यह दुखांत ही इंसानियत की किस्मत है. उसकी ज़िंदगी और उसकी मौत, उसकी जवानी और उसका बुढ़ापा.. . . यह दुखांत ही सआदत हसन मंटो है. यह दुखांत ही आप हैं. यह दुखांत ही सारी दुनिया है, जिसमें कसौटियां ज़्यादा हैं और कसे जाने वाले कम. जिसमें पत्थर कम हैं और सिर फोड़ने वाले ज़्यादा ! □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो का सवाल था कि

आपने क्या फैसला किया ?

पं. त्रिलोक नाथ 'आज़म' उर्दू के मशहूर रिसाले 'दस्तगीर' (सन् 1938-1952) के व्यवस्थापक, प्रकाशक और संपादक रहे हैं. जहां उन्होंने पारसी रंग-शैली में अनेक नाटक लिखे हैं, वहीं 'गीता' का उर्दू में पद्यानुवाद कर ख्याति प्राप्त की है. शायरी में रूहानियत इनका विशेष रंग है. संप्रति वे 83 वर्ष की आयु में पारसी रंगमंच पर एक पुस्तक लिख रहे हैं और यूनानी पद्धति के चिकित्सक भी हैं. प्रस्तुत है मंटो से हुई उनकी पहली और आखिरी मुलाकात.

प्रस्तुति : हरीश नवल

सन् 1939 के आसपास की बात है, चांदनी चौक में उर्दू पत्रिका 'दस्तगीर' के कार्यालय में संपादक की कुर्सी पर बैठा मैं 'दस्तगीर' के लिए रचनाएं देख रहा था. मेरे सामने फैली अनेक रचनाओं में सआदत हसन मंटो की एक कहानी भी थी. मंटो ने पहली बार कोई रचना 'दस्तगीर' को भेजी थी. मेरे संस्कार और मंटो के प्रति मेरे पूर्वग्रह उनकी कहानी को अपनी पत्रिका के योग्य न समझते थे. वह कहानी रोचक हो सकती थी किंतु मुझे मंटो की नंगी बयानी कतई पसंद न थी और मैं वह कहानी प्रकाशित न करने का निर्णय मन में ले रहा था.

इसे संयोग ही कहा जायेगा कि जिस व्यक्ति की कहानी पर मैं विचार कर रहा था, वही मंटो, थोड़ी देर बाद मेरे कार्यालय में हाजिर थे. उन्हें देख मैं बेहद प्रसन्न हुआ और गर्मजोशी से उनका स्वागत किया. वह शांत तबियत के प्रसन्नचित व्यक्ति लग रहे थे. चाय के दौर में उनसे खुली बातचीत हुई.

मेरे बताने पर कि मैं उन्हीं की कहानी पर विचार कर रहा था, उन्होंने मुस्कराते हुए पूछा, आपने क्या फैसला किया?

कुछ संकोच से मैंने उनसे क्षमा मांगते हुए बताया कि मैं उनकी कहानी प्रकाशित नहीं करना चाहता था.

उन्होंने चेहरे पर बिना कोई भाव लाये मेरी नापसंदगी का कारण पूछा. मैंने पत्रिका के साहित्यिक स्वर को गर्व से बयान करते हुए जवाब दिया कि उनकी कहानी इस साहित्यिक स्वर या स्तर को नहीं छूती है. "इसमें वह क्या है जो साहित्यिक नहीं है?" उन्होंने शांत गंभीर स्वर में पूछा. मैं सफल पत्रिका के सफल संपादन के जोश में कह गया, "मैं आपकी रचनाओं को समाज और साहित्य के लिए उपयोगी नहीं मानता. . . आपके कथा-साहित्य के नंगेपन को बर्दाश्त नहीं कर सकता. हालांकि आपको भी प्रेमचंद, सुदर्शन, कृश्नचंदर और अश्क की भांति बहुत बड़े पाठक वर्ग द्वारा पढ़ा जाने लगा है, लेकिन माफ करें, उनकी कहानियों में जिस समाज के दर्द का बयान किया जाता है, वह आपकी कहानियों में नहीं है. आपकी कहानियों में ज़िंदगी का जो ज़ोश है उसे आप एक सही अर्थ दें तो आप उच्चकोटि के साहित्यकार कहला सकते हैं.

▣

मैं समझता था कि मंटो साहब मेरी टिप्पणी सुनकर क्रोधित हो उठेंगे किंतु वह उत्तेजित न होकर संजीदगी से बोले, "आज़म साहब, मैं आपका शुक्रगुज़ार हूं कि आपने मुझे अच्छी शिक्षा देने की कोशिश की. मगर यह तभी मुमकिन हो सकता है जब मैं समाज में हज़ारों बुराइयां देखने की बजाय सैकड़ों खूबियां देखूं. आप एक चिकित्सक और संपादक साहित्यकार हैं, इसलिए समाज और देश की नब्ज़ देखते रहे हैं और एक रहनुमा की तरह दवा करते हैं. पर मैं न रहनुमा नहीं, एक अदना-सा लेखक हूं. एक चित्रकार की तरह देश और समाज की तस्वीर अपने नज़रिये से बनाता हूं. वही तस्वीर पेश करना ही एक चित्रकार का काम है. मैं वो नहीं जो—रात को खूब ही पी/ सुबह को तौबा कर ली/ रिंद के रिंद रहे/ हाथ से जन्नत न छूटी. मैं समाज के सामने कुछ और, और व्यक्तिगत जीवन में कुछ और नहीं हूं. क्या आप गवारा करेंगे कि कोई चित्रकार आपकी तस्वीर बनाते हुए आपका चेहरा इस कदर तराश दे कि पहचानने वाले आपकी तस्वीर पहचान ही न पायें. मेरी बनायी तस्वीर भी इसी तरह झूठी नहीं होती. मैं कोरी कल्पनाएं नहीं करता हूं, बल्कि आपके सामज ही में घट रही वास्तविकताओं की वह तस्वीर खींचता हूं जिनसे आप बचना चाहते हैं."

▣

उनके इस अकाट्य तर्कपूर्ण कथन का मैं कायल तो हो गया, पर फिर भी किसी तरह मैंने एक छोटा-सा प्रश्न उनके सामने उछाल दिया, "और आपकी कहानियों का नंगापन?"

मंटो ने चाय के चंद घूंट लेकर उसी गंभीरता से उत्तर दिया, "मैं सेक्स जैसे जान-बूझकर छिपाये जाने वाले विषयों पर दिल खोलकर बहस करता हूं लेकिन खुद को उसमें लिप्त नहीं रखता. जब **समाज में चारों ओर हवस के पुजारी ही नज़र आयें. जब कला के नाम पर भी वासना ही दिखायी पड़े तो मैं उन्हें क्यों छिपाऊं? मेरी कहानियों में आपको जहां नंगापन नज़र आता है. वहां मुझे इंसानियत दम तोड़ती नज़र आती है और आप मुझे माफ करें, जहां भी ये दम तोड़ती नज़र आयेगी, मेरी कलम पूरी ताकत से चलेगी, चाहे आप उसे छापें या न छापें."**

मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो उठा. इससे पहले कि मैं प्रकृतिस्थ हो सकूं, मंटो साहब उठे और 'फिर मिलेंगे! आमीन!' कहकर मुझे बुरी तरह परास्त कर सीढ़ियां उतर गये. ☐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

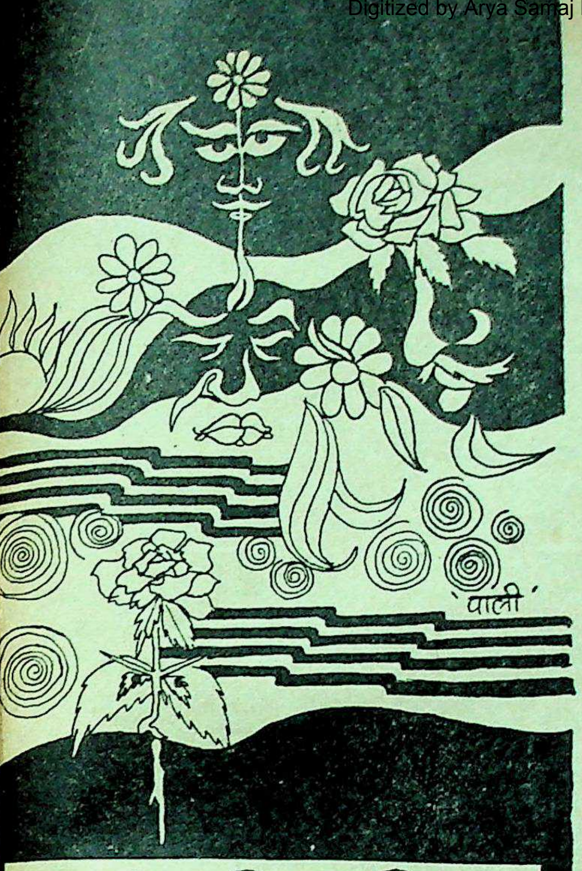

फूलों की साजिश

बाग में जितने फूल थे, सब के सब बागी हो गये. गुलाब के सीने में बगावत की आग भड़क रही थी. उसकी एक-एक रग आग्नेय भावना के अधीन फड़क रही थी. एक रोज उसने अपनी कांटों भरी गरदन उठायी और सोच-विचार को ताक पे रखकर अपने साथियों से मुखातिब हुआ, "किसी को कोई हक हासिल नहीं कि हमारे सीने से अपने ऐश का सामान मुहैया करे..... हमारी ज़िंदगी की बहारें हमारे लिए हैं और हम उसमें किसी का हस्तक्षेप गवारा नहीं कर सकते."

गुलाब का मुंह गुस्से से लाल हो रहा था. उसकी पंखड़ियां थरथरा रही थीं.

चमेली की झाड़ी में तमाम कलियां यह शोर सुनकर जाग उठीं, और हैरानी में एक दूसरे का मुंह तकने लगीं. गुलाब की मर्दाना आवाज़ फिर बुलंद हुई, "हर जीव को अपने हकों की निगरानी का हक हासिल है, और हम फूल इससे अलग नहीं हैं. हमारे दिल ज़्यादा नाज़ुक और हस्सास (संवेदनशील) हैं. गर्म हवा का एक झोंका हमारी रंगो-बू की दुनिया को जलाकर खाक कर सकता है और शबनम का एक बेमकदार कतरा हमारी प्यास बुझा सकता है. क्या हम उस काने माली के खुरदरे हाथों को बर्दाश्त कर सकते हैं, जिस पर मौसमों की तबदीली का कुछ असर ही नहीं होता!"

मोलिया के फूल चिल्लाये, "हरगिज नहीं !" लाला की आंखों में खून उतर आया और कहने लगा, "उसके जुल्म से मेरा सीना दाग़दार हो रहा है. मैं पहला फूल हूं जो इस जल्लाद के खिलाफ़ बगावत का सुर्ख झंडा बुलंद करेगा." यह कहकर वह गुस्से से थरथर कांपने लगा.

चमेली की कलियां हैरान थीं कि यह शोर क्यों बुलंद हो रहा है. एक कली नाज़ के साथ गुलाब के पौधे की तरफ झुकी और कहने लगी, "तुमने मेरी नींद खराब कर दी है! आखिर गला फाड़-फाड़ कर क्यों चिल्ला रहे हो ?"

गुलखेरो, जो कुछ दूर खड़ा गुलाब की जोरदार तकरीर पर गौर कर रहा था, बोला, "कतरा-कतरा मिलकर दरिया बनता है. यद्यपि हम कमज़ोर फूल हैं, लेकिन अगर हम सब मिल जायें तो कोई वजह नहीं कि हम अपनी जान के दुश्मन को पीसकर न रख दें. हमारी पत्तियां अगर खुशबू पैदा करती हैं तो वे जहरीली गैस भी तैयार कर सकती हैं. भाइयो, गुलाब का साथ दो और अपनी फतह समझो."

गुलाब कुछ कहने ही वाला था कि चमेली की कली ने अपने मर्मरी जिस्म पर एक थरथरी पैदा करते हुए कहा, "यह सब बेकार बातें हैं... आओ, तुम मुझे शे'र सुनाओ. मैं आज तुम्हारी गोद में सोना चाहती हूं.... तुम शायर हो. मेरे प्यारे, आओ ! हम बहार के इन खुशगवार दिनों को ऐसी फिज़ूल बातों में ज़ाया न करें और उस दुनिया में चलें, जहां नींद ही नींद है... मीठी और राहतबख़्श नींद !"

गुलाब के सीने में एक प्रचंडता पैदा हो गयी. उसकी नब्ज़ की धड़कन तेज हो गयी. उसे ऐसा महसूस हुआ कि वह किसी अथाह गहराई में उतर रहा है.

उसने कली की बातचीत के असर को दूर करने की चेष्टा करते हुए कहा, "नहीं ! मैं मैदाने-जंग में उतरने की कसम खा चुका हूं. अब ये तमाम रोमान मेरे लिए बेमानी हैं."

कली ने अपने लचकीले जिस्म को बल देकर ख्वाब भरे लहजे में कहा, "आह ! मेरे प्यारे गुलाब ! ऐसी बातें न करो. मुझे दहशत होती है... चांदनी रातों का ख़्याल करो... जब मैं अपना लिबास उतारकर उस नूरानी फव्वारे के नीचे नहाऊंगी तो तुम्हारे गालों पर सुर्खी का उतार-चढ़ाव मुझे कितना प्यारा मालूम होगा और तुम मेरे खूबसूरत लब किस तरह दीवाना-वार होकर चूमोगे.....छोड़ो इन फिज़ूल बातों को.... मैं तुम्हारे कंधे पर सिर रखकर सोना चाहती हूं."

और चमेली की नाज़ुक-अदा कली गुलाब के थर्राते हुए गाल के साथ लगकर सो गयी... गुलाब मदहोश हो गया. चारों तरफ से एक अरसे तक दूसरे फूलों की सदाएं (आवाज़ें) बुलंद होती रहीं, मगर गुलाब न जागा. सारी रात वह बदमस्त रहा.

सुबह काना माली आया. उसने गुलाब के फूल की टहनी के साथ चमेली की कली चिमटी हुई पायी, उसने अपना खुरदरा हाथ बढ़ाया और दोनों को तोड़ लिया... ! □

● अनुवाद : सुरजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफसाना-निगार और जिंसी मसाइल

शीलता-अश्लीलता यद्यपि आज तक न तो परिभाषित हो पायी है और न इसे किसी एक संदर्भ में रेखांकित किया जा सका है. किंतु मंटो क्योंकि कहानीकार के रूप में अश्लीलता संबंधी आरोपों और लांछनों का शिकार रहे हैं, संभवतः इसी लिए उन्होंने इस विवादास्पद विषय पर अपने अंतर्मन को भी खुलकर पेश किया. प्रस्तुत लेख भी मंटो की तरफ से अपनी कहानियों के बचावमें कोई सफाई नहीं अपितु कुछ सवाल हैं, जो उन्हें और उनकी रचनाधर्मिता को समझने में सहायक सिद्ध होंगे.

भूख किसी किस्म की हो, बहुत खतरनाक हैं. आज़ादी के भूखों को अगर गुलामी की जंज़ीरें ही पेश की जाती हैं, तो इंकलाब ज़रूर बरपा होगा. रोटी के भूखे अगर फाके ही खींचते रहें, तो वे तंग आकर दूसरे का निवाला ज़रूर छीनेंगे. मर्द की नज़रों को अगर औरत के दीदार का भूखा रखा गया तो शायद वह अपने हम-जिंसों और हैवानों ही में उसका अक्स देखने की कोशिश करे.

दुनिया में जितनी लानतें हैं. भूख उनकी मां है. भूख भीख मांगना सिखाती है. भूख जुर्मों को उकसाती है. भूख इस्मत-फरोशी पर मजबूर करती है. भूख इंतहापसंदी का सबक देती है. इसका हमला बहुत शदीद, उसका वार बहुत भरपूर और उसका ज़ख्म बहुत गहरा होता है. भूख दीवाने पैदा करती है, दीवानगी भूख पैदा नहीं करती.

दुनिया के किसी कोने का लेखक हो,

तरक्कीपसंद हो या प्रत्यागामी, बूढ़ा हो या जवान, उसके सामने दुनिया के तमाम बिखरे हुए मसाइल रहते हैं. चुन-चुनकर वह उन पर लिखता रहता है. कभी किसी के हक में, कभी खिलाफ़.

आज का अदीब बुनियादी तौर पर आज से पांच सौ साल पहले के अदीब से कोई ज्यादा मुख्तलफ नहीं. हर चीज़ पर नये-पुराने का लेबल वक्त लगाता है, इंसान नहीं लगाता. हम आज नये अदीब कहलाते हैं. आने वाला कल हमें पुराना कर अल्मारियों में बंद कर देगा, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम बेगार किये जायें. हमने मुफ्त में मगज़-दर्दी की. घड़ी की सुई जब एक से गुज़र कर दो की तरफ रेंगती है, तो एक का अंक बेमतलब नहीं हो जाता. पूरा सफर तय कर के सुई फिर उसी अंक की तरफ लौटती है. यह घड़ी का असूल भी है और दुनिया का भी.

आज के नये मसाइल भी गुज़रे हुए कल के पुराने मसाइल से बुनियादी तौर पर मुख्तलफ हैं. आज की बुराइयों के बीज गुज़रे हुए कल ने बोये थे.

जिंसी मसाइल जिस तरह आज के नये अदीबों के सामने हैं, उसी तरह पुराने अदीबों के सामने भी थे. उन्होंने इन पर अपने रंग में लिखा. हम आज अपने रंग में लिख रहे हैं.

मुझे मालूम नहीं, मुझ से जिंसी मसाइल के बारे में बार-बार क्यों पूछा जाता है. शायद इसलिए कि लोग मुझे तरक्कीपसंद कहते हैं या शायद इसलिए कि मेरे चंद अफसाने जिंसी मसाइल के बारे में हैं. या फिर इसलिए कि आज के नये अदीबों को कई हज़रात 'जिंसी-ज़ेदा' (यौनग्रस्त) करार देकर उन्हें अदब, मज़हब और समाज से एकदम खारिज कर देना चाहते हैं.

रोटी और पेट, औरत–मर्द–यह दो बहुत पुराने रिश्ते है. अज़ली और अब्दी. रोटी ज्यादा अहम हैं या पेट? औरत ज्यादा जरूरी हैं या मर्द? मैं इस बारे में कुछ नहीं कह सकता. इसलिए कि मेरा पेट रोटी मांगता है, लेकिन मुझे मालूम नहीं कि गेहूं भी मेरे पेट के लिए उतना ही तरसता है, जितना कि मेरा पेट.

फिर भी जब मैं सोचता हूं कि ज़मीन ने गेहूं के खोशों (बालियों) को बेकार जन्म नहीं दिया होगा, तो मुझे म... होती है कि मेरे पेट ही के लिए ... खेतों में सुनहरी बालियां ... और फिर हो सकता है कि मेरा पे... पैदा हुआ हो और बालियां ...

कुछ भी हो, लेकिन यह बात ... रोशन (उजले दिन) की तरह ... है कि दुनिया का अदब सिर्फ ... रिश्तों से ही संबंध रखता है. ... किताबें भी, जिन को आसमानी ... कहना चाहिए, रोटी-पेट और ... मर्द के तज़करों (जिक्रों) से खाली ...

मगर सवाल पैदा होता हैं कि ... मसाइल इतने पुराने हैं कि इनका ... इलहामी किताबों में भी आ चुका ... तो फिर क्यों आज के अदीब इन पर ... आज़माते हैं. क्यों औरत और ... संबंधों को बार-बार कुरेदा जाता ... उरियानी (अश्लीलता-नग्नता) ... जाती हैं. जबाव इस सवाल का यह ... अगर एक ही बार झूठ न बोलने ... चोरी न करने का उपदेश करने पर ... दुनिया झूठ और चोरी से परहेज ... तो शायद एक ही पैगंबर काफी ... लेकिन जैसा कि आप जानते हैं ... की सूचि खासी लंबी है.

हम लिखने वाले पैगंबर नहीं, ... ही चीज़ को, एक ही मसले को ... हालात में मुख्तलफ ज़ावियों ... हैं और जो कुछ हमारी समझ में ... दुनिया के सामने पेश कर देते ... कभी मजबूर नहीं करते कि ... कबूल ही करे.

हम कानूनसाज़ नहीं, मुह...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरीक्षक भी नहीं, निरीक्षण और क़ानूनसाज़ी दूसरों का काम है.

हम हुकूमतों पर नुक्ताचीनी करते हैं, लेकिन खुद हाकिम नहीं बनते. हम इमारतों के नक्शे बनाते हैं, लेकिन राजगीर नहीं. हम मर्ज़ बताते हैं, लेकिन दवाखानों के व्यवस्थापक नहीं.

हम जिंसियात पर नहीं लिखते. जो समझते हैं कि हम ऐसा करते हैं, यह उनकी गलती है. हम अपने अफसानों में खास औरतों और खास मर्दों के हालात पर रौशनी डालते हैं—हमारे किसी अफसाने की हीरोइन से अगर उसका मर्द सिर्फ इस लिए बेज़ार हो जाता है कि वह सफेद कपड़े पसंद करती है और सादगी-पसंद है तो दूसरी औरतों को उसे असूल नहीं समझ लेना चाहिए. यह नफरत क्यों पैदा हुई और किन हालात में पैदा हुई? इस सवाल का जवाब आपको हमारे अफसाने में ज़रूर मिल जायेगा.

▣

जो लोग हमारे अफसानों में लज़्ज़त हासिल करने के तरीके देखना चाहते हैं, उन्हें यकीनन नाउम्मीदी होगी. हम दांवपेच बताने वाले खलीफे नहीं. हम जब अखाड़े में किसी को गिरता देखते हैं, तो अपनी समझ के मुताबिक आपको यह समझाने की कोशिश करते हैं कि वह क्यों गिरा था?

हम आशावादी हैं. दुनिया की स्याहियों में हम उजाले की लकीरें देख लेते हैं. हम किसी को हकारत (उपेक्षा) की नज़र से नहीं देखते. चकलों में जब कोई टखियाई अपने कोठे पर से किसी राहगुज़र पर पान की पीक थूकती हैं तो हम दूसरे तमाशाइयों की तरह न तो कभी उस राहगुज़र पर हंसते हैं और न कभी उस टखियाई को गालियां देते है. हम यह घटना देख कर रुक जायेंगे. हमारी निगाहें इस गलीज़ पेशेवर औरत के अर्धनग्न लिबास को चीरती हुई उसके स्याह ज़ख्मों भरे जिस्म के अंदर दाखिल होकर उसके दिल तक पहुंच जायेंगी—उसको टटोलेंगी और टटोलते-टटोलते हम खुद कुछ अरसे के लिए तसव्वर में वही घृणित और दुर्गंधि रंडी बन जायेंगे ... सिर्फ इसलिए कि इस घटना की तसवीर ही नहीं, बल्कि उसकी असल प्रेरणा की वजह भी पेश कर सकें.

जब किसी अच्छे खानदान की जवान, सेहतमंद और खूबसूरत लड़की किसी मरियल, बदसूरत और कंगाल लड़के के साथ भाग जाती है, तो हम उसे घृणित करार नहीं देंगे. दूसरे, उस लड़की का अतीत, वर्तमान और भविष्य अख्लाक की फांसी में लटका देंगे, लेकिन हम वह छोटी-सी गिरह खोलने की कोशिश करेंगे, जिसने उस लड़की की बुद्धि को बेहिस किया.

इंसान एक दूसरे से कोई ज्यादा भिन्न नहीं. जो गलती एक मर्द करता है, दूसरा भी कर सकता है. जब एक औरत बाज़ार में दुकान लगा कर अपना जिस्म बेच सकती है, तो दुनिया की सब औरतें ऐसा कर सकती हैं, लेकिन गलतकार इंसान नहीं, वह हालात है, जिन की खेतियों में इंसान अपनी गलतियां पैदा करता है और उनकी फसलें काटता है.

ज्यादातर जिंसी मसाइल ही आज के नये अदीबों के ध्यान का केंद्र क्यों बने हुए हैं. इसका जवाब मालूम करना कोई ज्यादा मुश्किल नहीं. यह ज़माना अजीबो-गरीब किस्म के विरोधाभासों का ज़माना है—औरत करीब भी है, दूर भी! कहीं वह निरावरण नज़र आती है तो कहीं कपड़ों में लिपटी हुई. कहीं औरत, मर्द के भेस में दिखाई देती, कहीं, मर्द, औरत के भेस में.

▣

दुनिया एक बहुत बड़ी करवट ले रही है. हिंदुस्तान भी जहां आज़ादी का नन्हा-मुन्ना बच्चा गुलामी से अपने आंसू पोंछ रहा है, मिट्टी का नया घरौंदा बनाने के लिए ज़िद कर रहा है. पूर्वी तहज़ीब की चोली के बंद कभी खोले जाते हैं, कभी बंद किये जाते हैं. पश्चिमी तहज़ीब के चेहरे का गाज़ा (पाउडर) कभी हटाया जाता है, कभी लगाया जाता है. एक अफरा-तफरी-सी मची है. नये खट-बुने पुरानी खाटों की मूंज उधेड़ रहे हैं. पुराने खट-बुने चिल्ला रहे हैं, हिली हुई चूलों से कहीं खटमल निकल रहे हैं. कहीं पिस्सू. कोई कहता है, इन्हें ज़िंदा रहने दो. कोई कहता है, नहीं, फना कर दो. इस धांधली में, इस शोरश (हमले) में हम नये लिखने वाले अपनी कलम संभाले कभी उस मसले से टकराते हैं, कभी इस मसले से!

अगर हमारी तहरीरों (रचनाओं) में औरत और मर्द के संबंधों का ज़िक्र आपको ज्यादा नज़र आये तो यह एक फितरी (स्वाभाविक) बात है. मुल्क-मुल्क से सियासी तौर पर जुदा किये जा सकते हैं, एक मजहब दूसरे मजहब से अपनी-अपनी श्रद्धा के आधार पर अलग किया जा सकता है. दो ज़मीनों को एक कानून एक दूसरे से बेगाना कर सकता है, लेकिन कोई सियासत, कोई अकीदा (असूल), कोई कानून, औरत और मर्द को एक दूसरे से दूर नहीं कर सकता.

▣

औरत और मर्द में जो फासला है, उसको पार करने की कोशिश हर ज़माने में होती रहेगी. औरत और मर्द में जो एक लरज़ती हुई दीवार बाधक है, उसे संभालने और गिराने की कोशिश हर सदी, हर युग में होती रहेगी. जो इसे उरियानी (नग्नता) समझते हैं, उन्हें अपने एहसास के नंग पर अफसोस होना चाहिए, जो उसे अख्लाक की कसौटी पर परखते हैं, उन्हें मालूम होना चाहिए कि अख्लाक ज़ंग है, जो समाज के उस्तरे पर जम गया है.

जो समझते हैं कि नये अदब ने जिंसी मसाइल पैदा किये हैं, गलती पर हैं, क्योंकि हकीकत यह है कि जिंसी मसाइल ने उस नये अदब को पैदा किया है—उस नये अदब को, जिस में आप कभी-कभी अपना ही अक्स देखते हैं और झुंझला उठते हैं... हकीकत ख्वाह शक्कर ही में लपेट कर पेश की जाये, उसकी कड़वाहट दूर नहीं होगी.

हमारी तहरीरें आपको कड़वी और कसैली लगती हैं, मगर अब तक जो मिठास आपको पेश की जाती रही है, उस से इंसानियत को क्या फायदा हुआ है? नीम के पत्ते कड़वे सही, मगर खून ज़रूर साफ करते हैं. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो के हास्य एकांकी

मंटो प्रायः कहानीकार के रूप में ही प्रख्यात हैं. बहुत कम जानकारी है कि मंटो एक लंबी अवधि तक आकाशवाणी से संबद्ध रहे और उन्होंने दसियों हास्य-एकांकी लिखे, जो खूब लोकप्रिय भी हुए. हंसना एक बात होती है और रोना दूसरी, परंतु मंटो के लेखन की खूबी हंसाते-हंसाते रुलाने और सोचने को मजबूर करना और रुलाते-रुलाते हंसाने की जीवंतता महसूस करवाना है. प्रस्तुत है उनका एक हास्य एकांकी जो खुदकुशी की जिजिविषा को मुखर करता है--

खुदकुशी

पात्र

औरत : आजकल के ज़माने की फैशनेबल औरत

चचा : पुराने ढंग के बुजुर्ग

हीर : हीर-रांझा ड्रामा की हीर. वही लिबास

नौकरानी : जवान औरत, सेविकाओं के लिबास में

▣ ▣

(परदा उठता है. स्टेज पर बिल्कुल अंधेरा छाया है. सामने एक औरत कुर्सी पर बैठी है. बाल खुले हैं. सिर्फ उसके चेहरे पर रोशनी पड़ रही है. पृष्ठभूमि में आर्केस्ट्रा पर एक दर्दनाक धुन बजायी जा रही है. औरत उठती है और सफेद रूमाल से अपने आंसू पोंछती है.)

औरत : (सिसकियां लेती है) मेरी दुनिया अंधेरी हो गयी है. चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा दिखाई दे रहा है. ए खुदा, अब क्या होगा. ज़िंदगी में अब क्या लुत्फ बाकी रह गया है! वह जिससे मुझे मुहब्बत थी, वह जिसकी खातिर मैं ज़िंदा थी . . वह जो मेरे दिल की धड़कन थी, हमेशा-हमेशा के लिए सो गया है. अब मैं क्या हूं? उसके बगैर क्या मेरी ज़िंदगी ऐसा साज़ नहीं, जिसकी सारी तरबें अलग कर दी गयी हों. . . जिसके सारे तार नोच डाले गये हों. . . . मौत . . . आह. . . . ज़ालिम मौत. . . .तूने कुछ देर तो सब्र किया होता. . . . .इतनी जल्दी क्या थी. . . . दुनिया में तुझे कई आदमी मरने के लिए तैयार मिल जाते. . . वह तो अभी ज़िंदा रहना चाहता था. उसने तो अभी मुहब्बत की दुनिया बसाई ही थी, कि तूने अपना सिर आगोश में ले लिया. (रोती है). . . .मैं क्या सोच रही हूं. . . . यह रोना-धोना कैसा. . . उसके साथ तो मेरी ज़िंदगी का भी खात्मा हो चुका है. मुझे खुदकुशी में देर न करनी चाहिए.

(आहिस्ता-आहिस्ता स्टेज का अंधेरा दूर होना शुरू होता है. चंद लम्हों में पूरा स्टेज रोशन हो जाता है. औरत अपने परेशान बाल संवारती है. कुर्सी पर बैठती है और घंटी बजाती है. पृष्ठभूमि का संगीत बंद हो जाता है.)

(नौकरानी दाखिल होती है.)

नौकरानी : जी सरकार.

औरत : मैं खुदकुशी करना चाहती हूं.

नौकरानी : कब सरकार?

औरत : अभी इसी वक्त.

नौकरानी : बहुत अच्छा सरकार.

औरत : चचा जान को भेज दो यहां.

नौकरानी : बहुत अच्छा सरकार. (चली जाती है.)

औरत : (उठकर फैसलाकुन लहजे में) मैं खुदकुशी कर लूंगी. चचाजान की सख्तगीरी और रूढ़िवादिता के क[illegible] ही मेरे महबूब ने जान दी है. अगर [illegible] जान शादी पर रजामंद हो जाते [illegible] उसकी सेहत चुटकियों में अच्छी हो [illegible] मगर वह अपने हठ पर कायम रहे [illegible] और. . . .!

(कदमों की चाप. फिर च[illegible] का दाखिला.)

चचा : बेटी! तूने मुझे बुला[illegible]

औरत : हां चचाजान! [illegible] आपको बुलाया है.

चचा : क्या बात है ?

बेटी : मैं खुदकुशी करना चाह[illegible]

चचा : ख्याल बुरा नहीं. [illegible] तुम्हारा इरादा कब है ?

बेटी : इसी वक्त . . . [illegible]

(बैठ जाती है.)

चचा : (कुर्सी पर बैठ [illegible] रात के बारह बज चुके हैं और [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवा बारह बजे सो जाने का आदी हूं. तुम्हें खुदकुशी करने से पहले कुछ लिखना भी होगा, जिस पर काफी वक्त सर्फ हो जायेगा, और फिर मुझे उसकी इबारत की गलतियां ठीक करनी पड़ेंगी, क्योंकि जितने खत तुमने अब तक अपने दोस्त को लिखे, सब के सब ज़बान की गलतियों से पुर (भरे हुए) हैं. मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी आखिरी लिखित जो कई आदमियों की नज़र से गुज़रेगी, गलत-सलत हो. मेरी ज़ाती ज़बानदानी मशहूर है. मेरे शेअर लोग सनद के तौर पर पेश करते हैं. अगर तुम्हारी लिखित में इमला और ग्रामर की गलतियां मौजूद हैं तो मेरी नाक कट जायेगी.

टी : मुझे ज़बान की कोई परवाह नहीं. मैं हमेशा ख़्यालों को तरजीह देती रही हूं और अपनी आखिरी लिखित में भी अपनी उस विशिष्टता को कायम रखूंगी. ज़बान आखिर है क्या ? उसको इतनी अहमियत क्यों दी जाती है! . . . मेरे खत जिनकी गलतियों से आपका नाक कटता है. . . .

चचा : नाक स्त्रीलिंग है, पुलिंग नहीं.

औरत : मैं जानती हूं, लेकिन आपकी नाक किसी सूरत में भी स्त्रीलिंग नहीं हो सकती. अगर आपकी नाक स्त्रीलिंग होती तो आप विलायत से वह मशीन कभी न मंगवाते, जिससे मोटी नाकें मोटी और पतली हो जाती हैं.

चचा : (उठ खड़ा होता है) तुम मेरी नाक पर नाजायज़ हमला कर रही हो.

औरत : (उठ खड़ी होती है) आप मेरी ज़बान पर बेजा एतराज़ कर रहे हैं.

चचा : तुमने बदतमीज़ी की. . .आखिरी हद तक पहुंचकर तरक्कीपसंद हो गयी हो.

औरत : आप मुझे गाली दे रहे हैं, जिसका आपको कोई हक नहीं है.

चचा : तुम भूलती हो. मैं तुम्हारा चचा हूं.

औरत : (बैठ जाती है) मैं भूल गयी हूं. आप वाकई मेरे चचा हैं, जिसका बहुत बड़ा सबूत यह है कि आपने मुझे अपनी मर्ज़ी की शादी करने की इजाज़त न दी.

चचा : (बैठ जाता है) अपनी मर्ज़ी से अगर कोई मर्द या औरत शादी करे तो उसे रूमान (रोमांस) लड़ाना कहते हैं, जो शरीफ घरानों में सख्त दूषित समझा जाता है. मैं शरीफ आदमी हूं. शरीफ आदमी होने के अलावा तुम्हारा चचा हूं, इसलिए मैंने ऐसे रूमान की इजाज़त नहीं दी.

औरत : आप रूमान लड़ाना क्यों कहते हैं. यह बहुत बुरा मालूम होता है.

चचा : फज़हा ने उसे यों ही लिखा है. इसमें अब कोई तब्दीली नहीं हो सकती.

औरत : रूमान लड़ाना बहुत भद्दी तरकीब है. मुर्गे लड़ाये जाते हैं. बटेरें लड़ाई जाती हैं. यह रूमान लड़ाना क्या हुआ ?

चचा : तुम खुदकुशी करने वाली थी.

औरत : मैं खुदकुशी करने वाली थी नहीं, बल्कि हूं. मुझे आपसे इजाज़त लेनी थी.

चचा : मेरी तरफ से तुम्हें इजाज़त है. खुदा करे, तुम इसमें कामयाब हो जाओ.

औरत : कामयाबी के लिए दुआ का शुक्रिया. . . . मगर इससे पहले कि मैं अपनी जान अपने हाथों से हलाक करूं, मैं अपना पूरा-पूरा इतमीनान करना चाहती हूं कि मेरी इस क्रिया से आपकी नाक को कोई सदमा नहीं पहुंचेगा.

चचा : नहीं! मौत से नाक को सदमा पहुंचने की संभावना बहुत ही कम होती है और फिर जब तुम अपनी आखिरी लिखित में साफ-साफ लिख दोगी कि मैंने यानी तुमने अपनी ज़िंदगी का खात्मा इसलिए किया था कि मुझे फलां आदमी से पाक-मुहब्बत थी. 'पाक' शब्द बहुत ज़रूरी है.

औरत : क्या मुहब्बत खुद ही पाक नहीं होती?

चचा : नहीं! अकेली मुहब्बत पाक नहीं हो सकती, जब तक उसका स्पष्टीकरण न किया जाये.

औरत : तो क्या मुहब्बत के साथ मुझे 'पाक' ज़रूर लिखना पड़ेगा?

चचा : तुम कोई फिक्र न करो. . . मैं इस लिखित का मसौदा तुम्हें तैयार करके दूंगा. तुम्हारा काम सिर्फ नकल करना रह जायेगा.

औरत : और अगर मैं इस इबारत की नकल करने से इनकार कर दूं?

चचा : तो मैं तुम्हें खुदकुशी की इजाज़त नहीं दूंगा.

औरत : (कुछ क्षण रुककर) चूंकि मुझे खुदकुशी करना है, इसलिए मैं आपकी इबारत नकल कर दूंगी. फरमाइये, इस लिखित का मसौदा मुझे कब मिल जायेगा?

चचा : कल सुबह नाश्ते पर!

औरत : ज़रा खुशखत लिखियेगा, ताकि मैं आसानी से पढ़ लूं. आप शिकस्ता खत में लिखने के आदी हैं.

चचा : मैं अपना खत (लेखन) नहीं बदल सकता, लेकिन मैं तीन-चार बार पढ़के तुम्हें सुना दूंगा. मेरा ख़्याल है, फिर नकल करने में तुम्हें कोई दिक्कत पेश न आयेगी.

औरत : बहुत बेहतर.

चचा : अच्छा, तो मैं अब जाता हूं. (चलता है.)

औरत : (उठकर) शबे-ख़ैर (शुभ-रात्रि)

चचा : शबे-ख़ैर! मैं अब सोते वक्त इसका मज़मून सोचूंगा. मुझे यकीन है कि बहुत ही शानदार चीज़ बन जायेगी. और कोई अजब नहीं कि खुदकुशी के बाद तुम फरहाद की शीरीं और मजनूं की लैला से भी बाज़ी ले जाओगी.

औरत : खुदा आपकी ज़बान मुबारक करे.

(चचा चला जाता है)

औरत : (कुछ क्षणों के बाद) कुछ फैसला तो हो गया. . . मुझे तो यह अंदेशा था कि चचा-जान मुझे खुदकुशी की इजाज़त ही नहीं देंगे. . . बहरहाल यह मरहला (पड़ाव) तय हो गया. अब उनका मज़मून तैयार हो जाये तो मैं उसे नकल करके फौरन ही ज़हर खा लूंगी. (अल्मारी की तरफ बढ़ती है) ज़हर मुझे अभी घोल-घालकर रख देना चाहिए, ताकि सुबह वक्त ज़ाया न हो. (अल्मारी में से ज़हर की शीशी निकालती है. पानी भरे गिलास में उसके चंद कतरे डालती है) कल सुबह नाश्ते पर. . . यानी चाय के बजाय मुझे यह ज़हर पीना होगा. . . (दस्तक होती है)

औरत : कौन है ?

(फिर दस्तक होती है)

औरत : कौन है ?

(कदमों की आवाज़. . . फिर सामने का दरवाज़ा खोला जाता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीर परेशान सी अंदर दाखिल होती है.

औरत : कौन हो तुम?

हीर : क्या मैं अंदर आ सकती हूं?

औरत : तुम अंदर आ सकती हो, मगर यह तो बताओ, कि तुम हो कौन?

हीर : मैं ज़रा दम ले लूं, तो आपको सब कुछ बताती हूं. मैं सख़्त घबराई हुई हूं. दरवाज़ा बंद कर दूं ? (और दरवाज़ा बंद कर देती है). यहां ज़रूर आ जायेगा.

औरत : कौन यहां आ जायेगा?

हीर : आप उसे जानती हैं?

औरत : किसे?

हीर : रांझे को.

औरत : कौन रांझा?

हीर : तख़्त हज़ारे दा रांझा. चौधरी मौजू का छोटा लड़का धीदो. जिसे लोग रांझे के नाम से पुकारते हैं.

औरत : मैं किसी चौधरी मौजू के लड़के धीदो को नहीं जानती. . . बताओ, तुम कौन हो?

हीर : हीर !

औरत : हीर कौन ?

हीर : महर चूचक की बेटी हीर. . . जिसे हीर सियाल भी कहते हैं.

औरत : मैं अब समझी . . . तो तुम हीर-रांझे वाली हीर हो. . . पर तुम यहां कैसे आ गयीं. . . कुर्सी पर बैठ जाओ.

हीर : (कुर्सी पर बैठ जाती है) मैं और रांझा दोनों सिनेमा देखने आये थे. फिल्म में हमारा ही किस्सा था. आदमी देखकर ही मेरा सिर चकराने लगा. चुनांचे भई, मैं तो वहां से इंटरवल होते ही भाग आयी. मगर मुझे डर यह है कि रांझा मेरा पीछा करता-करता यहां पहुंच जायेगा और मुझे पकड़कर फिर वहीं ले जायेगा.

औरत : कहां?

हीर : उसी जगह जहां हमें कैद किया गया है.

औरत : (कुर्सी पर बैठ जाती है) वहां और कौन-कौन हैं?

हीर : बहुतेरे हैं. शीरीं है. उसका चाहने वाला फरहाद है. लैला है, मजनूं है. मिरज़ा है, साहबां है. नल है, दमयंती है. बेशुमार ही हैं. . .

औरत : तुम्हें रांझे से अब मुहब्बत नहीं रही?

हीर : मुहब्बत कैसे कायम रह सकती है बहन! . . . उसे तो हर वक्त बांसुरी बजाने से काम है. शामत की मारी एक बार मैंने उससे कहा था कि तुम बहुत सुरीली बसुरी बजाते हो. . . अब उसके मुंह से निगोड़ा बांस का यह टुकड़ा जुदा ही नहीं होता. जब देखो, दरख़्त पर चढ़कर बांसुरी बजा रहा है. . यह दीवानापन नहीं, तो क्या है और फिर जनाब को ढोर-डंगर चराने का बहुत शौक है. . . . . मैं हज़ार बार कहती हूं कि रांझा, यह खेड़े नहीं, जहां तुम्हें गाय-भैंसें मिल जायेंगी. यहां दूध की नहरें बहती हैं. दूध पियो और मज़े से लंबी तानकर सो जाओ. मगर उसके सिर पर वही पुराना भूत सवार है. कहता है नहीं, जब दूध मौजूद है तो गाय-भैंसें भी कहीं न कहीं ज़रूर होंगी. . . एक दिन मैं उन्हें ढूंढ़ निकालूंगा. फिर हम दोनों उन्हें चराया करेंगे. शीरीं बेचारी भी उसी तरह फरहाद के हाथों बहुत दुखी है. जनाब चौबीस घंटे हाथ में तेशा लिये पत्थर फोड़ते हैं. . . शीरीं पूछती है, "फरहाद, यह तुम क्या कर रहे हो ?" जवाब मिलता है, "तुम्हारे लिए यह पहाड़ काटकर दूध की [illegible] जारी कर रहा हूं. . . वह बेचारी [illegible] है कि फरहाद ! यहां दूध की [illegible] नहरें मौजूद हैं, जिनको देख[illegible] मैं तंग आ गयी हूं. . . अगर कुछ [illegible] ही चाहते हो, तो इनमें से एक [illegible] कम कर दो. . . मगर वह शीरीं [illegible] नहीं सुनता और दिन-रात अपने [illegible] मशगूल रहता है. . . .

औरत : यह तो मुसीबत हुई!

हीर : मुसीबत जैसी मुसीबत . . . हमारा सिर्फ यह गुनाह है कि हम[illegible] मर्दों के लिए अपनी जान दी. . . [illegible] सोहनी की हालत तो मैं बयान न[illegible] सकती. . . महीवाल साहब हर [illegible] अपनी रान के गोश्त का कीमा बना[illegible] हैं और फिर उन नसीबों-जली को [illegible] करते हैं कि वह उस कीमे के [illegible] कबाब खाये. उसे उबकाइयां पर [illegible] काइयां आती हैं, मगर महीवाल [illegible] उसके मुंह में यह कबाब ठूंसते ही [illegible] हैं. . . .इसी पर बस नहीं. . . सोह[illegible] यह हुक्म आयद है कि वह रात को [illegible] घड़ा लेकर दूध की नहर तय किया[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दरियाए-चनाब में तैरने वाली दूध की नहर में कैसे तैर सकती है! मगर क्या करे, एक बार हिमाकत कर चुकी है, सो उसकी सज़ा भुगत रही है.

औरत : लैला का भी बुरा हाल होगा!

हीर : जी हां, लैला हज़ार बार मियां मजनूं से कह चुकी है, मुझे मत ढूंढो. मैं तुम्हारे सामने मौजूद हूं, मगर वह नहीं मानते और लैला को छोड़कर सहरा की खाक छानते रहते हैं.

औरत : मैं तो समझती थी कि तुम लोग बहुत खुश होगे.

चलती हूं... अपन तो मुकद्दर में बांसुरी की यही तानें लिखी हैं... खुदा हाफ़िज..

(दरवाज़ा खोलकर बाहर चली जाती है. बांसुरी की आवाज़ चंद लम्हों तक आती रहती है. फिर आहिस्ता-आहिस्ता गायब हो जाती है. औरत दरवाज़े के पास से हटकर कुर्सी पर बैठ जाती है और घंटी बजाती है. कदमों की आवाज... फिर नौकरानी का प्रवेश)

नौकरानी : जी सरकार!

औरत : मैंने खुदकुशी करने का ख़्याल छोड़ दिया है.

यह ड्रामे रोटी के उस मसले की पैदावार हैं जो हिंदुस्तान में हर उर्दू अदीब के सामने उस वक्त तक मौजूद रहता है, जब तक वह मुकम्मल तौर पर ज़ेहनी अपाहिज न हो जाये.

—मैं भूखा था, चुनांचे मैंने यह ड्रामे लिखे. दाद इस बात की चाहता हूं कि मेरे दिमाग ने पेट में घुसकर चंद मज़ाहिया (हास्य) ड्रामे लिखे हैं, जो दूसरों को हंसाते रहे हैं, मगर मेरे होठों पर एक पतली-सी मुसकराहट भी पैदा नहीं कर सके.

▣ सआदत हसन मंटो,
कूचा वकीलां,
अमृतसर.
२८ दिसंबर, १९४०

[एकांकी संकलन 'आओ' (मज़ाहिया ड्रामे) की भूमिका]

हीर : खाक भी खुश नहीं.... यह दुनिया जल्दी-जल्दी खत्म हो, तो हमें इस यातना से छुटकारा मिले. मुहब्बत की थी, लेकिन उस में मर जाना क्या ज़रूरी था! मैं तो बहन, उस वक्त को रोती हूं जब मैंने बगैर सोचे-समझे खुदकुशी कर ली. हीर, रांझे से पल भर के लिए जुदा नहीं हो सकती...शीरी, फरहाद से एक लम्हे के लिए नहीं हट सकती... ज़िंदगी अजीर्ण हो गयी है.

(दूर से बांसुरी की आवाज़ आती है.)

हीर : लीजिये, जनाब आ पहुंचे! दुनिया इतनी तरक्की कर गयी है. अगर कुछ बजाना ही है, तो वायलन बजायें, गिटार बजायें, सेक्सोफोन बजायें, मगर उन्हें समझाये कौन! ... अच्छा बहन,

नौकरानी : बहुत अच्छा सरकार!

औरत : चचाजान सो रहे हैं या जागते हैं.

नौकरानी : जागते हैं. मुझे अपने पास बिठाकर वह आपके लिए 'पाक मुहब्बत' पर एक मज़मून सोच रहे थे.

औरत : चचाजान से कह दो कि वह तुम्हें अपने पास बिठाकर मेरे लिए 'पाक मुहब्बत' पर मज़मून न सोचें. मैंने खुदकुशी का इरादा छोड़ दिया है.

नौकरानी : बहुत अच्छा सरकार!

(नौकरानी चली जाती है. औरत गिलास का सारा ज़हर फर्श पर उंड़ेल देती है) □

मंटो के हास्य एकांकी

'आओ कहानी लिखें'

का एक अंश

लाजवंती : (अपने पति से उत्सुकता भरे लहजे में) आओ, कहानी लिखें.

किशोर : (चौंक कर) कहानी ?

लाजवंती : हां, हां, कहानी !

किशोर : मैं लिखना नहीं जानता. कहो तो एक सुना दूं.

लाजवंती : सुनाओ.

किशोर : सुनो. एक थी कहानी. उस की बहन थी नहानी. उसका भाई था बसोला. उसने बसाये तीन गांव. दो बसे-बसाये, एक बसा ही नहीं. जो बसा ही नहीं, उसमें आये तीन कुम्हार. दो लंगड़े-लूले, एक के हाथ ही नहीं. जिसके हाथ नहीं, उसने बनायी तीन हंडिया. दो टूटी-टाटी, एक का तला ही नहीं. जिस का तला ही नहीं, उस में पकाये तीन चावल. दो रेठें-आंठें. एक गला ही नहीं. जो गला ही नहीं, उस पर उतरे तीन मेहमान. दो रूठे-राठे, एक मना ही नहीं. जो मना ही नहीं. . . .

लाजवंती : हटाओ भी इस बकवास को.

किशोर : अरे ! यह बकवास है क्या? जब जानूं अगर तुम बता दो कि उस मेहमान का क्या हुआ, जो मना ही नहीं ?

लाजवंती : यह भी कोई बड़ी बात है.

किशोर : बात तो बड़ी नहीं, पर तुम न बता सकोगी. कोशिश करो. दो रूठे-राठे, एक मना ही नहीं, जो मना ही नहीं... उसको ...?

लाजवंती : घर से निकाल बाहर किया.

किशोर : वह क्यों ?

लाजवंती : जब तुम नहीं माना करते तो मैं यही तो किया करती हूं.

किशोर : ठीक है, पर वह मेहमान है, मैं नहीं हूं. . . हर शख़्स मेरी तरह कमज़ोर दिल कैसे हो सकता है! . . .तुम ने सोचे-समझे बगैर उसे घर से निकाल दिया. . . वाह भई. वाह ! □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंटो के आखिरी दिनों की जानकारी उनके भांजे 'हामिद जलाल' की कलम से—

मंटो मामूं की मौत

एक गैर जिम्मेदाराना हरकत!

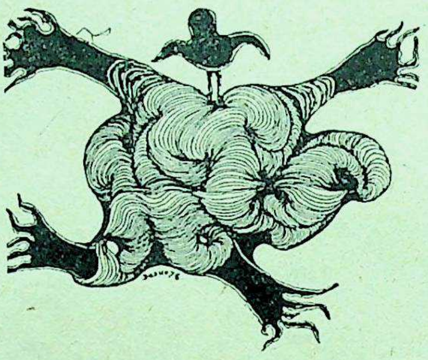

कभी-कभी मैं सोचता हूं कि मंटो मामूं म्यानी साहब के कब्रिस्तान से उठकर घर चले आये तो मैं उनसे क्या कहूंगा! मुझे यकीन है कि मैं उनके पुनर्जन्म के चमत्कार को नज़रअंदाज़ करके उनसे सिर्फ इतना कहूंगा, 'मंटो साहब! आपने आज तक जितनी गैर-ज़िम्मेदाराना हरकतें की हैं, उनमें सबसे ज़्यादा गैर-ज़िम्मेदाराना हरकत थी आप की मौत!

बहावलपुर में पाकिस्तान और हिंदुस्तान के दरम्यान क्रिकेट का दूसरा टेस्ट-मैच हो रहा था और मैं 'डग स्टेडियम' में बैठा तालायार खां को मैच का आंखों देखा हाल प्रसारित करने में मदद दे रहा था कि लाहौर से मेरे नाम एक ट्रंक-काल आयी और मुझे बताया गया कि आज सुबह सआदत हसन मंटो का इंतकाल (निधन) हो गया. मैं फौरन ग़म से बेकाबू नहीं हो गया, बल्कि मुझमें शदीद उद्विग्नता पैदा हो गयी. मुझे मंटो मामूं पर बेहद शदीद गुस्सा आ रहा था कि वह अपने बीवी-बच्चों के साथ यह सलूक किस तरह कर सकते हैं! लेकिन मैंने इसको प्रकट नहीं किया और जब मैं बोला तो मेरी आवाज़ से गैर-मामूली चिंता नुमायां थी. मैंने पूछा, "कहां इंतकाल हुआ"? जवाब मिला, "घर पर". इस जवाब से मुझे बड़ा इतमीनान हुआ, क्योंकि डर था कि कहीं वह अचानक घर से बाहर किसी और मुकाम पर मौत से हम-आगोश न हो गये हों. ऐन मुमकिन था कि किसी तांगे पर, किसी रेस्तरां में, किसी पब्लिशर के दफ्तर में बैठे-बैठे या फिल्म स्टूडियो में उन्हें अचानक मौत आ गयी हो . !

दो अंतिम इच्छाएं!

जब मैं अपनी जगह पर वापस गया तो मैच का आंखों देखा हाल बयान करने वाले साथियों ने इशारों से पूछा कि क्या बात थी. मैंने एक कागज पर यह जुमला लिख दिया—एंपायर ने सआदत हसन मंटो को आखिर आउट दे ही दिया. आज सुबह ही उनका इंतकाल हो गया.

मंटो मामूं को आउट देने के लिए एंपायर से कई बार अपीलें की जा चुकी थीं, लेकिन हर बार अपील रद्द कर दी गयी थी. अब उनकी बेसब्र और डांवाडोल इनिंग्ज खत्म हो गयी थी. वह क्रिकेट के खिलाड़ी होते तो मैं यकीन के साथ कह सकता हूं कि वह कभी हनीफ मुहम्मद की तरह होशियार और मुहतात (सावधान) खिलाड़ी नहीं बन सकते थे, जिसे वह लाहौर के तीसरे टेस्ट-मैच में खेलते हुए देखने को बेहद उत्सुक थे. इसका ज्ञान मुझे उनकी मौत के चौबीस घंटे बाद घर पहुंचकर हुआ. दरअसल उनकी ज़िंदगी की आखिरी दो ख्वाहिशों में से एक ख्वाहिश यह भी थी. अपनी मौत से एक दिन पहले उन्होंने एक रेस्तरां में अपने दोस्तों से कहा था, "हामिद जलाल को वापस आ जाने दो. मैं उसी के साथ टेस्ट-मैच में हनीफ का खेल देखने जाऊंगा."

उनकी दूसरी ख्वाहिश उस बेयारो-मददगार (असहाय) औरत की मौत पर अफ़साना लिखने की थी, जिसकी बरहना (नंगी) लाश गुजरात में सड़क के किनारे पायी गयी थी. अखबारों में छपने वाली सूचनाओं के अनुसार उस औरत और उसकी नन्हीं-सी बच्ची को बस के अड्डे से अगवा किया गया और आधे दर्जन के करीब हवसपरस्तों ने अपनी काम-वासना की पूर्ति की और जब वह कड़कड़ा...
में उनके चंगुल से निकलकर ...
उसके जिस्म पर लिबास का एक ...
न था. चुनांचे दोनों मां-बेटी ने ...
(बर्फ-सी सर्द) कर देने वाली ...
में दम तोड़ दिया. इस त्रासदी से मंटो ...
बेहद प्रभावित हुए थे. उसी रोज़ ...
गुजरात से कुछ लोग उनके पास ...
और उन्होंने हादसा और ब्यौरा ...
था. उससे उनमें ज़रूर उत्तेजना ...
आवेश पैदा हुआ होगा और मेरा ...
है कि उसके बाद मंटो मामूं ने ...
ज़्यादा शराब पी ली होगी, जो उनके ...
घातक साबित हुई.

वह काफी शाम गुजरने के बाद ...
वापस आये. थोड़ी देर बाद उन्हें ...
कै हुई. मेरे छः साला बच्चे ने, जो ...
करीब ही खड़ा था, खून की ...
तरफ उनका ध्यान दिलाया तो ...
यह कहकर टाल दिया कि कुछ नहीं ...
तो पान की पीक है. उन्होंने उसे यह ...
भी कर दी कि वह इसका किसी से ...
न करे. उसके बाद उन्होंने रोज़ की ...
खाना खाया और सो गये. घर भर में ...
को वहमो-गुमान भी न था कि ...
रोज़ के उलट हुई है, क्योंकि मेरे ...
ने मंटो मामूं का राज़ किसी पर ...
नहीं किया था. मुमकिन है, खुद ...
भी उसके बारे में कोई चिंता न ...
यों भी वह घर वालों को ऐसे मामलों ...
बेखबर रखना ही पसंद करते थे ...
हर तरफ से शराब छोड़ने का ...
शुरू हो जाता था.

खून की पहली कै!

रात का पिछला पहर था. ...
अपनी बीवी को उठाकर बताया ...
शदीद दर्द महसूस कर रहे हैं और ...
बहुत-सा खून जाया हो चुका है ...
ख्याल था कि उनका जिगर फट ...
उनकी बीवी ने जब यह देखा कि ...
सूरते-हाल (स्थिति) का अकेले ...
नहीं कर सकतीं तो उन्होंने घर ...
लोगों को जगाया और उन्हें मौत ...
से निकालने की जद्दोजहद शुरू ...
इससे पहले कई भयंकर बीमारियों ...
वे निरोग हो चुके थे. इसलिए किसी ...
ख्याल तक नहीं हो सकता था कि ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ चंद घंटों के मेहमान हैं. लेकिन हकीकत यह थी कि उन्हें आउट देने के लिए एंपायर की उंगली उसी वक्त से फिज़ा में बुलंद होनी शुरू हो गयी थी, जब मंटो मामूं को खून की पहली कै आयी थी.

किस्सा साढ़े तीन रुपये का!

मंटो मामूं के आखिरी लम्हों के बारे में मैंने जो कुछ सुना है, उससे मैं यही अंदाज़ा लगा सका हूं कि काफी देर तक उन्हें खुद भी यकीन नहीं था कि उनका वक्त अब आ गया है. डॉक्टर के इंजेक्शन वगैरा लगाने के एक-डेढ़ घंटे बाद तक वह मायूस नहीं हुए थे, लेकिन इस इलाज़ के बाद भी उनकी हालत खिलाफेमामल नहीं संभली. उनकी नब्ज़ बराबर डूबती गयी और दर्द में लगातार वृद्धि होती रही. खून की कै भी बंद नहीं हुई. सुबह को डॉक्टर ने तजवीज़ पेश की कि मंटो मामूं को अस्पताल पहुंचा दिया जाये.

उस वक्त मंटो मामूं के होश-हवास बिल्कुल ठीक थे और अस्पताल का नाम सुनते ही वह बोल उठे, "अब बहुत देर हो चुकी है. मुझे अस्पताल न ले जाओ और यहीं सुकून से पड़ा रहने दो."

घर की औरतों के लिए यह दृश्य नाकाबिले-बर्दाश्त (असहनीय) था. उन्होंने रोना शुरू कर दिया. यह देखकर मंटो मामूं फौरन उत्तेजित हो गये और उन्होंने गज़बनाक आवाज़ में कहा, "खबरदार, जो कोई रोया!" यह कहकर उन्होंने अपना मुंह रज़ाई में बंद कर लिया.

मंटो का यह असली रूप था. जिस शख्स की ज़िंदगी का कोई कोना आज तक दुनिया की नज़रों से छुपा नहीं रहा था, वह कैसे बर्दाश्त कर सकता था कि लोग उसे मरता हुआ देखें. मंटो मामूं सशबीर गुस्सा बने हुए थे. मालूम नहीं वह अपने आपसे नाराज़ थे या शराब से, जो उनकी वक्त से पहले मौत की ज़िम्मेदार थी.

एंबुलेंस आने से पहले सिर्फ एक या दो बार उन्होंने अपने मुंह से रजाई हटायी. उन्होंने कहा, "मुझे बड़ी सर्दी लग रही है. इतनी सर्दी शायद कब्र में भी नहीं लगेगी. मेरे ऊपर और रजाइयां डाल दो." कुछ देर रुकने के बाद उनकी आंखों में एक अजीब-सी चमक नमूदार (प्रकट) हुई. उन्होंने आहिस्ता से कहा, "मेरे कोट की जेब में साढ़े तीन रुपये पड़े हैं. उनमें कुछ पैसे मिलाकर थोड़ी-सी व्हिस्की मंगा दो."

शराब के लिए उनका इसरार जारी रहा और उनकी तसल्ली के लिए एक पौवा मंगा लिया गया. उन्होंने बोतल की को बड़ी अजीब और आसूदा (संतुष्ट) निगाहों से देखा और कहने लगे, "मेरे लिए दो पैग बना दो." यह कहते हुए वह दर्द और शदीद दौरे के कारण कांप-से उठे. लेकिन एक बार भी और एक लम्हे के लिए भी उन्होंने अपने ऊपर जज़्बातियत (भावुकता) नहीं तारी (छाने) होने दी. उन्होंने अपने बच्चों या किसी और को अपने पास नहीं बुलाया. वह वसीयत के कभी कायल नहीं थे. उन जैसी शख्सियतों के लिए ज़िंदगी और मौत के दरम्यान सीमा-रेखा बहुत ही सूक्ष्म और अस्पष्ट होती है, और यही होना भी चाहिए, क्योंकि उनकी ज़िंदगी और रूह तो पहले ही उनके जिस्म से उनकी किताबों में मुंतकिल (हस्तांतरित) हो चुकी होती है. वहां पहुंचकर उन्हें गैर-फ़ानी होने का यकीन हो जाता है, वहां वह अबद तक जिंदा रहते हैं. हंसते-बोलते हैं, मुहब्बत करते रहते हैं.

शराब तलबी का मंजर

बिस्तरे-मर्ग (मृत्यु-शैया) पर मंटो मामूं ने शराब के सिवा कोई और चीज़ नहीं मांगी. उन्हें बहुत पहले मालूम हो चुका था कि शराब उनकी जानी दुश्मन है और वह उसे मौत का हम-मानी समझने लगे थे, जिस पर जिस्नामी फतह किसी सूरत में मुमकिन नहीं है. जिस तरह मौत के आगे कोई इंसान पेश नहीं पा सकता, उसी तरह मंटो मामूं शराब के सामने बिल्कुल बेबस होते थे. लेकिन उनकी फितरत चूंकि हमेशा से बागियाना थी, इसलिए उन्होंने मौत से भी बगावत की थी. उन्हें शिकस्त से भी सख्त नफ़रत थी, ख्वाह वह मौत के हाथों ही क्यों न हो. और यही वजह है कि वह मौत से तनहाई में आंखें चार करना चाहते थे, जहां कोई उन्हें मरता न देख सके, जहां कोई उनकी शिकस्त का नज़ारा न कर सके.

उनसे कम दर्जे का आदमी शायद एक ड्रामाई (नाटकीय) मौत की व्यवस्था करता ताकि उसके मरने के बाद लोग उसकी चर्चा करें. उस पर मज़ामीन (लेख) लिखे जायें और उसके रिश्तेदार-दोस्त कह सकें कि उसकी ज़िंदगी ज़रूर ऐसी थी, जिसे हम पसंद नहीं करते थे, लेकिन मरने से पहले वह पश्चातापी हो गया था और अच्छा आदमी बन गया था. लेकिन मंटो मामूं पाखंडी नहीं थे. उन्होंने इस ख्वाहिश का सख्ती से मकाबला किया. उनकी मौत के वक्त सिर्फ एक पहलू ड्रामाई था, यानी शराब तलबी करने का मंज़र (दृश्य), लेकिन इसका फायदा भी मरकज़ी (केंद्रीय-मुख्य) किरदार को पहुंच सकता था, क्योंकि उसका सही मतलब सिर्फ वही समझ सकता था.

सांप और इंसान की कहानी

मैं उस वक्त मौजूद होता तो मुझे यकीन है कि वह अपने ज़ेहन को एक हद तक मेरे सामने बेनकाब कर देते, और यह कुछ मुश्किल भी न था, क्योंकि उन्हें सिर्फ इतना कहने की ज़रूरत थी, सांप और इंसान की कहानी न भूलना. मैं अपने सिर को असबात (स्वीकृति) में जुंबिश देता और शराब का आखिरी जाम उन्हें पीने को दे देता. सिर्फ यही एक जुमला हर बात को स्पष्ट कर देने के लिए काफी होता. सांप और इंसान की कहानी सिर्फ इतनी थी कि एक आदमी ने अपने दोस्तों के मना करने के बावजूद एक ज़हरीला सांप पाल रखा था और एक दिन सांप ने अपना सारा ज़हर उसके जिस्म में उतार दिया, तो उसने भी सांप को पकड़ लिया और उसका सिर काटकर फेंक दिया.

एंबुलेंस जैसे ही दरवाजे पर आ खड़ी हुई, उन्होंने शराब का फिर मुतालबा किया. एक चम्मच व्हिस्की उनके मुंह में डाल दी गयी, लेकिन एक कतरा मुश्किल से उनके हलक से नीचे उतर सका. बाकी शराब उनके मुंह से गिर गयी और उन पर गशी तारी हो गयी. ज़िंदगी में यह पहला मौका था कि उन्होंने अपने होश-हवास खोये थे. उन्हें उसी हालत में एंबुलेंस में लिटा दिया गया.

एंबुलेंस अस्पताल पहुंची और डॉक्टर उन्हें देखने के लिए अंदर गये तो मंटो मामूं मर चुके थे. दोबारा होश में आये बगैर रास्ते में ही उनका इंतकाल हो चुका था. □

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगला अंक

सारिका

जून-79 : अंक-एक

पेड़ घर आके फल नहीं देते,
हाथ हैं, तोड़ क्यों नहीं लेते!

ज़िंदगी के हर सच-झूठ की हसल-बसल में सलीब टंगे सुखों को हासिल करते जुझारू लोगों की कहानियां—

कुंवर नारायण, प्रभाकर माचवे, चित्रा मुद्गल, सुरेश चतुर्वेदी, संजीव, कृष्ण कुमार, नासिरा शर्मा, अनवर सज्जाद (पाकिस्तान) और दीनू हरीश की कलम से.

● उपन्यास अंश : यात्रा—श्रवण कुमार

▣

जवाब पाना है, इसलिए.
कृतित्व और व्यक्तित्व के सूत्रों से जुड़ी कथा-यात्रा क अन्वषी संदर्भों म कथाकार गोविंद मिश्र की आत्मरचना.

▣

"पाठक को पंगु मत बनाओ, उसके पांवों पर भरोसा रखो, वह तुम्हारी यात्रा में शामिल होगा!" बंगला के बहुचर्चित लेखक ज्योतिर्मय दत्त के साथ मणि मधुकर की बातचीत.

▣ यह दंगा किसने करवाया?

हनुमान जयंती के दिन. सामने मस्जिद. बगल में थाना. अच्छा-खासा जुलूस रुक जाता है. नारेबाजी, भगदड़, एक बम विस्फोट... और शुरू हो जाता है सांप्रदायिक दंगा!

—उदयन शर्मा द्वारा प्रस्तुत सचित्र रिपोर्ताज

● ज़रिया-नज़रिया, पाठकों का पन्ना, लघुकथाएं, तस्वीर बोलती है, दीवाने आम : दीवाने खास, रोजनामचा, पखवारे की पुस्तक, हलचल आदि सभी स्तंभों सहित.

सारिका: धूल न धुआं, आग न विस्फोट फिर भी कंपन!

शीघ्र प्रकाश्य

संग्रहणीय अंकों की परंपरा में
सारिका की ओर से
पाठकों को अगली भेंट

अर्नेस्ट हेमिंग्वे विशेषांक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिजली के उपकरणों का दुरुपयोग करने से आग लगने का भारी ख़तरा है—
आपके घर-परिवार पर चुपचाप मंडराने वाला एक भयानक ख़तरा।

अग्नि-सुरक्षा जानकारी सूची

बिजली से काम लीजिये,
काम बिगाड़िये नहीं

१. बिजली की एक ही 'आउटलेट' पर ज़्यादा यंत्रों को मत लगाइये। 'ओवरलोडिंग' से आग लग सकती है।
२. किसी यंत्र को सॉकिट से लगाने के लिये बिजली के नंगे तार के सिरों को मत जोड़िये। इसके लिये प्लग इस्तेमाल कीजिये।
३. 'रेटिड कॅपेसिटी' के फ्यूज़ ही प्रयोग में लाइये।
४. बिजली के काम में खुद मत पड़िये। बिजली की मरम्मत का काम लाइसेंसशुदा कारीगर से करवाइये।
५. बिजली के टूटे-घिसे तार, प्लग और स्विच बदल दीजिये।
६. गरमी पकड़ने वाले यंत्रों से कपड़ों को दूर रखिये।

काट कर पास रखिये

लॉस प्रिवेन्शन एसोसिएशन समान विचारधारावाले लोगों के साथ मिलकर काम करना चाहती है और आपके सहयोग का स्वागत करती है। अधिक जानकारी के लिये कृपया लिखें—

LPA
सुरक्षैय समृध्दये

नुकसान रोकिये—समृद्धि बढ़ाइये
लॉस प्रिवेन्शन एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया लिमिटेड,
वार्डन हाउस, पी. एम. रोड, बम्बई-४०० ००१

CASLPA-8-203 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोदी थ्रैड विश्व का एक असाधारण धागा प्रस्तुत कर रहें हैं जो
इस शताब्दी की महान तकनीकी उपलब्धि है

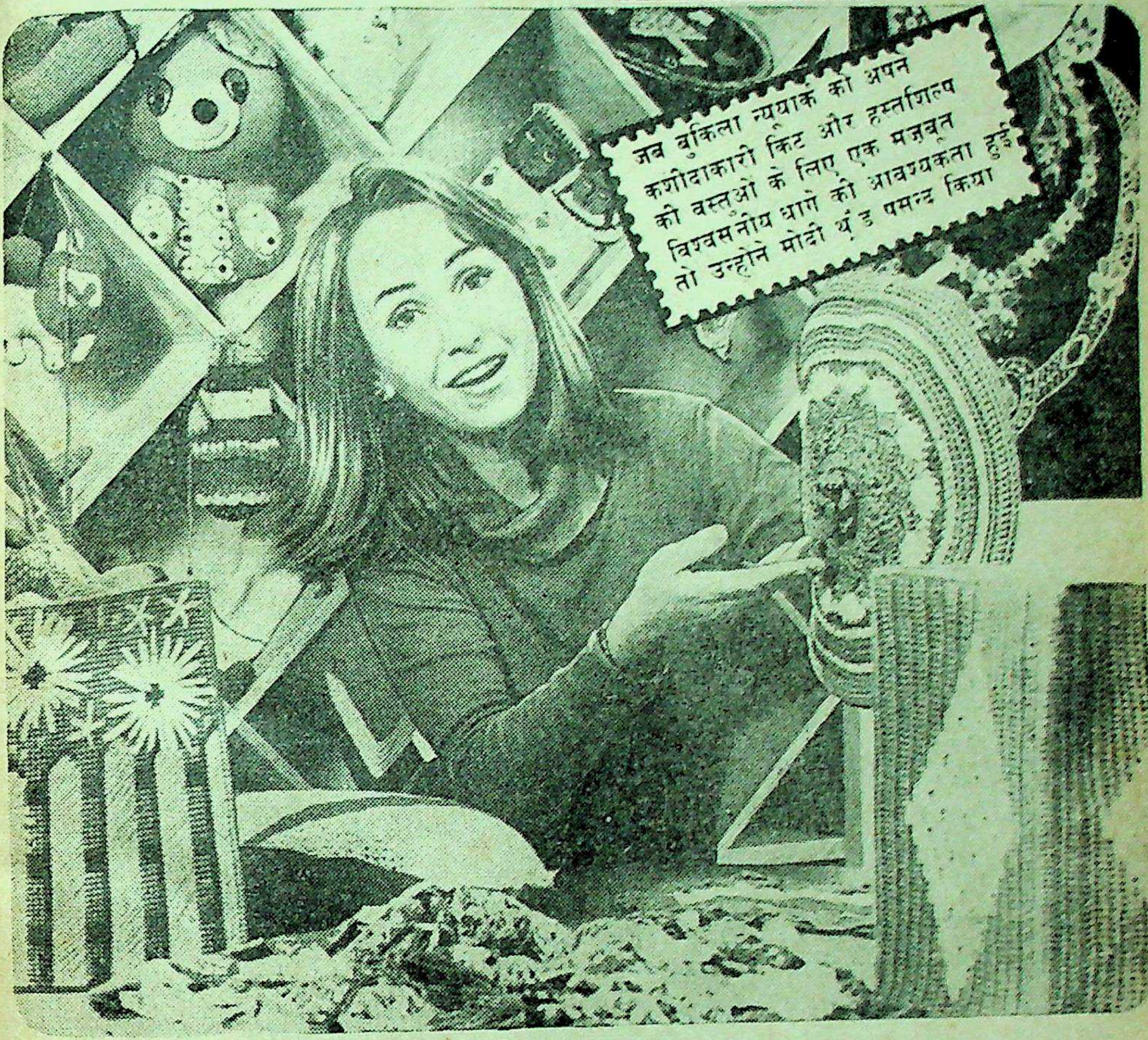

अब मोदी धागे कशीदाकारी
किट और हस्तशिल्प वस्तुओं
के निर्माण में उनकी ख्याति
को सुरक्षित रख रहे हैं...

बुकिला के लोकप्रिय बुनाई, क्रोशिए और कशीदाकारी के किट। उनके सम्पूर्ण किटों में मोदी थ्रैड मिल्स से आयातित धागे भी रहते हैं।

बुकिला—मोदी थ्रैड मिल्स द्वारा सारे विश्व के क्वालिटी पसन्द करने वाले व्यक्तियों के लिए बढ़िया धागे बनाने का एक और उदाहरण।

मोदी धागे : बुनाई, टांका लगाने, कशीदा, केस, गोट लगाने, रफ़ू करने, मशीनी सिलाई और जूतों की सिलाई में भी प्रयुक्त होते हैं।

प्रत्येक कार्य के लिए एक ही धागा—मोदी धागा।

मोदी थ्रैड मिल्स, मोदीनगर, उ०प्र०

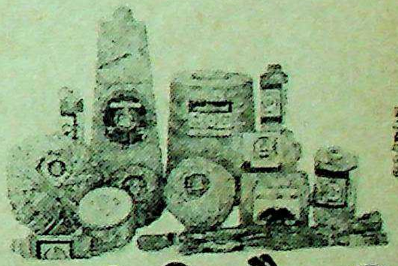

मोदी थ्रैड

विश्व के ४० से भी अधिक देशों में बिकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा विभाग, हरियाणा, चण्डीगढ़

अखिल भारतीय हिन्दी कहानी, निबंध तथा एकांकी प्रतियोगिता
वर्ष १९७९-८०

* * *

प्रतियोगिता निःशुल्क होगी और निम्नलिखित वर्गों में होगी:—
(क) कहानी (ख) निबंध (साहित्यिक एवं सांस्कृतिक) (ग) एकांकी

प्रथम पुरस्कार	२५०/- रुपये
द्वितीय पुरस्कार	१५०/- रुपये
तृतीय पुरस्कार	१००/- रुपये

नियम:—

१—पुरस्कारों को विभाजित किया जा सकता ह.

२—पुरस्कृत तथा अच्छी रचनाएं विभागीय पत्रिकाओं म प्रकाशित भी की जा सकेंगी.

३—लेखक द्वारा रचना के सम्बन्ध में निम्न प्रकार से प्रमाण-पत्र अवश्य संलग्न होना चाहिए:—

मैं——————————————प्रमाणित करता/करती हूं कि रचना—————————————(कहानी/निबंध/एकांकी) मौलिक, अप्रकाशित तथा अप्रसारित है. यह किसी भी प्रतियोगिता या पत्रिका में नहीं भेजी गई है, और प्रतियोगिता का परिणाम निकलने से पूर्व इसे (रचना) कहीं भी नहीं भेजूंगा/भेजूंगी.

लेखक के हस्ताक्षर तथा पूरा पता

४—लेखक का नाम (मोटे अक्षरों में) और पता केवल अप्रेषण पत्र पर होना चाहिए, रचना की किसी प्रति पर नहीं.

५—गत दो वर्षों में प्रतियोगिता के किसी एक वर्ग में निरन्तर विजेता को तीसरे वर्ष पुनः उसी वर्ग में विजेता घोषित होने पर केवल प्रशंसा पत्र ही दिया जायेगा. इस स्थिति में पुरस्कार द्वितीय सर्वोत्तम रचना पर दिया जायेगा.

६—एक वर्ग में लेखक से एक रचना ही स्वीकार्य होगी. लेखक अपनी एक-एक रचना तीनों वर्गों में भी भेज सकता है. किन्तु उसे पुरस्कार एक ही वर्ग में मिलेगा. अन्य दो वर्गों में रचना के पुरस्करणीय होने की स्थिति में उस वर्ग के अंतर्गत उसे केवल रचना के उत्कृष्ट होने का प्रशंसा पत्र ही दिया जायेगा.

७—रचना में कम से कम १५०० तथा अधिक से अधिक ३००० शब्द होने चाहिए.

८—प्रतियोगिता में प्राप्त रचनाओं को लौटाया नहीं जायेगा.

रचना की टाईप की हुई अथवा सुवाच्य तीन प्रतियां ३१ जुलाई, १९७९ को सांय ५-०० बजे तक निम्न पते पर अवश्य पहुंच जानी चाहियें. बाद में प्राप्त रचनाओं पर कोई विचार नहीं किया जाएगा.

निदेशक,
भाषा विभाग, हरियाणा,
१५८०/१८-डी, चण्डीगढ़-१६००१८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नेट, कोलमैन ऐंड कम्पनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए रमेशचन्द्र द्वारा नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स, 10 दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 से मुद्रित व प्रकाशित. जनरल मैनेजर : ...राम तरनेजा. पंजीकृत कार्यालय : डा. दादाभाई नौरोजी रोड, बंबई-400001. शाखाएँ : 7, बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नयी दिल्ली-110002; 139, आश्रम रोड, ...मदाबाद-380009; 105/7ए, एस. एन. बनर्जी रोड, कलकत्ता-700014. कार्यालय : 13/1, गवर्नमेंट प्लेस ईस्ट, कलकत्ता-700069; 15, मोंटियथ रोड, इग्मोर, ...द्रास-600008; 407-1, तीरथ भवन, क्वार्टर गेट, पुणे-411002; 26, स्टेशन एप्रोच, सडबरी, वेंबले, मिडिलसेक्स, लंदन, यू. के., लंदन टेलीफोन : 01-903-9696.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजीयत सं. D-(C)-7
पूर्व शुल्क के बिना ... डालने
की अनुमति-लाइसेंस नं. U-४०

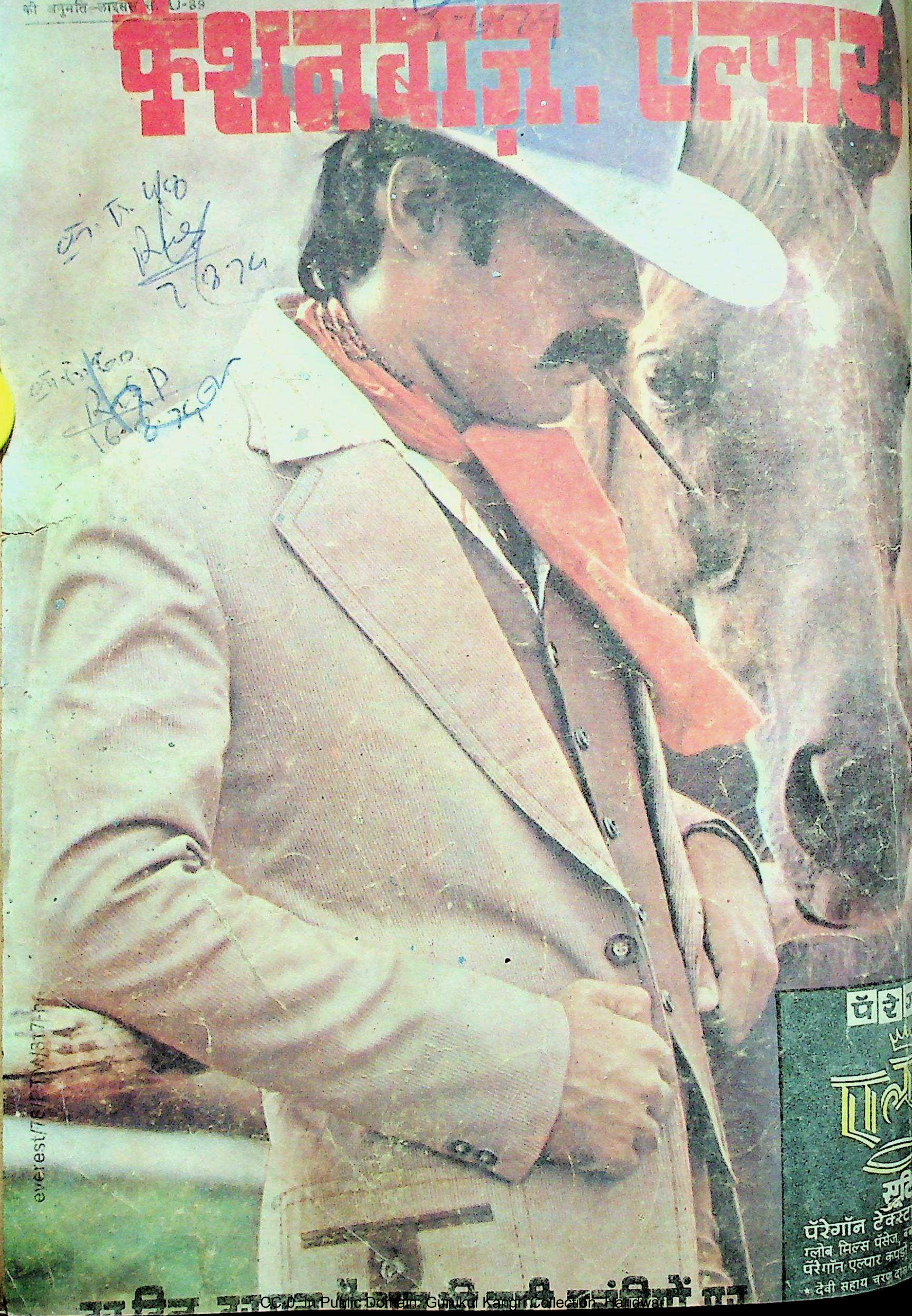

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar